|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | सितम्बर-2020

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

मिच्छामि दुक्कड़म्

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. निम्बाहेड़ा (राज) तथा जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की भांडवपुर तीर्थ (राज.) पर सूरि मंत्र आराधना सुखशातापूर्वक निर्विघ्न, भावपूर्णरूप से निरंतर गतिशील है।

जैनाचार्य
श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

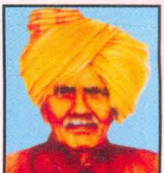

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

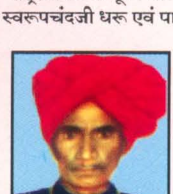

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

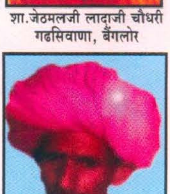

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

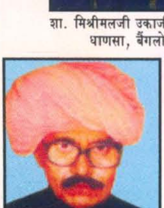

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर
(सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी
धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी
आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी
जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी
तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी
गुण्टूर

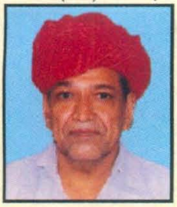

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी
सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी
विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी
सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी
बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी
वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी
भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी
धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी
धाणसा

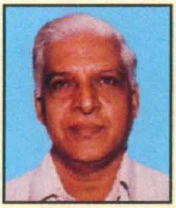

शा पुखराजजी फूलचंदजी
दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी
संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी
सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत
गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी
चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा
कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी
कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

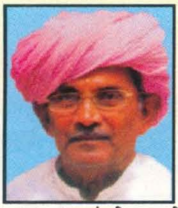

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी
सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी
जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी
संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

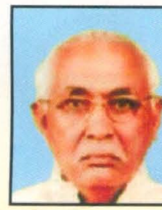

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

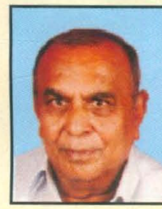

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

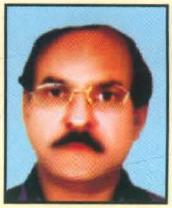

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

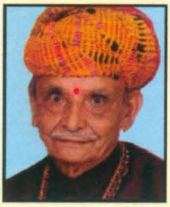

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, घानसा

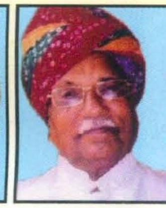

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

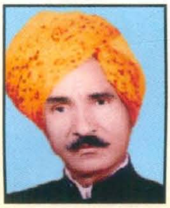
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

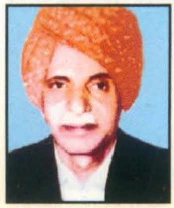
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

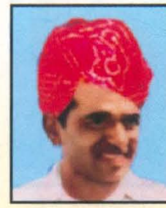
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

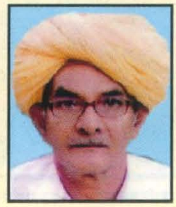
श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

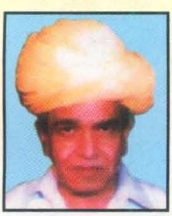
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

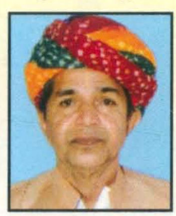
श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

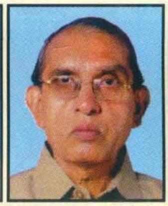
शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

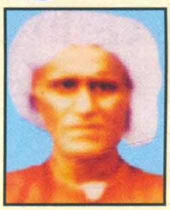
वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

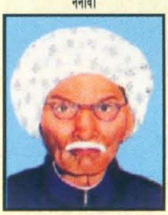
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

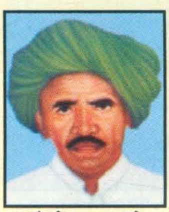
संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

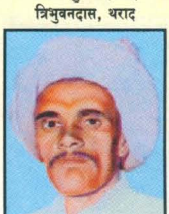
संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

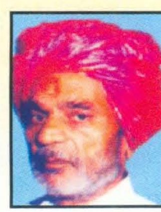
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

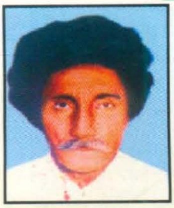
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

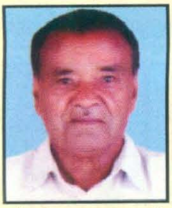
मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

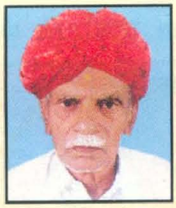
श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

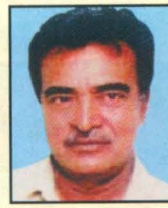
श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

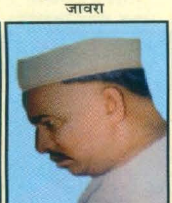
श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

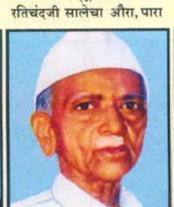
स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

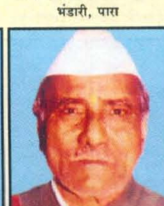
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

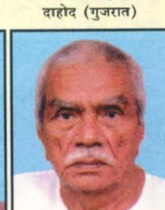
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

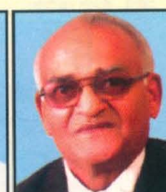
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर)
पि. ३८२००७

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

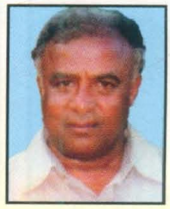
स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

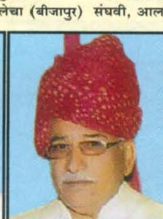
शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

Received 15/9/2020

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥ 3171

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
सितम्बर-2020 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 68 अंक 9
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं. 109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी (संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू (परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा (महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन (न्यासी)
श्री विनोद संघवी (न्यासी)
आदि

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मृत्यु पर विजय का मार्ग मिल गया

जयघोष

वाराणसी में कश्यप गौत्रीय ब्राह्मण थे।

वेदों का ज्ञान तथा यज्ञों में विश्वास उनकी विशेषता थी। जयघोष एक दिन प्रातः उठकर गंगा स्नान के लिये नदी की ओर गये, उनने देखा-

- एक मेंढ़क छोटे जन्तुओं का भक्षण कर रहा है।
- एक सर्प आया, उसने इस मेंढ़क को पकड़ लिया।
- तभी एक कुटर पक्षी नीचे उतरा, उसने सांप को दबोचा और आसमान में फुर्र हो गया।

इन दृश्यों से जयघोष का मानस हिल उठा, वे स्वयं विचारों में कांपने लगे । अरे ! यह मृत्यु हर प्राणी के पीछे लगी है।

क्या मैं भी मृत्यु के घेरे में हूँ ?

मुझे भी एक दिन मृत्यु के मुख में जाना पड़ेगा।

कोई अमर नहीं है, सभी नाशवान हैं। मैं...मैं...मैं... भी उनमें से ही हूँ। मुझे भी एक दिन जाना पड़ेगा। यह कैसा जीवन, क्या मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती?

तभी एक जैन मुनि दिखाई दिये।

जयघोष उनके चरणों में गिर पड़ा-

'भगवन् ! इस मौत का इलाज बताइये।'

मुनि ने आत्मकल्याण का मार्ग उपदिष्ट किया।

जयघोष मुनि बन गये। वे मासोपवासी बन गये। उन्हें मृत्यु से लड़कर विजय प्राप्त करने का मार्ग मिल गया।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

35109

अनुक्रमणिका

1.	भगवान महावीर त्रिकालवर्ती ज्ञाता और दृष्टा (श्री शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	09
2.	नांदिया तीर्थ इतिहास के पन्नों पर (मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.)	10
3.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	11
4.	अशुभ वचन योग (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	13
5.	चिन्तन का चित्रांकण	15
6.	प्रेरणा दें शाकाहारी बनने की (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	16
7.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	18
8.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	19
9.	गणधरवाद (लेखांक-75), (स्व. श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	20
10.	प्रश्नोत्तरी	22
11.	धारावाहिक उपन्यास (लेखांक -6) (स्व. श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	23
12.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	25
13.	धर्म का मूल क्या है ? (संशोधक-मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	27
14.	श्री जयंतसेन जयनाद (प्रस्तोता-मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	29
15.	जिनशासन की वर्णमाला (3) (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	32
16.	जीवित महोत्सव (जैनम जैन)	34
17.	टाईम ही टाईम (छगनलाल भुगड़ी)	35
18.	जीयो और जीने दो (डॉ. दिलीप धींग)	36
19.	गुजराती संभाग	37-53
19.	कुमकुम सने पगलिये	54-66
20.	श्री संघ सौरभ	67-85
21.	परिषद् प्रांगण से	86-91
22.	जैन विश्व	92-94
23.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	95-96

ACHARYA SHRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382007.
Phone 23276252, 23276204-05

भगवान महावीर
त्रिकालवर्ती ज्ञाता और दृष्टा

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर)

भगवान महावीर स्वामी पृथ्वी के समान समस्त प्राणियों के लिये आधार भूत हैं। आठ प्रकार के कर्मों से दूर करने वाले हैं। हिंसादि पापों का आचरण न तो वे स्वयं करते हैं, न कराते हैं। क्रोध,मान, माया, लोभ आदि आंतरिक आध्यात्मिक विकारों का त्याग करके महर्षि और अरिहंत हुए। वे धन-धान्य पदार्थों का संग्रह एवं क्रोधादि विकारों का सान्निंध्य नहीं करते थे। उन्होंने इहलोक और परलोक को जानकर समस्त पापों को सर्वार्थ त्याग दिया। वे क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद, वैनयिकों के वाद और अज्ञानिकों के अज्ञानवाद के पक्ष को सम्यक रूप से जानकर और समस्त वादों के मन्तव्य को समझकर आजीवन दीर्घराज तक संयम में उत्थित रहे। वे चातुर्गतिक महान संसार समुद्र को पार कर निर्वाण प्राप्ति हुए हैं। वे बाह्य और आभ्यंतर पदार्थों में आसक्ति से रहित थे।

वे केवलज्ञान के प्रकाश में द्रव्य दृष्टि और पर्यायदृष्टि दोनों का सापेक्षदृष्टि-अनेकान्तवाद से आश्रय लेकर उन्हें नित्य और अनित्य दोनों प्रकार भली - भाँति जानकर प्राणियों को समस्त पदार्थों का स्वरूप बताने के कारण, दीपक की तरह अर्थात संसार समुद्र में पड़े जीवों को उपदेश देने से उनके लिये आश्वासन का कारण होने से भगवान द्वीप की तरह हैं। ऐसे भगवान महावीर ने श्रुत चारित्र धर्म को उत्तम, अनुष्ठान युक्त, राग-द्वेष मुक्त होकर समभाव के साथ कहा था। आचारांग सूत्र के 'जहाँ पुण्णस्स कत्थई तहा तुच्छस्स कत्थई' वचन के अनुसार भगवान ने पुण्यवान और अपुण्यवान सभी पर कृपा करके धर्म का कथन किया है- पूजा सत्कार के लिये नहीं अथवा धर्म ही द्वीप की तरह है क्योंकि यह अज्ञानान्धकार में भटकते हुए प्राणियों को दीपक के समान प्रकाश देता है। भगवान महावीर त्रिकालवर्ती सब पदार्थों के ज्ञाता और दृष्टा थे। वे काम क्रोधादि अंतरंग शत्रुओं को जीतकर केवल ज्ञानी बने थे। वे अटल धीर पुरुष होकर अपने आत्मस्वरूप स्थिर भाव में लीन होकर स्थितप्रज्ञ और शुद्धात्मा थे। वे प्रज्ञावान काश्यप वंश के तेजस्वी सूर्य, मननशील मुनि, श्रमण भगवान महावीर ऋषभादि जिनवरों द्वारा प्रचलित इस श्रेष्ठ अहिंसादि सूत्रचारित्र रूप धर्म के अपने युग के एक मात्र सर्वप्रधान विशिष्ट धर्म नेता थे। साथ ही धर्म साधना करने वाले साधकों के पथप्रदर्शक थे। सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, धर्मनायक, धर्मचक्रवर्ती अनंतचक्षु युक्त भगवान महावीर स्वामी को 'मत्थेण वंदामि'।

◆◆◆

नांदिया तीर्थ, इतिहास के पन्नों पर

(मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.)

मरूधर के सिरोही जिले में नांदिया ग्राम में पर्वतों के मध्य तीर्थंकर श्री महावीर देव का भव्य तीर्थ है। यह बामणवाड़जी तीर्थ से एक किलोमीटर दूर है। यहाँ पहुंचने के लिये सड़क मार्ग है। आबुरोड़ से सिरोही हाईवे पर कोजरा स्टॉप है। वहाँ से नांदिया रोड़ मिलता है। नांदिया से पांच किलोमीटर दूर लोटाणा तीर्थ है। यहाँ श्री आदिश्वर प्रभु का भव्य जिनालय है। इस प्रतिमा का जावड़शाह सेठ ने तेरहवां उद्धार श्री शत्रुंजय पर्वत पर किया था। यह प्रतिमा श्री शत्रुंजय तीर्थ से पुनः लौटकर यहाँ आई इसलिये लोटाणापुर नाम हुआ। नांदिया तीर्थ पर भगवान महावीर प्रभु के ज्येष्ठ भ्राता श्री नंदिवर्धन महाराजा ने जिस समय भगवान विहार करते थे तब यह बिम्ब भरवाये थे। जिससे यह भगवान जीवित महावीर स्वामी के नाम से प्रख्यात हैं। यह प्रतिमा अष्ट प्रतिहार्य युक्त है। मूर्ति के साथ बावन जिनालय का परिकर भी है। जिसमें इक्यावन भगवान हैं और बावन वें मूलनायक श्री महावीर प्रभु हैं, यह प्रतिमा क्षत्रियकुंड नगर से पूर्वजों ने यहाँ पर लाकर प्रस्थापित की है जिसका इतिहास भी यहाँ पेढ़ी में मौजूद है। प्रभु की सात हाथ की काया थी उसी प्रकार प्रभु की प्रतिमा है। भगवान पर चंडकौशिक का सर्पदंश का जो उपसर्ग हुआ था वह भी यहाँ पर बताया गया है उस जगह पर मंदिर विद्यमान है। मंदिर के बाहर आते ही त्रिमुखी रायण का झाड है राणकपुर तीर्थ के गगनचुंबी देवविमान जैसे जिनालय के निर्माण करानेवाले श्रेष्ठिवर्य श्री धन्नाशा पोरवाल और श्रेष्ठि श्री रत्नाशाह पोरवाल भी नांदिया के निवासी थे। ◆◆◆

सम्पादकीय

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर म्यूजियम यात्रा

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

एक प्रमुख गुजराती जैन मासिक में भोपावर-मोहनखेड़ा-मांडव-तालनपुर-लक्ष्मणी तीर्थों की यात्रा के विवरण में मोहनखेड़ा-म्यूजियम का उल्लेख भी आया है। साथ ही म्यूजियम की विशेषताओं का विवरण देते हुए कहा गया है कि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की यात्रा के लिये आने वाले प्रत्येक यात्री को म्यूजियम का अवलोकन सपरिवार करना ही चाहिये। विशेषतः अगली पीढ़ी को जैन दर्शन, जैन इतिहास, जैन तत्वज्ञान आदि विषयों का ज्ञान इसके माध्यम से देना प्रत्येक परिवार का कर्त्तव्य है।

लेखक ने स्पष्ट कहा कि कुछ ऐसे भी यात्री होते हैं जो समय की कमी का बहाना करते हुए म्यूजियम का अवलोकन करने नहीं जाते हैं, वे बहुत कुछ गुमा देते हैं। उतावल में अपूर्ण यात्रा करना भी सम्पूर्ण पुण्य या धर्म का उपार्जन नहीं है। क्योंकि यह तीर्थस्थल भी यात्रा का अंग है तथा जो दर्शनीय है, उसे छोड़ना मूल में से कुछ गुमाने सरीखा है। जब यात्रा में भरपूर मूल प्राप्त हो रहा है तब कुछ प्रतिशत पर ध्यान नहीं देना गंभीर है। विशेषतः बालकों के लिये प्रासंगिक है कि आपका बालक यदि पाठशाला नहीं जाता है, धर्म का विशेष ज्ञान नहीं है, वह म्यूजियम के विशेष खंडों में पहुंचकर अवलोकन करेगा तो उसे गौरव होगा कि जिस धर्म में उसका जन्म हुआ है, वह कितना ऊंचा है, उसकी परम्पराएं कितनी महान् हैं, उसने कितनी श्रेष्ठता प्राप्त की है ? वह कर्म से भी जैन बनने का प्रयास करेगा। दूसरी ओर जो बालक इन सभी का जानकार है, उसे अनुभूति होगी कि मुझे कैसे ज्ञान का खजाना आज प्राप्त हो गया है। अतएव श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पर स्थित श्री जयंतसेन म्यूजियम एक ऐसी धरोहर है, जिसकी ओर सभी की आस्था एकेन्द्रित होनी चाहिये।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ विशेषतः त्रिस्तुतिक जैन समाज का महान तीर्थ है। यहाँ दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का अन्तिम संस्कार किया गया था। दादा गुरुदेव श्रीमद्

विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने ही इस तीर्थ की स्थापना कर श्री आदिनाथ प्रभु के मंदिर का निर्माण करवा कर इसकी शुरुआत की थी।

संघवी लुणाजी पोरवाल ने इस भूमि का चयन कर तीर्थ निर्माण हेतु इसे दादा गुरुदेव के चरणों में समर्पित की थी। इस तीर्थ का खूब विकास हुआ है। विशेषतः गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. तथा गुरुदेव श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. ने इस तीर्थ के विकास तथा विस्तार पर पुरजोर बल देकर साधनापूर्वक इसे उन्नत स्वरूप दिया। इसी तीर्थ की विशिष्टता में अभिवृद्धि करने के उद्देश्य से श्री राजराजेन्द्र तीर्थ दर्शन की स्थापना लोकसंत/राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने की। उनकी कल्पना गुरुभूमि श्री मोहनखेड़ा तीर्थ को विश्वव्यापी तीर्थ में परिणित करने की रही। उनने श्री मोहनखेड़ा तीर्थ को ऐसी भूमि विकसित करने पर कदम बढ़ा दिया जिसमें सम्पूर्ण जैन संकृति का समागम, दर्शन तथा ज्ञान समाहित हो। इसी उद्देश्य से नवकार आकृति में म्यूजियम का निर्माण उनकी कल्पनाशक्ति ने परिपक्व किया। यहीं कीर्तिस्तंभ के निर्माण की योजना भी उनके अपने उपदेश से कार्यान्वित करवाई। म्यूजियम के सभी नौ खण्डों में जैन कलाकृतियों का सुरूचिपूर्ण विद्वद् प्रदर्शन है। यहाँ जिन शासन का सार है, नवतत्त्व हैं, जीवों के भेद हैं, साधु-साध्वीजी के जीवन परिचय हैं, श्रावक-श्राविकाओं के जीवन हैं, जैन तीर्थों के परिचय हैं, तीर्थंकरों तथा उनके गणधरों की जानकारी है, जैन कथाओं का वर्णन है, जैन इतिहास के आख्यान चित्रित हैं, जैन शलाकापुरुषों तथा सतियों का विस्तार है। इस तरह जैन संस्कृति के बिन्दु में सिन्धु परिपूर्ण किया गया है। म्यूजियम के परिचय की पुस्तक भी है। इसी परिसर में ठहरने के लिये धर्मशाला तथा भोजनशाला भी । पूरा वातावरण सुरम्य है।

म्यूजियम प्रांगण में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर है तथा विशाल प्रतिमा सहित गुरुमंदिर है। म्यूजियम का टेलिफोन नं. (07296) 235320 तथा 232320 है। सभी यात्रियों को चाहिये कि वे म्यूजियम को यात्रा में जोड़कर ही श्री मोहनखेड़ा तीर्थ की यात्रा पूर्ण मानें। इसी परिसर में श्री सीमंधर स्वामी का मंदिर भी शीघ्र निर्मित होने जा रहा है।

(श्री हंसमुखभाई वेदलिया द्वारा भेजी गई फोटो प्रति के आधार से)

◆◆◆

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (36)

स्व. पुण्यसम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

एक जैन मुनि शौच के लिए बाहर चले जा रहे थे कि उधर से एक ब्राह्मण नदी में स्नान करके सामने से चला आ रहा था। कुछ मित्र भी उसके साथ थे। मुनिश्री सुन सकें, उतनी तेज आवाज में बोलते हुए ब्राह्मण ने अपने मित्रों से कहा- 'जो इन मैले-कुचैले मुनियों के दर्शन करता है, वह सीधा नरक में जाता है।'

मुनिश्री ने उस ब्राह्मण से मीठे शब्दों में पूछा- 'हमारे दर्शन करने वाला सीधा नरक में जाता है, यह तो आप कह रहे हैं, किन्तु हम जानना चाहते हैं कि जो व्यक्ति आपके दर्शन करता है, वह कहाँ जाता है?'

ब्राह्मण ने प्रसन्नता से गर्व का अनुभव करते हुए कहा- 'जो हमारे दर्शन करता है, वह सीधा स्वर्ग में जाता है।'

इस पर जैनमुनि ने कहा- 'तब तो आपकी ही मान्यता के अनुसार आपके दर्शन करने से हम तो स्वर्ग में जाएँगे और आप कहाँ जाएँगे ? यह आप स्वयं सोच सकते हैं।'

इस उत्तर से निरुत्तर हुए ब्राह्मण को अपने मित्रों के सामने लज्जित होना पड़ा । अपने कठोर दुर्वचन के जाल में वह बेचारा खुद ही फँस गया।

बिना विचारे बोलने से कितना अनर्थ हो सकता है ? इसके लिए एक सेठानी की कहानी सुनिए-

रूपसुन्दरी उसका नाम था। ससुराल की अपेक्षा पीहर में रहना उसे अधिक रास आता था, क्योंकि ससुराल में उसे काम बहुत करना पड़ता था।

पीहर में उस पर काम का बोझ नहीं के बराबर ही रहता था। रूपसुन्दरी के शरीर में जितना सौन्दर्य था, उससे कुछ अधिक आलस्य का निवास था।

एक बार सेठ उसे लिवाकर ले जा रहे थे कि मार्ग में एक कुआँ आया। रूपसुन्दरी ने पानी माँगा। लोटा-डोर लेकर सेठ कुएँ से पानी खींच रहे थे कि सेठानी ने धक्का देकर सेठ को कुएँ में गिरा दिया। सेठानी वहाँ से ससुराल न जाकर अपने पीहर ही लौट गई। वहाँ अपने सभी कुटुम्बियों से कह दिया कि सेठ को चोर पकड़ ले गए। मैं छिपती-छिपाती किसी तरह जान बचाकर यहाँ आई हूँ।

इससे माँ-बाप चिन्तित जरूर हुए पर रूपसुन्दरी को ससुराल से दूर पीहर में चिरकाल तक रहने का अवसर मिल गया।

उधर सेठजी को किसी ने बाहर निकाल दिया। वे दुबारा सेठानी को लिवाकर अपने घर ले आये। परन्तु रास्ते में हुए हादसे को भूलकर सेठानी के साथ पहले जैसा ही प्रेमपूर्ण व्यवहार करने लगे, मानो कुछ हुआ ही न हो। सेठजी ने मुझे माफ कर दिया है और उस दुर्घटना का जिक्र किसी के सामने नहीं किया है, यह जानकर सेठानी का भी हृदय परिवर्तित हो गया। वह भी आलस्य छोड़कर घर का काम मुस्तैदी से करने लगी। सेठजी ने भी सोचा कि उस दुर्घटना को भूल जाने का और जघन्य अपराध के लिए सेठानी को माफ कर देने का अच्छा असर हुआ है, इसलिए वे सन्तुष्ट और प्रसन्न रहने लगे।

एक दिन की बात है। सेठजी भोजन कर रहे थे कि आँधी आई। सेठानी रूपसुन्दरी ने अपनी सुन्दर साड़ी का पल्ला थाली पर लगा दिया, जिससे धूल उड़कर थाली में परोसे हुए भोजन पर न लगे। सेठानी के इस व्यवहार को देखकर सेठजी को थोड़ी-सी हँसी आ गई। पुत्र ने पिताजी की हँसी को देखा। वह इतना नासमझ नहीं था कि प्रसन्नता और हँसी के अन्तर को भी न समझ सके। यहाँ सेवापरायणता प्रसन्नता का ही विषय थी, हँसी का नहीं । फिर भी उस अवसर पर वह चुप रहा। (क्रमशः) ◆◆◆

चिन्तन का चित्रांकण

सबको साथ लेकर चलना महानता है

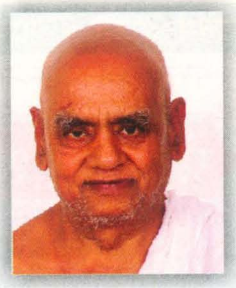

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 24.02.2017

एक को पकड़ा एक को छोड़ा यह कहाँ की नीति। स्वार्थ भाव से भरा व्यक्ति दल बदल का काम करता रहता है। ऐसा दलबदलु व्यक्ति कहीं का नहीं रहता। अन्त उसका बुरा है, बुरे का फल भी बुरा ही होता है। एक मालिक परमात्मा वीतरागदेव। एक गुरु जो जीवन की अनन्त संसार की यात्रा का अन्त कराकर आत्मा के सच्चे स्वरूप में स्थिर कर दे। एक को पकड़ा तो, एक ही रखें। एक में सब कुछ पा जायेंगे।

दिनांक 25.02.2017

व्यक्ति का अपनत्व सब कुछ पा लेता है। जहाँ तक आत्मीयता जागृत नहीं होती वहाँ तक विचारों में भेद रहता है तो अन्तरात्मा में अपनत्व का मिलन नहीं होता। मिलन अगर हो तो दूध और घी की तरह ही होता। जो मानसिक, वाचिक और कामिक से कभी भी दूरी का समय लाता है। दूरी नहीं चाहते हैं तो आत्मीयता का अपनत्व प्रगटायें जीवन का सच्चा सुख पायें।

दिनांक 26.02.2017

सब को लेकर चलना महानता है। सब के साथ चलना कर्त्तव्य है, सब में मिलकर रहना सच्चा प्रेम है। अन्य की प्रवृत्ति को देखकर दुःखी होना अज्ञानता है, अन्य की बुराई गलती को प्रगटकर प्रचार करना मूर्खता है, अच्छाई को गाना, अच्छाई को प्रोत्साहन देना स्वयं की बुराई को प्रगट करना महानता है, स्वयं को सोचना है।

दिनांक 27.02.2017

जिन आत्मा में रमण करे, अन्य वृत्ति प्रवृत्ति से परे रहकर स्वयं ध्यान में लीन रहने वाली आत्मा जीवन का सच्चा आनंद पाती है, स्वयं में रमण करे वो रमा, स्वयं के चिंतन में लीन रहे वो आत्म रमा । रमा रमण करे स्वयं के भावों में और परभाव से विरक्त होकर वो रमा निश्चय से श्रेय पथगामी आत्मा मानी गई है।

दिनांक 28.02.2017

जो भी महापुरुष, ज्ञानी, भगवंत महन्त हुए वे सभी इष्ट भक्ति में रमण करते, आत्म ध्यान में लीन रहते, शुक्ल ध्यान की श्रेणी में नित्य रमा करते हैं अन्य सर्व संसार ध्यान का विसर्जन करते हैं इसीलिये उच्च स्थान के अधिकार को पाते हैं। आत्म ध्यान में रमा करो, धर्म ध्यान में रमा करो, जीवन का उद्धार करो।

◆◆◆

प्रेरणा दे शाकाहारी बनने की

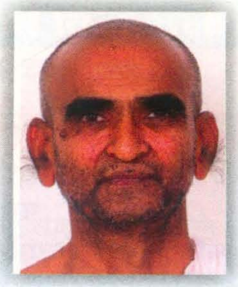

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

मांसाहार के कारण दुनिया की तमाम जमीन बंजर होती जा रही है। पशु संवर्द्धन के कारण जमीन की 85 प्रतिशत ऊपरी सतह नष्ट हुई है। वॉशिंगटन स्थित 'वर्ल्डवाच इंस्टीट्यूट' ने चेतावनी दी है कि यदि मांसाहार नहीं हटाया गया तो विश्व को एक बड़े संकट का सामना करना पड़ेगा। किसी भी प्रकार के मांस में कार्बोहाड्रेटस नहीं होते हैं, इनके अभाव में आंतों में तरह-तरह की बीमारियां हो जाती हैं। किसी भी प्रकार के मांस में विटामिन सी नहीं होता। विटामिन सी को सार्वभौम विषावरोचक माना गया है। विटामिन सी की अपनी रासायनिक संरचना है। मांसाहार इस अद्‌भुत अमृत से वंचित है। नींबू, आँवला आदि इसके समृद्ध स्त्रोत हैं।

100 ग्राम मांसाहार से अधिकतम 194 कैलोरियां प्राप्त की जा सकती हैं। जबकि 100 ग्राम गेहूं के आटे, दाल, सोयाबीन, मूँगफली अथवा नारियल से क्रमशः 353/353/432/464/444 कैलोरियां सहज ही मिल सकती हैं। एक वयस्क पुरुष को प्रतिदिन 2400 तथा स्त्री को 2000 कैलोरियों की जरूरत होती है। अमेरिका के एक वैज्ञानिक का निष्कर्ष है कि मांस में कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक होती है, अतः इससे हृदयरोग, चर्मरोग, पथरी आदि रोग उत्पन्न हो सकते हैं। किसी भी वनस्पतिक आहार में कोलेस्ट्रोल नहीं होता अतः वनस्पतिक से ये रोग उत्पन्न नहीं होते हैं।

मांसाहार का भारत की अहिंसक संस्कृति से कोई हालरोल अथवा संगति नहीं है। महावीर, गौतम बुद्ध, संत कबीर, गुरु नानक, गांधी, विनोबा भावे आदि शुद्ध शाकाहारी थे। कम प्रोटीनयुक्त आहार शरीर में कैल्शियम की अपेक्षित मात्रा को सुरक्षित रखता है। जबकि मांसाहार कैल्शियम को बाहर निकाल फेंकता है। बुढ़ापे में दुर्बलता, मांसाहार का अनिवार्य अभिशाप है। गांधीजी ने शाकाहार के पक्ष

में बनी अच्छी बातों की मिसाल दी है, वे लिखते हैं सबसे महान हिन्दु सुच्वारक अपने युग में सबसे अधिक चुस्त हुए और वे सभी शाकाहारी थे। शंकराचार्य अथवा दयानंद सरस्वती से बढ़कर अपने समय में किसने अधिक प्रगतिशीलता और चुस्ती दिखायी।

मांसाहार के संबंध में देश-विदेश के जाने माने स्वास्थ्य विशेषज्ञों की राय है कि- हृदय रोग, मस्तिष्क रोग अथवा पाचन क्रिया की गड़बड़ी से मरने वाले ऐसे लोगों की संख्या अधिक होती है, जो नित्य मांस खाते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि- विभिन्न प्रकार के मांस में प्रति पौण्ड 7 ग्रेन तक यूरिक एसिड पाया जाता है जो खून में मिलकर दिल में जलन, जिगर रोग, टी.बी., सांस रोग, गठिया, एनीमिया, हिस्ट्रिया, सुस्त आदि अनेकों रोग करता है। डॉ. डब्ल्यू जे. जयसूर्या ने कहा है कि- मांस और अण्डे का सेवन मत करो, क्योंकि ये दूसरों के जीवन को नष्ट करके मिलते हैं।

जिन्हें बचपन से मांसाहार कराया जाता है, वे बड़े होकर सुस्त, आलसी, झेंपू और दुर्बल होते हैं। अण्डे की उत्पत्ति और विकास ऐसे गंदे पदार्थों के मेल से होती है, जिन्हें छूते हुए भी घृणा होती है। मनुष्य के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाने के लिये इनसे बढ़कर और कोई पदार्थ नहीं है। अण्डे की सफेदी अण्डे का सबसे खतरनाक भाग है। जिन पशुओं को यह खिलाई गई उनकी चमड़ी सूज गई और लक्वा मार गया, इस सफेदी में 'एवीडिन' नामक विष पाया जाता है जो मानव शरीर में जाकर दाद, एक्जिमा, खुजली पैदा करता है।

उपर्युक्त वर्णन से हमें पता चलता है कि मांसाहार सेवन करने से शरीर में नई-नई बीमारियाँ पनपती पैदा होती हैं। जो हमारे शरीर के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध होती हैं। इसलिए हमें मांसाहार सेवन करने वालों को रोकना चाहिए तथा उन्हें शाकाहारी बनने तथा शाकाहारी भोजन ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। (क्रमशः) ◆◆◆

मघवा चक्रवर्ती

श्रावस्ती के समुद्र विजय राजा की रानी भद्रा के परम पुण्यशील पुत्र का नाम 'माधवा' था। ये भरत क्षेत्र के चक्रवर्ती बने। सांसारिक क्षण-विध्वंसी रमणीय पदार्थों की अस्थिरता व नश्वरता को समझकर अपने पुत्र को सिंहासनासीन कर वे धर्मघोष मुनि के चरणों में दीक्षित हो गये। आयुष्य पूर्णकर सिद्ध गति को पाप हुए।

अध्यक्षीय पाती

विचार किया जाए गंभीरता से

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

देश का वातावरण तेजी से बदल रहा है। पिछले तिहत्तर वर्षों से देश में लोकतंत्र है जो कई बार कड़ी से कड़ी परीक्षाएं दे चुका है लेकिन फिर भी लोकतंत्र के मूल्य लगातार झटके खा रहे हैं। राजनैतिक सत्ता का मतलब स्वार्थ सिद्धि, पद लोलुपता, अवसरवाद, वैचारिक निष्ठा की क्षति हो चुका है। इस कारण देश के लोकतंत्र में भटकाव आ गये हैं। जातिवाद के एकदम प्रबल हो जाने से जैन समाज के सम्मुख कई चुनौतियां उपस्थित हो गई हैं। यों छब्बीस सौ वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म के सिद्धान्त आज भी उतने ही सामायिक हैं। ईसा से छह सौ वर्ष पूर्व पूरे विश्व में दार्शनिक विचारधारा तथा धार्मिक प्रभावना का समय था। विभिन्न अवधारणाएं प्रचलित थीं। समय के साथ अधिकांश धर्मधाराएं लुप्त हो गईं केवल जैन तथा बौद्ध का अस्तित्व है। भारत में बौद्ध धर्मावलम्बियों की संख्या अधिक होते हुए भी वे असंगठित तथा अशक्तिशाली होने के कारण प्रभावहीन से हैं। जैन धर्म भारत में अपना दबदबा बनाये हुए है तथा अप्रवासी जैनों ने अमेरिका, ब्रिटेन सहित कई देशों में अपनी अस्मिता बनाने में सफलता प्राप्त की है।

लेकिन भारत में जो जैन धर्म का गृहराष्ट्र है, कई चुनौतियाँ इसके अस्तित्व को ही ललकार रही हैं। इनका सामना करने का आत्मबल जैन समाज में आज होना चाहिये। जैसा की उपरोक्त उल्लेख किया गया है। भारत में वर्तमान राजनीति का दौर जातिवाद की आँधी को संचालित कर रहा है तथा जातिवादी प्रकोप बढ़ रहा है। इस कारण जैन समाज भी व्यापक आकार से एक जाति विशेष के आकार में संकुचित होता जा रहा है। जैन चिन्हों को शनैःशनैः मिटाया जा रहा है। अहिंसक समाज होने तथा सभी के प्रति मैत्री व सहिष्णुता से परिपूर्ण होने के कारण इसका आंतरिक मनोविज्ञान भय से ग्रस्त हो सकता है जो गंभीर खतरे की स्थिति बन सकता अतएव जैन समाज की समग्र स्थिति पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। ◆◆◆

संगठित करें स्वयं सेवक दल

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद जैसा अन्य कोई संगठन युवा शक्ति को समाजोचित सेवा के लिये उन्मुख करने वाला जैन समाज में नहीं है। परिषद का आधार शाखाएँ हैं जिनमें कार्यकर्ताओं को प्रारंभ से कार्य करने, सेवाशील बनने, संगठित शक्ति संचित करने तथा संस्कृति की रक्षा के लिये सम्प्रेरित रहने के संस्कार दिये जाते हैं। इसकी मूल पूंजी ग्राम-ग्राम तथा नगर - नगर में फैले हुए कार्यकर्ता ही हैं। इन्हें अपने भविष्य की आश्वस्ती प्रतिश्रुत अनुभव होती है। इसके केन्द्रीय संगठन की रचना में बुनियादी शाखाओं से निर्वाचित होकर आने वाले प्रतिनिधि हैं। अतः परिषद अपनी प्रारंभ से लेकर चोटी तक की संरचना के कारण सुदृढ़ बनती जाती है। इसके प्रेरणादाता राष्ट्रसंत/ लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने इसे ऐसा ढांचा प्रदान किया है कि निरंतर सक्रिय रहना ही इसका जीवनसूत्र है। प्रसन्नता है कि साठ वर्षों से भी अधिक की काल अवधि पारकर इसने अपनी रगों-रगों को मजबूती देने का कीर्तिमान स्थापित किया है।

जैसा कि हमारे प्रेरणाविभूति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज फरमाते रहते थे परिषद का प्रत्येक कार्यकर्ता सेवा, श्रम तथा धार्मिक शिक्षा से ओतप्रोत होना चाहिये। बिना सेवाभावना के कोई स्वयंसेवक नहीं हो सकता, बिना परीश्रमशीलता के समाज का श्रृंगार करने का उद्देश्य सफल नहीं होता, बिना धार्मिक शिक्षण के किसी में भी आचरणवंतता का विकास नहीं हो सकता। कुल मिलाकर एक स्वयंसेवक या परिषद कार्यकर्ता की योग्यता बहुमुखी होनी चाहिये तथा उसे अपने आपको पहिचानने की क्षमता रखनी चाहिये। समाज का उस पर विश्वास होना चाहिये। समाज में इस विश्वास की प्रगाढ़ता गहन रहनी चाहिये कि उसके वर्तमान तथा भविष्य के हितों का संरक्षक/पहरूआ/ चौकन्नासेवी परिपक्व है। यह तभी संभव है जबकि प्रत्येक युवक अपने आपको स्वयंसेवक के रूप में अवधारित करे।

आशा है प्रत्येक परिषद शाखा अपने यहाँ स्वयंसेवक दल गठित करेगा तथा उनके लिये स्वयंसेवक कार्यक्रम देते हुए उन्हें कार्य करने, अपनी योग्यता प्रदर्शित करने, सेवा के संकल्प पूर्ण करने का वायुमान उपलब्ध करेगा।

जय जिनेन्द्र।

◆◆◆

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

वेद वाक्यों का समन्वय

सुधर्मा- आर्य ! आपकी सब बातें मान लेता हूँ, लेकिन वेद में फिर यह क्यों कहा है कि पुरुषों वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वम् - अर्थात् पुरुष मरकर पुरुष होता है और पशु मरकर पशु होते हैं ? इत्यादि ।

महावीर- आयुष्मन् ! उक्त वाक्य ठीक ही कहा गया है, लेकिन सही अर्थ न जानने के कारण तुम्हें संशय होता है। उसका अर्थ इस प्रकार है- जो मनुष्य इस भव में भद्र प्रकृति है, विनयशील, दयालु एवं अमत्सरी (ईर्ष्या न करने वाला) है, वह मनुष्य नाम कर्म और मनुष्य गोत्र का बंध करता है और उसके बाद मरकर उस कर्म के कारण मनुष्य रूप में पुनः उत्पन्न होता है, लेकिन सभी मनुष्य तो उक्त कर्मों का बंध नहीं करते, जिससे अन्य प्रकार के कर्म बंध के कारण अन्यान्य, योनियों में जन्म लेते हैं। इसी प्रकार इस भव में जिस पशु ने माया के कारण पशुनाम कर्म एवं पशु गोत्र कर्म का उपार्जन किया हो, वही परभव में पुनः पशु रूप में उत्पन्न होता है। सभी पशु तो उक्त कर्म का बंध करते नहीं हैं, जिससे सभी पशु रूप में अवतरित नहीं होते। इस प्रकार जीव की गति कर्मानुसार होती है- नियमेन कर्मापेक्ष- त्वाज्जीवगतेरिति।

इस प्रकार जन्म-जरा-मरण से अतीत महाप्रभु से संशय का निराकरण एवं

तद् विषयक अन्य प्रश्नों का भी समाधान हो गया, तब सुधर्मा ने भी अपनी अन्तर्भावना व्यक्त करते हुए अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ जिन दीक्षा अंगीकार कर ली।

गणधर मंडित : क्या बन्ध-मोक्ष है ?

अपनी ही गोष्ठी के अन्य विद्वानों की तरह विद्वद्वर्य सुधर्मा के भी मुंडित होने की बात पर विचार कर वेद मनीषी मंडित भी महाप्रभु महावीर के पास आए। पूर्वागत विद्वानों की तरह उनकी भी मनोगत शंका की ओर संकेत करते हुए सर्वज्ञ सर्वदर्शी महावीर बोले- आगमन तुम्हारा सफल हो मंडित वशिष्ठ। तुम भले आए। यही तो संशय है न तुम्हें कि बंध-मोक्ष है अथवा नहीं ? इस संशय के जनक हैं वेदागत परस्पर विरुद्ध पद। वेद में एक ओर तो तुम यह वाक्य देखते हो कि - स एव विगुणो विभुर्त बध्यते संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा न वा एष बाह्याभ्यन्तरं वा वेद। जिससे तुम मानते हो कि जीव के बंध और मोक्ष नहीं हैं, किन्तु दूसरी ओर जब यह वाक्य देखते हो कि- न ह वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशतः, तो यह समझते हो कि जीव सशरीर और अशरीर ऐसी दो अवस्थाओं को प्राप्त करता है। याने कि जीव के बंध और मोक्ष हैं। इस प्रकार के परस्पर विरोधी अर्थ करने वाले वेद वाक्यों के होने से तुम्हें यह शंका है कि यथार्थतः जीव के बंध मोक्ष हैं अथवा नहीं, लेकिन तुम उक्त वाक्यों का प्रसंगानुसार यथावत् अर्थ नहीं जानते, इसीलिए तुम्हें संदेह है। तुम्हारे संदेह का यही कारण है। मैं उनका यथास्थिति अर्थ समझाऊँगा। इसके अतिरिक्त तुम यद्यपि युक्ति से भी बंध-मोक्ष का अभाव सिद्ध करते हो, किन्तु वेद में इनका सद्भाव बताने से तुम्हें संदेह होता है कि बंध मोक्ष होंगे अथवा नहीं। बंध-मोक्ष के विरोध में प्रस्तुत की जाने वाली तुम्हारी युक्तियाँ इस प्रकार हैं-

जीव का कर्म के साथ संयोग होना बंध है, तो वह बंध सादि है अथवा अनादि? यदि वह सादि है, तो क्या -

1. पहले जीव और उसके बाद कर्म उत्पन्न होता है ?
2. पहले कर्म और तदनन्तर जीव उत्पन्न होता है ?
3. ये दोनों साथ ही उत्पन्न होते हैं ?

(क्रमशः)

◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

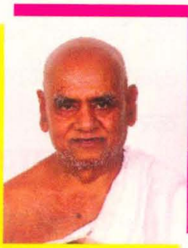

पाप कर्म के कितने भेद ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. क्षेत्र विपाकी कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव मुख्य रूप से नियत स्थान को प्राप्त करे उसे क्षेत्र विषाकी कर्म कहते हैं वह चार प्रकार का 1. नरकानुपूर्वी, तिर्यगानुपूर्वी, 3 मनुष्यानुपूर्वी और 4. देवानुपूर्वी ।

प्र. पुण्य प्रकृति के कितने भेद हैं ?

उ. 42 भेद हैं- 1 सातावेदनीय, 2 उच्चगोत्र, 3 मनुष्य गति, 4 मनुष्यानुपूर्वी, 5 देवगति, 6 देवानुपूर्वी, 7 पञ्चेन्द्रिय जाति, 8 औदारिक नामकर्म, 11 तैजस नामकर्म, 12 कार्मण नाम कर्म, 13 औदारिक अङ्गोपांग, 14 वैक्रिय अङ्गोपांग, 15 आहारक अङ्गोपांग, 16 प्रथम संहनन, 17 प्रथम संस्थान, 21 प्रशस्त वर्षादि । चार (4), 22 अगुरुलघु, 23 पराघात, 24 श्वासोच्छवास, 25 आतप, 26 उद्योत, 27 शुभ विहायोगति, 28 निर्माण, 38 त्रसद, शक (10), 39 देवायु, 40 मनुष्यायु, 41 तिर्यगायु और 42 तीर्थङ्कर नाम कर्म।

प्र. पाप कर्म के कितने भेद हैं ?

उ. 82 भेद हैं- ज्ञानावरणीय 5, अन्तराय 5, दर्शनावरणीय 9 नीच गोत्र, असाता वेदनीय, मिथ्यात्वमोहनीय, स्थावर दशक 10, नरकायु, नरकगति, नरकानुपूर्वी, कषाय 16, नोकषाय 9, तिर्यगगति, तिर्यगानुपूर्वी, पञ्चेन्द्रिय जाति के सिवाय चार जाति 4, अशुभ विहायोगति, उपघात, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध रस, स्पर्श प्रथम संहनन के सिवाय पाँच संहनन और प्रथम संस्थान को छोड़कर बाकी के पांच संस्थान ।

◆◆◆

(लेखांक-6)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

गर्भ काल पूरा हुआ और रानी पद्मावती ने सुखपूर्वक दो सुन्दर सलौने, सुकोमल पुत्र रत्नों को जन्म दिया। राजा वीरधवल की प्रसन्नता असीम हो गई। कहां तो एक पुत्र के लिए तरस रहे थे और अब दो-दो पुत्र। इससे अधिक प्रसन्नता का विषय उसके लिए और क्या हो सकता है। राजमहल में पुत्र जन्म का उत्सव धूमधाम से आरम्भ हो गया। नगर और राज्य में जैसे ही यह समाचार फैला राजकुमारों के जन्म से प्रजा खुशी से झूम उठी। स्थान-स्थान पर नृत्य गान आरम्भ हो गए। पूरे दस दिन तक राजकुमारद्वय के जन्म का उत्सव सम्पूर्ण राज्य में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। बारहवें दिन राजा ने विशाल स्तर पर प्रीतिभोज का आयोजन किया। इसमें राजपरिवार के अतिरिक्त राज्य के अनेक गणमान्य नागरिक भी आमंत्रित किये गये थे। राज्य के अधिकारी और कर्मचारी भी शामिल थे। भोजनोपरांत राजा अपने परिजनों के साथ बैठा और युगल राजकुमारों के नामकरण पर विचार विमर्श होने लगा । काफी सोच विचार के पश्चात् नाम रखे गए वीरभाण और उदयभाण ।

दोनों राजकुमारों का लालन पालन योग्य धायों के संरक्षण में होने लगा। समय की गति के साथ वीरभाण और उदयभाण भी विकास

को प्राप्त होने लगे। शैशवावस्था से बचपन में आ गए और उनके लिए अध्ययन की उचित व्यवस्था कर दी गई। योग्य कलाचार्य के सान्निध्य में उनकी शिक्षा शुरू हो गई। दोनों भाई मेघा सम्पन्न थे। शीघ्र ही उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर ली। उसके पश्चात् उन्हें सैनिक शिक्षा भी प्रदान कर दी गई। शिक्षा प्राप्त करने वाले दोनों राजकुमारों ने यौवन की देहलीज पर पग रख दिये। रानी पद्मावती अपने दोनों पुत्रों को यौवन की ओर बढ़ते देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी। उन दोनों का रूप यौवन किसी से भी कम नहीं था। उनकी शक्ति का अनुमान उनकी देहयष्टि देखकर सरलता से लगाया जा सकता था। माता रानी पद्मावती अपने दोनों पुत्रों को सदैव उचित शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करती रहती थी। इस प्रकार इस परिवार का समय सुख और आनन्द के साथ बीत रहा था। लेकिन कहा जाता है कि सब दिन एक समान नहीं रहते हैं।

दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख का चक्र चलता रहता है। राजा वीरधवल का परिवार तो राजपरिवार था। सुख साधनों की भी कोई कमी नहीं थी। किन्तु कर्मसत्ता के सम्मुख आज तक कोई भी टिक नहीं पाया है। उसका फल सभी को भोगना पड़ता है। यह भी कर्म सत्ता का ही प्रतिफल कहा जायेगा कि राजा वीरधवल के परिवार में सभी प्रकार से आनन्द की वर्षा हो रही थी कि एक दिन एकाएक रानी पद्मावती को किसी रोग ने आ घेरा। राजवैद्य को बुलाकर उपचार शुरू कर दिया गया। प्रारम्भ में तो ऐसा कुछ नहीं लगा कि यह रोग असाध्य है किन्तु राजवैद्य की औषधि से रानी को कोई लाभ होता दिखाई नहीं दिया तो एक दिन राजा वीरधवल ने कहा- 'वैद्यराज ! आपके द्वारा चिकित्सा करते हुए लगभग एक पक्ष बीत गया है किन्तु रानी के स्वास्थ्य में सुधार के कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। इसका कारण क्या है? क्या आपको रोग की पहचान नहीं हो पा रही है अथवा औषधि नहीं मिल पा रही है।' (क्रमशः)

◆◆◆

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

श्रेणिक के समझाने–बुझाने पर चेलणा ने हृदय पर पत्थर रखकर कहा– 'शब्द मुँह से निकलने के पूर्व ही मेरी जान क्यों नहीं निकल जाती? महाराज ! जो विचार राक्षसी को भी नहीं होता, वह विचार मेरे मन में आया कि मैं अपने प्राणप्रिय पति के हृदय का माँ...स...खाऊँ। और ऐसा कहकर चेलना फूट–फूटकर रोने लग गई।' श्रेणिक ने चेलणा को आश्वासन देकर शांत किया, देवी ! तुम शांत रहो, कुछ भी अनिष्ट हुए बिना तुम्हारा दोहद पूरा होगा। इसमें तुम्हारी अपनी वृत्तियाँ नहीं, किन्तु गर्भस्थ शिशु की भावी वृत्तियाँ ही काम कर रही हैं, तुम्हें चिन्तित व लज्जित होने की कोई जरूरत नहीं।' चेलणा को शांत व आश्वस्त कर श्रेणिक राजसभा की ओर चले गये. दोहद की विचित्रता और उसके पूर्ण होने की दुःसम्भावना की चिन्ता से श्रेणिक उदास और व्यथित से रहने लगे। अभयकुमार से उनकी अन्तर्व्यथा छिपी न रह सकी। अवसर देखकर उसने पूछा– 'पिताजी । आजकल आप किसी गहरी चिन्ता में डूबे हुए से दिखते हैं। आपकी कमलसी विकसित मुखमुद्रा मुर्झाई हुई प्रतीत होती है, क्या बात है ?'

श्रेणिक कुछ देर मौन रहे, फिर सोचा, मेरी व्यथा का निवारण करने में यदि कोई समर्थ है तो वह अभयकुमार ही है। फिर इससे छिपाने में क्या लाभ ? वैद्य से वेदना छिपाना ठीक भी नहीं। आखिर श्रेणिक ने चेलणा के दोहद की बात कहकर अभय से कहा– 'अपनी चुल्लक माता को चिन्तामुक्त कर उसकी प्रसन्नता का बाग खिलाना अब तुम्हारे ही हाथ में है। व्युत्पन्नमति अभय पिताजी की इतनी विकट और दुस्सम्भव बात सुनकर भी न झेंपा और न घबराया, अपितु प्रसन्नता के साथ बोला– 'पितृवर ! इन बातों के लिए आपको चिन्तित होने की जरूरत नहीं। आपके पुण्य–बल से सब स्थिति अनुकूल हो जायेगी मैं शीघ्र ही माता चेलणा के दोहद की पूर्ति का प्रयत्न करूँगा।'

अभयकुमार ने योजना बनाई। श्रेणिक को उस दिन राजमहल में ही सुलाया गया। उसकी छाती पर खरगोश का मांसपिंड इस प्रकार बांधकर रखा कि वह श्रेणिक की छाती से बिल्कुल सटा हुआ, एकाकार-सा प्रतीत हुआ। दूसरे महल में चेलणा जहाँ रहती थी, वहाँ उसको सूचित कर दिया- आज शल्यक्रिया करके महाराज की छाती का माँस निकाला जा रहा है। चेलणा अपने महल की जाली से इस घटना को देख रही थी। दोहद पूर्ति की तीव्र आकांक्षा के कारण इस वीभत्स दृश्य को देखकर भी उसका दिल नहीं पसीजा अभयकुमार ने उसकी छाती से खरगोश के माँस को उठाकर शीघ्र ही चेलणा के पास भेज दिया। चेलणा ने अपनी दोहद पूर्ति कर ली। कुछ ही क्षण बाद चेलणा की जैसे खोई चेतना लौट आई हो, अपनी इस घृणित आकांक्षा पर और वीभत्स कृत्य पर एकदम रोना आ गया। पति के ह्रदय के माँस की कल्पना करते ही वह काँप उठी और मूर्छित सी होकर विलाप करने लगी। अभय ने बुद्धिचातुर्य से समझाया और महाराज का उपचार कर स्वस्थ बनाने का वचन दिया। दूसरे ही दिन श्रेणिक के आरोग्य की सूचना देकर चेलणा की मनोव्यथा को शांत किया। चेलणा की दोहद पूर्ति हेतु अभयकुमार द्वारा रचा गया यह नाटक सभी के लिए आश्चर्य का कारण बना रहा। चेलणा धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगी। उसके मन में विकल्प उठा- 'जिस शिशु के गर्भ में आते ही मेरे मन में घृणित विकल्प उठे, वह शिशु आगे जाकर कैसा निकलेगा ? जो बालक गर्भ में ही पिता के ह्रदय का माँस खाना चाहता हो, वह पिता के लिए शुभ तो नहीं होगा, निश्चित ही यह बालक भविष्य में पिता का प्राण हरण करने वाला सिद्ध होगा। ऐसा पापी पुत्र घर में रहा भी तो क्या काम का ? मैं इस पुत्र का प्रसव होते ही सर्प के बच्चे की भाँति इसे कहीं दूर फिकवा दूँगी ताकि पिता के लिए अनिष्टकर सिद्ध न हो। चेलणा ने अपने विचार अपनी विश्वस्त परिचारिका को भी बता दिया और उसे समझा दिया- तुम चुपचाप यह काम कर डालना।

प्रसूति के समय दासी सावधान थी। शिशु का जन्म होते ही वह स्वामिनी की आज्ञानुसार वस्त्र में लपेटकर अशोक वन की भूमि में एकांत में जाकर छोड़ आई।

(क्रमशः) ◆◆◆

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

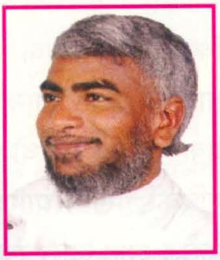

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

महाराज कुम्भ ने उन छहों राजाओं का चार प्रकार के मनोज्ञ आहार, पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माला आदि से सत्कार किया। तदनंतर उन्हें विदा किया। वहाँ से विदा होकर वे जितशत्रु आदि छहों राजा अपने-अपने राज्यों की ओर प्रस्थित हुए और अपने-अपने राजप्रासादों में आकर राजकार्य में संलग्न हो गये। तदनन्तर तीर्थंकर मल्ली भगवती ने मन में निश्चय कर लिया कि वे एक वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा ग्रहण करेंगी। मल्ली भगवती के इस प्रकार का विचार करते ही सौधर्मेन्द्र देवराज का आसन चलायमान हुआ। उसे अवधिज्ञान के उपयोग से विदित हुआ कि अर्हत् मल्ली भगवती ने प्रव्रजित होने का विचार कर लिया है। त्रिकालवर्ती सौधर्मेन्द्रों का यह परम्परागत जीताचार रहा है कि वे प्रव्रजित होने के लिये तत्पर तीर्थंकरों के यहाँ अर्थात् तीर्थंकरों के माता-पिता के घर में तीन सौ अट्ठयासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राएं दें अर्थात् प्रस्तुत करें। 'इस प्रकार विचार कर इन्द्र शक्त ने वैश्रमण देव (कुबेर) को बुलाकर उसे कुम्भ राजा के राजप्रसाद में उपर्युक्त प्रमाण में र्स्वणमुद्राएँ रखवाने की आज्ञा दी। कुबेर ने शक्त की आज्ञा को शिरोधार्य कर जृम्भक देवों को बुलाया और उन्हें तीस सौ अट्ठयासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्णमुद्राएँ महाराज कुम्भ के राजप्रासाद में पहुंचाने की आज्ञा दी। जृम्भक देवों ने तत्काल उत्कृष्ट देवगति से मिथिला के राजप्रासाद में आकर महाराज कुम्भ के भण्डारों को तीन सौ अट्ठयासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राओं से भर दिया।

इन्द्र की आज्ञा से जृम्भक देवों द्वारा महाराज कुम्भ के भण्डारों को स्वर्णमुद्राओं

द्वारा पूरित कर दिये जाने के पश्चात् भगवती मल्ली ने वर्षीदान देना प्रारम्भ किया। निरन्तर एक वर्ष पर्यन्त वे प्रतिदिन प्रातःकाल से मध्यान्ह काल पर्यन्त दो प्रहर तक बहुत से सनाथों, अनाथों, पान्थिकों, पथिकों, खप्परधारियों आदि को एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान करती रही। महाराज कुम्भ ने उस समय मिथिला नगरी में अनेक स्थानों पर भोजनशालाएँ खुलवा दीं। उन भोजनशालाओं में रसोइये प्रचुर मात्रा में चारों प्रकार के स्वादिष्ट अशन, पानादि बनाते और वहाँ आने वाले पन्थिकों, पथिकों, खप्परधारी भिक्षुकों, गृहस्थों आदि सभी प्रकार के लोगों को भोजन कराया जाता। अस्वस्थों, अपाहिजों एवं वहाँ आने में असमर्थ लोगों को उनके स्थान पर ले जाकर भोजन दिया जाता। चारों ओर लोग यत्र-तत्र भगवान् के वर्षीदान और महाराज कुम्भ द्वारा किये जाने वाले भोजनदान की महिमा गाने लगे। त्रिलोकपूज्य तीर्थंकरों के निष्क्रमण के समय निरन्तर एक वर्ष तक प्रतिदिन बार-बार इस प्रकार की घोषणाएँ की जाती हैं कि जिसे जो चाहिये वही मांगे। इन घोषणाओं के अनुसार जो भी जाता उसे, जो वह चाहता वही दिया जाता। इस प्रकार दान देते समय अन्त में भगवान मल्लिनाथ ने मन में विचार किया कि प्रतिदिन 1 करोड़ 8 लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करती हुई एक वर्ष में तीन अरब अट्ठयासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान अर्थात् तीर्थंकरों द्वारा अभिनिष्क्रमण के अवसर पर इतने ही परिमाण में दिये जाने वाले दान के सम्पन्न हो जाने पर वे प्रवृज्या ग्रहण करेंगे। प्रभु मल्लिनाथ के मन में इस प्रकार के विचार आते ही लोकान्तिक देवों के आसन प्रकम्पित हुए। अवधिज्ञान के उपयोग से उन्हें विदित हुआ कि वर्षीदान समाप्त कर जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के 16 वें तीर्थंकर प्रभु मल्ली प्रव्रजित होने का विचार कर रहे हैं।

(क्रमशः)

फूलों की सुगंध लीजिए

किसी ने आपको कुछ बोल दिया । आप रात भर सो न सके । आफिस में किसी से बात हो गई है । उसे याद रखकर आप घर पर भी परेशान रहते है। बल्कि, घरवालों को भी दुखी बना देते है। ये बाते आपका सिर भारी करती है। चेहरे को बदरंग बनाती है। ऐसे विचारों को तुरंत बाहर निकाल दीजिए। जिन्हें आप पकड़ेंगे नहीं, वो आपको परेशान भी नहीं करेंगे। बगीचे में फूल भी खिलते है तो कीडे भी घूमते है। फूलों की सुगंध लीजिये । कीड़ों से बचकर चलिये ।

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी महाराज

विराट व्यक्तित्व

(प्रस्तोता – मुनिराज प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

जन्म स्थली पेपराल

उत्तर गुजरात में थराद एक ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण नगर है जो बनासकांठा जिले के अंतर्गत है। इसी थराद के समीप पेपराल नामक एक गाँव है। यही पेपराल गाँव हमारे राष्ट्रसंत आचार्य जयन्तसेनसूरिजी म.सा. का जन्म स्थान है।

परिवार प्रशस्ति– श्रीमाल निवासी परमार वंशीय थिरपाल धरू ने वि.स. 101 में थिरपुर नगर को बसाया था। जो वर्तमान में थराद नाम से ख्याति प्राप्त है। उन्हीं की वंश परम्परा में सम्पूर्ण थरादरी पंथक ने 775 वर्षों तक राज किया। उसी राज्य वंशीय परिवार में पेपराल नगर में धरू वंशीय श्रेष्ठिवर्य तलकसीभाई मनजीभाई के सुपुत्र श्री देवचन्दभाई एवं भाईचन्दभाई निवास करते थे। देवचंदभाई के सुपुत्र स्वरूपचंद भाई एवं मोहनलाल दो पुत्र थे एवं भाईचंद भाई के कालीदास, चिमनलाल, भूदरमल, माधवलाल चार पुत्र थे। पेपराल गाँव में धरू वंशीय एक परिवार रहता था।

जिसके मुखिया थे सेठ श्री स्वरूपचंदजी धरू। सेठ श्री स्वरूपचंदजी धरू की धर्मपत्नी का नाम था सौ. पार्वती देवी। राष्ट्रसंत के जन्म के पूर्व इस दम्पत्ति के चार पुत्र थे जिनके नाम हैं– 1. गगल भाई, 2. शांति भाई, 3. छोटालाल और 4. लेहरचंद भाई।

जन्म एवं नामकरण

शुभ समय आने पर माता पार्वती देवी को गर्भ के लक्षण प्रकट हुए। इस समाचार से परिवार में प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गई। उन दिनों अधिक संतान होना, वर्तमान की भांति बुरा नहीं माना जाकर अच्छा माना जाता था। सौ. पार्वती

देवी सावधानी पूर्वक गर्भ की पालना करती रहीं और गर्भकाल पूर्ण होने पर वि.सं. 1993, कार्तिक कृष्णा 13 (गुजराती) अर्थात् मगसर कृष्णा 13 वि.सं. 1993 को माता के गर्भ से एक सुंदर पुत्र रत्न ने जन्म लिया। पुत्र के जन्म से परिवार में हर्ष की लहरें उत्पन्न हो गई। परम्परानुसार पुत्र का जन्मोत्सव मनाया गया और नामकरण के समय परिजनों की सहमति से सद्य प्रसूत पुत्र का नाम पूनमचंद रखा गया। मानो कृष्ण पक्ष के अंधियारे को समाप्त करने के लिए चन्द्रमा स्वतः धरती पर उतर आया हो। पूनमचंद के जन्म के पश्चात् माता पार्वतीदेवी की पावन कुक्षी से एक पुत्र रत्न का और जन्म हुआ जिसे नाम मिला पोपटलाल जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की सेवा में प्रविष्ट हुए तथा मैनेजर के पद तक पहुँचे।

(क्रमशः)

◆◆◆

इंसान की पहचान

एक गुरु अपने शिष्य के लिए औषधि खोजने जंगल में गए। एक शिकारी भी शिकार के लिए वहाँ गया और एक सैनिक भी जंगल का रास्ता भटक गया। तीनों को प्यास लगी। दूर कहीं झोपड़ी दिखाई दी, जिसमें एक दृष्टिहीन व्यक्ति बैठा था। शिकारी वहाँ पहुंचा और बोला 'ए अंधे ! मुझे पानी पिला दे, वरना तीर से तेरा जलपात्र फोड़ दूंगा।

दृष्टिहीन व्यक्ति ने कहा, 'चल भाग शिकारी कहीं का, नहीं दूंगा पानी ।' उसी के पीछे सैनिक आया और बोला, 'अंधे, पानी पिलाकर मेरी प्यास बुझा । चाहे तो धन और वस्त्र ले ले।' उस व्यक्ति ने चिढ़कर कहा, 'राजा का सैनिक है, मुझे लोभ दिखाता है, जा नहीं मिलेगा पानी ।' तब तक गुरुजी भी वहां पहुंच गए थे । उन्होंने कहा, 'सूरदासजी, थोड़ा-सा जल प्रदान करें, बड़ी कृपा होगी।' दृष्टिहीन व्यक्ति बोला, गुरुदेव, मेरा सौभाग्य है कि आप मेरी कुटिया में पधारे।' उसने गुरुजी को पानी पिलाया। पानी पीकर गुरुजी ने कहा, आप देख नहीं सकते, फिर यह कैसे जान गए कि पहले आया व्यक्ति शिकारी, दूसरा सैनिक और तीसरा मैं, एक अध्यापक हूँ ? वह बोला, 'गुरुजी, बोलचाल से ही इंसान की पहचान हो जाती है। यह सुनकर गुरुजी ने उससे विनती की कि वह शिकारी और सैनिक को भी पानी पिला दे ताकि इनके मन की आँखे भी खुल जाएं।

प्रभुजी का ज्ञानातिशय

प्रश्न. एक समान ही समय में संयशवाले अथवा एक साथ जिज्ञासावाले देव- मनुष्य- तिर्यंच आदि के संशय का नाश भगवान किस प्रकार करते हैं ?

उत्तर – भगवान एक साथ ही (at a time) उत्तर देकर समान समय में ही सबके संशय दूर करते हैं।

प्रश्न. अगर प्रभु एक-एक व्यक्ति के संशय का परिहार क्रम से एक के बाद एक का अलग-अलग ऐसे परिपाटी से करें तो क्या वह उचित नहीं होता ?

उत्तर– संशयवाले व्यक्ति तो असंख्य-संख्यातीत भी हो सकते हैं। प्रभु इन सब के संशयों का उत्तर क्रमशः (one-by-one) एक-एक करके दें तो पल्योपम आदि काल बीत जाने पर भी उनके संशय का समाधान न किया जा सके ऐसा भी संभव है। तुल्यकाल संशयवालों के जिज्ञासुओं के, संशय को दूर करने में भगवंत की सर्व जीवों के प्रति समदृष्टि अर्थात् रागद्वेषरहितता ज्ञात होती है। कालभेद से कहें तो 'भगवंत ने इसको प्रथम बताया मुझे बहुत देरी से बताया' ऐसा सोचकर श्रोताओं के मन में भगवंत की चित्तवृत्ति रागद्वेषयुक्त होने की संभावना का प्रसंग आ सकता है। सर्व संशयवालों के सर्व संशयों को एक साथ ((At a time) दूर करना यह भगवान की ऋद्धि विशेष है।

अगर भगवान् परिपाटी से अर्थात् क्रमशः एक के बाद एक जीव के संशय को दूर करने का कार्य करें तो किसी संशयवाले जीव का संशय दूर हो उससे पहले ही उसकी मृत्यु आ जाय ऐसा संभव है, एक ही समान समय में सबके संशय का निवारण किया जाय तो यह दोष संभावित नहीं रहता।

'प्रभु सर्वज्ञ हैं' ऐसी प्रतीति लोकमानस में इस प्रकार ही संभव है, क्रमशः संशय दूर करने में जिसका संशय नष्ट न हुआ हो ऐसे किसी जीव को भगवान की सर्वज्ञता की प्रतीति न भी हो यह संभव है।

तदुपरांत प्रभु अचिंत्य-अप्रमेय गुणसंपत्तिवाले हैं, जो एक साथ इस प्रकार सबके संशयों को दूर करते हैं, ऐसा विश्वास लोगों को होता है। (बृहद् कल्पसूत्र -1201, 1202, 1203)

इन कारणों से भगवान एक साथ सबके प्रश्नों का उत्तर देते हैं, यह निःशंक है, निश्चित है। प्रभुजी का यह ज्ञानातिशय है। ऐसा ज्ञानातिशय तीर्थंकर देव के पास ही होता है।

जिनशासन की वर्णमाला (3)

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्री जी म.)

ग– गजसुकुमाल – देवकी के 6 पुत्र थे। वे छओं पुत्र सुलसा के यहाँ पले थे और सातवाँ पुत्र श्रीकृष्ण यशोदा के यहाँ पला। देवकी ने श्रीकृष्ण के सामने ऐसी इच्छा प्रगट की कि मैंने तो किसी भी पुत्र को अपनी गोद में नहीं खिलाया इसलिए मैं मेरी गोद में एक पुत्र को पालना चाहती हूँ। माँ की इच्छा पूर्ण करने के लिए श्रीकृष्ण ने अट्ठम तप की आराधना करी। उस तप के प्रभाव से देवता प्रगट हुए। उन्होंने देवता से बोला कि मुझे एक भाई चाहिए। तब देवता ने कहा– तुम्हें भाई तो मिल जाएगा लेकिन वो दीक्षा लेगा। कोई बात नहीं... मेरी माँ की इच्छा तो पूर्ण हो जाएगी। माँ गर्भवती हुई... एक पुत्र का जन्म हुआ उसका नाम गजसुकुमाल रखा। गजसुकुमाल क्रमशः बड़ा होता है। उनका भाई श्रीकृष्ण उनके लिए सुन्दर रूपवान स्त्रियों को लाता और गजसुकुमाल से कहता कि इसमें से एक को पसन्द करो। गजसुकुमाल ने कहा– मुझे दीक्षा लेना है लेकिन उनकी माँ ने उनकी सगाई कर दी थी। भगवान की देशना सुनकर उनको वैराग्य हुआ और दीक्षा ली। प्रभु से कहा मुझे आज ही मोक्ष में जाना है। प्रभु ने उनकी पात्रता देखकर श्मशान में जाकर साधना करने को कहा। गजसुकुमाल मुनि श्मशान में जाकर काउस्सग्ग ध्यान में खड़े हो गए। वहाँ पर उनके ससुरजी आए। गजसुकुमाल को देखते ही उनके अन्दर द्वेषभाव पैदा होता है। पूर्वभव में बाँधा हुआ कर्म इस भव में उदय आया। उनके सिर पर मिट्टी की पाल बांधकर अंगारा जलाया। फिर भी सामने वाले के दोष नहीं देखे। स्वदोषों का चिंतन कर...आत्मचिंतन में डूब गए। केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई।

घ– घड़ी – इस शब्द के दो अर्थ हैं– (1) घड़ी समय बताती है। टाईम इस मनी समय बहुत कीमती है। गया हुआ समय वापिस नहीं आता है। प्रभुवीर ने गौतमस्वामी को भी कहा– हे गौतम । एक क्षण का भी प्रमाद ना कर। हम तो कितना समय व्यर्थ ही प्रमाद में गुमा देते हैं।

(2) एक घड़ी में 24 मिनिट होते हैं। दो घड़ी में 48 मि. होते हैं। 48 मिनिट की एक सामायिक होती है। सामायिक में श्रावक साधु जैसा हो जाता है। 32 दोष को टालकर भावपूर्वक सामायिक करना चाहिए। सामायिक से समत्वभाव की प्राप्ति होती है। भावपूर्वक एक सामायिक करने से असंख्य वर्षों का देवायु बंधता है।

च– चन्दनबाला – चम्पा के राजा दधिवाहन थे। उनकी रानी का नाम धारिणी एवं पुत्री का नाम वसुमति था। कौशाम्बी के राजा शातनिक ने दधिवाहन पर आक्रमण किया। युद्ध में दधिवाहन राजा हार गए। शातनिक के रथाध्यक्ष महारानीधारीणी एवं वसुमति का अपहरण कर जंगल में ले गए। वहाँ जाकर रानी के सामने दुर्भावना प्रकट

की। रानी ने अपनी शील रक्षा के लिए वहीं ही देह का त्याग कर दिया। वशुमति ने रथाध्यक्ष से से कहा– आप ऐसा मत करना। आज मैं आपका धर्मपिता हूँ... आप मेरे घर चलो। उन दिनों में मानव को पशुओं की तरह बेचा जाता था। उसने भी धन की लालच में वसुमति को बाजार में नीलाम कर दिया। कौशाम्बी की प्रसिद्ध वेश्या ने वसुमति के अद्वितीय रूप को देखकर खरीद लिया। वेश्या वसुमति को घर ले जाती है। वसुमति उसको पूछती है आपके घर मुझे क्या करना होगा। तुझे कुछ भी काम करना नहीं होगा... यहाँ तू आराम की जिन्दगी जीना। मैं कौशाम्बी नगरी की सर्वाधिक धनी वेश्या हूँ। वसुमति यह सुनकर कांप उठी। मुझे मर जाना पसंद है लेकिन दुष्कार्य नहीं करूँगी। ऐसा जानकर वेश्या ने पुनः बेच दिया। एक सेठ उसे खरीदकर घर ले आया और उसका नाम चंदनबाला रखा। सेठ की पत्नी को सेठ पर संदेह हुआ। एक बार सेठ कहीं बाहर गए। सेठानी दुष्ट थी। उसने चन्दनबाला का सिर मुण्डवा कर हाथों में हथकड़ी, पाँवों में बेड़ी लाकर उसे तलघर में मर जाने के लिए बंद करके, पीहर चली गई। 3 दिन बाद सेठ घर आया। चन्दना दिखी नहीं। बहुत तलाश करने के बाद चन्दना तलघर में मिली। सेठ ने उसको बाहर निकाला। द्वार के बीच दहलीज पर बिठाया। घर में खाने को केवल उड़द के बाकुले थे जो सूप में रखे थे। सेठ ने भूखी चन्दना को खाना दिया। हथकड़ी – बेड़ी को काटने के लिए लोहार को बुलाने जाता है। इधर महावीर स्वामी भिक्षा के लिए आए। उनका अभिगृह था– 1. अविवाहित कन्या हो 2. राजकुमारी 3. निरपराधी 4. सदाचारिणी 5. बान्दिनी 6. हाथों में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी 7. सिर मुण्डित 8. 3 दिनों से भूखी हो 9. उड़द बाकुले खाने के लिए हों 10. अतिथि की प्रतीक्षा कर रही हो 11. बीच देहली पर बैठी हो 12. प्रसन्नमुखवाली हो 13. आँख में आंसू हों...प्रभु के सारे अभिगृह पूरे हो रहे थे लेकिन एक अभिगृह पूरा नहीं हो रहा था इसलिए भगवान वापिस लौट गए। चन्दना रोने लगी। आंसू देखकर अभिगृह पूरे हो गए। चन्दना ने भगवान को उड़द बाकुले वोहराकर अट्ठम तप का पारणा किया। राजा शतनिक एवं रानी मृगावती को पता चला और चन्दनबाला को महल में ले आये। मृगावती चन्दनबाला की मौसी थी। चन्दनबाला को वैराग्यभाव जागा और संयम ग्रहण किया। महावीर प्रभु की प्रथम शिष्या बनी और 36,000 शिष्याओं की गुरुणी बनी।

छः– छः रि पालित संघ – इसमें छः नियम होते हैं। 1. भूमि संथारी 2. पैदल विहारी 3. एकल आहारी 4. सचित्त परिहारी 5. ब्रह्मचारी 6. आवश्यकचारी।

जो इन छः नियमों का पालन करते हुए यात्रा करते हैं उनकी यात्रा सच्ची कहलाती है। प्रभु आज्ञा पूर्वक की गई यात्रा मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाने वाली होती है। छःरिपालित संघ एक वार्षिक कर्त्तव्य है। पूर्व में भी वस्तुपाल तेजपाल आदि महापुरुषों के द्वारा छःरिपालित संघ निकाला गया। अपने गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरिजी महाराज साहब की निश्रा में कितने ही पैदल संघ निकाले गए। पारा से पालिताणा, बड़नगर से मोहनखेड़ा, सायला–पालिताणा आदि।

◆◆◆

जीवित महोत्सव

(श्री जैनम् जैन)

कोई भी परम्परा प्रारंभ होती है, उसके पीछे कोई उद्देश्य होता है, लेकिन काल के प्रवाह में परिस्थितियों के पलटने से कई बार मूल उद्देश्य को लोग भूल जाते हैं एवं गतानुगतिक रीति के अनुसार उस परम्परा को चलाते रहते हैं, ऐसा ही कुछ है, जीवित महोत्सव के संबंध में। जीवित महोत्सव मनाने के पीछे भाव ये थे कि जीवन में जिनके साथ अपना सम्बन्ध रहा, उनके साथ राग-द्वेष या जाने-अनजाने कषायों के वश होकर दुर्व्यवहार, अनीति, विश्वासघात आदि होना संभव है, तो जीवन के अंतिम पड़ाव में उन सभी से मन-वचन-काया के त्रिकरण योग से, आत्म-साक्षी से 'मिच्छामि- दुक्कड़म्' क्षमायाचना कर लें, जिससे वैर की परम्परा अगले भवों तक नहीं चले। अतएव मृत्यु को महोत्सव रूप बनाने के लिए जीवित महोत्सव का आयोजन किया जाता था। इस निमित्त से लोगों को बुलाकर क्षमायाचना की प्रक्रिया पूर्णकर ली जाती थी। उस समय किसी के साथ अनबन होती तो गांव-समाज के लोग भी उनमें आपस में एक-दूसरे का मिलन करवा लेते थे। लेकिन उस समय आसपास के 45-50 कि.मी. के अंतर में गांवों में हमारा विशेष सम्बन्ध का दायरा होता था। आज विशेषकर व्यापार आदि के कारण अन्य राज्यों में बसने से एवं सामाजिक/धार्मिक दायरा भी विस्तृत हो गया है। ऐसी स्थिति में अपने गृह नगर में जीवित महोत्सव मनाना मात्र एक खाना पूर्ति तक सीमित रह जाता है, क्योंकि अधिकांश अपने सम्बन्धित लोग वहाँ नहीं पहुंच पाते, फिर जिनके साथ वैचारिक मतभेद या अनबन हो, वे तो वहाँ आयेंगे ही नहीं। फिर क्षमा याचना का मकसद कैसे हल हो पायेगा ? यह विचारणीय प्रश्न है।

* जैन आचार में बताया गया है कि जो श्रावक अपनी साधना में विशेष रूप से आगे बढ़ना चाहे, वह श्रावक की प्रतिमाओं को स्वीकार करें । श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं में पांचवीं नियम प्रतिमा में रात्रि भोजन त्याग का समावेश है तथा छठी ब्रह्मचर्य बताई गई है। दिगंबर परम्परा के अनुसार छठी प्रतिमा रात्रि मुक्ति त्याग और सातवीं प्रतिमा ब्रह्मचर्य का पालन है। इससे रात्रि भोजन त्याग और ब्रह्मचर्य के सहसंबंध का पता चलता हैं ।

टाईम ही टाईम

(श्री छगनलाल भुगड़ी)

हमने पिछले जन्म में धर्म किया था,
उसी की ही पुण्यवानी से आज मनुष्य जन्म मिला,
ऊँचा कुल मिला, जैन धर्म मिला, नाम और शोहरत भी मिली जिन शासन मिला है ?
लेकिन आगे के लिए क्या सोचा है ?
जैन धर्म बड़ी मुश्किल से मिला है,
ये जो गलियों में आवारा जानवर (पशु) घूम रहे हैं,
इन्हें भी कभी मनुष्य जन्म मिला था,
इनमें से कोई डाक्टर था, कोई इंजीनियर,
कोई व्यापारी तो, कोई उद्योगपति...
इनके गुरु भी इन्हें धर्म करने को कहते थे,
तो वे हँसकर क्या जवाब देते थे ?...कि
हमारे पास टाईम नहीं है।
और वो मनुष्य जन्म हार गए, धर्म किया नहीं,
पशु योनि में आ गए, अब देखो....टाईम ही टाईम है,
बेचारे गली-गली में आवारा घूमते हैं, कोई दुत्कारता है।
कोई फटकारता है, करम बहुत रुला डालते हैं
करम किसी को नहीं छोड़ते
अब नहीं समझोगे तो कब समझोगे एक 48 मिनट
की शुद्ध सामायिक घोर कर्मों को भी धो डालती है।
फ्री-फ्री-फ्री मिलेगा फायदा बिना किसी कार्य करने के
केवल व्याख्यान के समय में सामायिक आराधना में बैठना
पर करम बहुत ज्यादा है, समय कम ।
विचार-कर, चिन्तन-कर और
चाहे जो मजबूरी हो। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण एवं
जिन वाणी श्रवण करें। गुरु इकतीसा पाठ करें।
हम कर सकते हैं। क्या न करे धर्म हमारा मित्र है ?
साथ यही जाने वाला है... मोह माया तो इधर ही रहेगी।

◆◆◆

जीयो और जीने दो

(डॉ. दिलीप धींग)

इस जगती में सबसे ऊँचा धर्म अहिंसा प्यारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह मानवता का नारा है ।।

सुख चाहते हम, लगती हमको, जैसे प्यारी अपनी जान ।
वैसे ही हर जीव को लगती, बेहद प्यारी अपनी जान ।
अतः किसी को मत मारो तुम, सन्तों ने पुकारा है।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।1।।

बुरा काम है मार डालना और बचाना अच्छा काम ।
आओ ! अच्छा काम करें हम, खूब कमाएँ जग में नाम ।
राह अहिंसा चलने वालों से जग में उजियारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।2।।

महापुरुष कहते -समझाते, पशु-पक्षी हैं सच्चे दोस्त ।
दोस्त से दोस्ती निभाओ, इंसा हो, मत खाओ गोश्त ।
रिश्ता मूक बचाओ इसमें, धड़क रहा जहां सारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।3।।

खोल दिये हैं बूचड़खाने, बेकसूर का खूं बहता है ।
बेबस जानवरों की हत्या, बर्बरता है, कायरता है ।
इन जीवों की हत्याओं से बढ़ता दुःख अंधियारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नाहर है ।।4।।

सुनो चीख कटते पशुओं की, देखो हृदयविदारक तड़पन ।
महसूसों वह अनंत पीड़ा, फिर थम जातीं साँसें- धड़कन ।

जिसने इन जीवों को मारा, उसने खुद को भी मारा है ।
'जीयो आरै जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।5।।

भोले-भोले, सुन्दर-सुन्दर, जीव धरा के भूषण हैं।
वन-उपवन आबाद है, इनसे, हरते कष्ट-प्रदूषण है।
जीवों की त्रिकाल महत्ता, को सबने स्वीकारा है ।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।6।।

शांति का पैगाम अहिंसा, समता का संगान अहिंसा ।
जीने की सर्वोच्च कला यह, जीवन का विज्ञान अहिंसा ।
जिसने तत्व अहिंसा समझा, उसने सत्य विचारा है।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।8।।

जहाँ अहिंसा वहाँ हमेशा, ढेरों खुशियाँ आती हैं।
हिंसा सब पापों की जननी, जग में प्रलय मचाती है।
सत्य अहिंसा फूल सुगंधित, हिंसा जलता अंगारा है।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।7।।

मारकाट हिंसा - हत्या के, छोड़ो सारे क्रूर रिवाज़।
बन सको तो बनो साथियों, मूक प्राणियों की आवाज़।
जब-जब हुई उपेक्षा इनकी, तब-तब मानव हारा है।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।9।।

कभी किसी को नहीं सताएँ, सदा गीत प्रेम के गाएँ ।
खुद की, जीव जगत की खातिर, शाकाहार करें- करवाएँ ।
छोटा-सा संकल्प हमारा, सबका बड़ा सहारा है।
'जीयो और जीने दो' यह महावीर का नारा है ।।10।।

◆◆◆

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,
ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

આંધળો દળે, ને કૂતરા ખાય

''अन्ने हरंति तं चित्त, कम्मी कम्मेहिं किच्चति''

(અવસર પ્રમાણે ભેગું કરેલું ધન બીજી વ્યક્તિ ઉડાડી દે છે, અને ભેગું કરનારને પોતાના પાપકર્મોનું ફળ પોતાને ભોગવવું પડે છે.)

વ્યક્તિ જ્યારે ચોરી કરે છે અથવા કોઈનું ધન લઈ લે છે. ત્યારે તેના અંતઃકરણમાંથી એક અવાજ આવે છે : ''કરીશ નહિ. આવું કામ કરીશ નહિ, આ કામ ખરાબ છે !'' પરંતુ એ અવાજને સાંભળ્યા વગર સ્વાર્થ અને પ્રલોભનને વશ થઈને વ્યક્તિ એ કામ કરી જ નાખે છે.

આ જ વાત બીજા પાપો અંગે પણ કહી શકાય. પાપ કરીને અને પોતાના આત્માને કલુષિત કરીને જે કાંઈ ધન મેળવ્યું હોય છે, તેનો બીજા લોકો ઉપભોગ કરતા રહે છે, તે પોતે પોતાના ધનનો ઉપભોગ કરી શકતો નથી. તે તો પોતાના ધનનો રક્ષક (રખેવાળ અથવા ચોકીદાર) માત્ર બની રહે છે. રક્ષા પણ તે પૂરતી રીતે ક્યાં કરી શકે છે ?

એના કુટુંબીઓ, એના સંબંધીઓ, એના મિત્રો અને લાંચિયા અધિકારીઓ અથવા ચોર કે ઠગ વગેરે તેનું ધન ભોગવતા રહે છે અથવા તેની પાસેથી આંચકી લે છે તે તો ફક્ત પાપોનું ફળ જ ભોગવતો રહે છે અને દુઃખ સહન કરે છે. આ તો બરોબર ''આંધળો દળે ને કૂતરા ખાય'' એના જેવું જ છે ! - સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર, ૧/૯/૪

નેનાવા નગરે....

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ - પૂજ્ય આચાર્યશ્રીજી આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની નિશ્રામાં ગુરુ પ્રતિષ્ઠા અને દીક્ષા મહોત્સવ સંપન્ન

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર યુગનાયક ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજયજયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં નેનાવાનગરે ગત તા. ૨૬-૨-૨૦૨૦ના મંગલમય દિવસે વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ પિતામ્બર વિજેતા આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રતિમાઓની શુભમુહૂર્તે અત્યંત ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે વાજતે-ગાજતે પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થઇ હતી. જ્યારે થરાદ નિવાસી સુરત સ્થિત મુમુક્ષુરત્ન શ્રી સેવંતીલાલ નરપતલાલ અદાણીની દીક્ષા વિધિ સંપન્ન થઇ હતી અને પૂજ્યશ્રી દ્વારા નૂતન સાધુ ભગવંતનું નામ મુનિરાજશ્રી સાધ્યરત્ન વિજયજી ઘોષિત કરાયું હતું. આ દીક્ષાની વિશેષતા તો એ હતી કે મુમુક્ષુરત્ન શ્રી સેવંતીભાઇ અદાણીની ભાવના અનુસાર શ્રમણ જીવનને અર્પણ કરવાના ઉપકરણના ચઢાવા બોલાવાયા ન હતા. નૂતન મુનિરાજશ્રી સાધ્યરત્ન વિજયજી મ.સા.ને શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નેનાવા અને નૂતન સાધુ ભગવંતના સંસારી પરિવાર અને સગા-સ્નેહીઓ ધ્વારા તપ-ત્યાગ અને આરાધનાના નિયમો ગ્રહણ કરી શ્રમણ જીવનના ઉપકરણ વહોરાવાયા હતા. મુમુક્ષુરત્ન એ કોઈપણ પ્રકારના વરઘોડા (શોભાયાત્રા) કે કોઈપણ અનુષ્ઠાન કરાવ્યા વગર સાદગીપૂર્વક સંયમ જીવન ગ્રહણ કરી તેમની ભાવનાને સાકાર કરી હતી. મુમુક્ષુરત્નની ભાવનાને બિરદાવવા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નેનાવા અને સંસારી પરિવાર અદાણી નરપતલાલ ટીલચંદભાઇ પરિવારે સંમતિ આપી સહયોગ આપ્યો હતો. નૂતન મુનિરાજશ્રી સાધ્યરત્ન વિજયજી મ.સા.ની ભાવનાની અનુમોદના કરવા સાથે વંદન.

વિશ્વભરમાં કોરોના વાયરસ રોગ પ્રસરી રહ્યો છે ત્યારે પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ તા. ૨૪-૩-૨૦૨૦ના રોજ નિમ્હાહેડાથી શ્રી સંઘ, પરિષદ પરિવાર અને ગુરૂભક્તોને સંદેશો પાઠવ્યો હતો કે, સમુહ ઓળી આરાધના રદ કરવાથી ઘેરે રહી શક્ય હોય તો આયંબિલ કરવું. આયંબિલ તપના પ્રભાવથી વિશ્વમાં અવશ્ય શાંતિ થઇ જશે. જિન આજ્ઞા, ગુરૂ આજ્ઞા અને સરકારના નિયમોનું પાલન નિશ્ચિત કરવું. નજીકના ઉપાશ્રયમાં સાધુ-સાધ્વીજી મ.સા.ની ખબર પૂછી વયાવચ્ચ ભક્તિ કરવી અને શ્રી નવકાર મંત્ર અને શ્રી સિદ્ધચક્રના જાપ કરવા. અવશ્ય વિશ્વમાંથી આ સંકટ દૂર થઇ જશે.

લવાણા નગરે... શ્રી આદિનાથદાદાના જિનાલયની ૭૬મી અને ગુરૂમંદિરની ૮મી વર્ષ ગાંઠની ભવ્ય ઉજવણી

બનાસકાંઠા જિલ્લાની ધન્યધરા લાખણી તાલુકાના લવાણા નગરે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ લવાણાના તત્વાધાનમાં તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તપસ્વી મુનિરાજશ્રી હર્ષવિજયજી મ.સા. તથા સંયમ સ્થવિર યોગિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ... યુગનાયક ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી દિવ્યદષ્ટા શ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવનકારી નિશ્રામાં લવાણા નિવાસી લાભાર્થીભણસાળી શાંતાબેન જયંતિલાલ કકલદાસ પરિવાર દ્વારા સંવત ૨૦૭૬ના ફાગણ વદ ૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૩-૩-૨૦૨૦ના રોજ શ્રી આદિનાથ દાદાના જિનાલયની ૭૬મી તથા તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના મંદિરની ૮મી વર્ષગાંઠની ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી. આ પ્રસંગે અઢાર અભિષેક, સત્તરભેદી પૂજા, શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ અષ્ટપ્રકારી પૂજા, ભવ્ય અને દિવ્ય અંગરચના તથા રાત્રિભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. આ પ્રસંગના સંપૂર્ણ લાભાર્થી ભણસાળી શાંતાબેન જયંતિલાલ કકલદાસ પરિવાર દ્વારા ત્રણેય ટાઈમના સંઘ જમણની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. આ પ્રસંગને દીપાવવા લવાણા, ડીસા, મુંબઈ, સુરત, અમદાવાદ વિગેરે સ્થળોએથી સગા-સ્નેહીજનો મોટી સંખ્યામાં ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રસંગ નિમિત્તે સ્કુલમાં કપડા, લાડુ તથા બિસ્કીટનું વિતરણ કરાયું હતું અને જૈનેતરોને બુંદીના લાડુની પ્રભાવના કરી મોઢા મીઠા કરાવ્યા હતા. લવાણા તથા રાંટીલાની ગૌશાળામાં ગાયોને ગોળ ખવરાવાયો હતો.

ઉલ્લેખનીય છે કે, જિનાલયની કાયમી ધજાનો લાભ મોરખીયા મફતલાલ રીખવચંદભાઈ પરિવારે લીધેલો છે. જ્યારે ગુરુ મંદિરની કાયમી ધજાનો લાભ મોરખીયા જેસીંગભાઈ કલ્યાણભાઈ પરિવારે લીધેલો છે.

સમાજમાં ઉજવાઇ રહેલા ખર્ચાળ લગ્નોત્સવમાં સુધારો લાવવા માટે આજના સમયની માંગ છે અને તાતી જરુર છે

વહેતા સમયના વહેણ સાથે જગત પર અનેક અવનવા પ્રસંગો ઉજવાતા હોય છે. આજથી ત્રણ દાયકા પૂર્વે થરાદ ખાતે ઉજવાતા લગ્નોત્સવમાં ઘરના ઘેર સુકનવંતો ચંદરવો બંધાતો હતો. સગા-સ્નેહીજનોની ઉપસ્થિતિમાં માંડવી બંધાતી હતી. આંગણામાં માંડવો રોપાતો હતો. સાત-સાત દિવસ અગાઉથી બેન-દિકરી-ભાણેજોને પ્રભાતિયાંથી લગ્નોત્સવમાં બોલાવી લેવામાં આવતાં ! માંડવી બાંધવા ગામમાં આમંત્રણ અપાતું અને હર્ષભેર માંડવી બંધાવવા ગામના સ્નેહીજનો આવી જતાં. તેમની સરભરા માટે ચ્હાના તપેલા ઉકાળવામાં આવતાં. ઉનાળો હોય તો શરબત આપવામાં આવતું. આજ રીતે કંદોઇ બેસાડવાનો હોય ત્યારે ગામમાં આમંત્રણ અપાતું અને લાડવા બનાવવા સુણ ભગાવવા મદદે સ્નેહીજનો લાગી જતા ! રાત્રે ઘરની ડેલીએ ઢોલી ઢોલ ધ્રબકાવી જતા અને તેની સાથે કલાપારંગત મહિલા ગુણીયો લઇ ઠમકી લેતી ત્યારે .. આ ઠમકીને જોઇ રહેલા વ્યક્તિઓના મનના મોરલા નાચવા મંડી જતા ! ત્યારબાદ ઓટલા પર ધોળ ગવાતા ત્યારે લાગતું હતું કે, લગ્નસરાની ખરી મોસમ ખીલી ઉઠી છે ! ધોળ ગાવા આવનારને પતાસા અગર તે સમયે જેનું ચલણ હોય તે વસ્તુની ભેટ અપાતી. સાત-સાત દિવસ સુધી વરરાજા અને લાડીને પીઠી કરાતી અને હાકોટા બંધ શ્રી નેમિનાથ ભગવાનનો શ્લોકો બોલાતો ! એક માસ અગાઉથી વરરાજા અને લાડી સગા-સ્નેહીઓને ત્યાં વાયણા ખાવા જતાં ! થરાદ સિવાયના કોઇપણ શહેરમાં વસતો વરરાજા લગ્ન કરવા થરાદ જાય ત્યારે સ્ટેશન પર મિત્રવર્તુળ મુકવા જતું. ટ્રેઇનની બારી પર ફુલોનો હાર લગાવાતો અને મિત્રવર્તુળને વરરાજા તરફથી ફેન્ટા અને કોકાકોલા પીવડાવવામાં આવતી. લગ્નોત્સવના બે-ત્રણ દિવસ પૂર્વેથી સખાઇયા (અણવર) અને મિત્રો રાત્રિ બેઠકમાં ઉપસ્થિત રહી આનંદ-મસ્તી કરતા અને વરરાજા તરફથી પાંચસો પંચાવન, ડનીલ, મોર, મેક્રોપોલો જેવી સિગારેટો અપાતી પાન-અત્તરની શીશી, હાથ રૂમાલ વિગેરેથી સરભરા કરાતી. લગ્નોત્સવના દિવસે શુદ્ધ ઘીની લાપસી માટે શેરીમાં મોટા કડાયા ચડતાં ! સવારે ૧૦ કલાકના સુમારે સાજન-માજન સાથે વાજતે-ગાજતે સરસાપણું ચડતું અને મહિલાઓ દ્વારા હરખભેર ધોળ ગવાતા અને સરસાપણા (ફુલેકુ)નું પ્રસ્થાન થતું પ્રથમ જે શેરીમાંથી સરસાપણુ ચડ્યું હોય ત્યાંના દેરાસરમાં પ્રભુજીના દર્શન-વંદન

કરી. શ્રીફળ ધરાવી આશીર્વાદ લેવાતા. ત્યારબાદ શ્રી કુળદેવી માતાજી, ગુરુમંદિર, હનુમાનજી મંદિર વિગેરે મંદિરોમાં શ્રીફળ ધરાવી, થરાદનગરના ગામદેવી શ્રી નાણદેવી (આશાપુરી) માતાજીના મંદિરે જઈ સેવીયા અને ટોપરાનો જાર કરાતો! ત્યાંથી સાજન-માજન સાથે વરરાજાનું સરસાપણું (લાડી) વેવાઈની શેરીએ પહોંચી જતું ! વરરાજાની આજુબાજુ કાકા-મામા હાથમાં ઢાલ લઈને વેવાઈના ઘરના દરવાજે જઈ બાંધેલા આસોપાલવના તોરણનું એક પાન વરરાજા તોડે એટલે રંગોથી ભરેલી ડોલોનો લાડી પક્ષના વ્યક્તિઓ દ્વારા રીતસર આક્રમક હુમલો થતો અને ઉત્સાહભેર પરસ્પર વેવાઈઓ રંગેરંગે રંગાઈ જતા અને ઉમળકાભેર ભેટી પડતા ! ત્યારબાદ સાસુના ટીલાવ્યા બાદ વરરાજા નક્કી કરાયેલ ઉતારા પર જઈ મિત્રો સાથે ગેલગોષ્ઠી કરી એક જ થાળમાં ભોજન કરતા ! રાત્રે લગ્નનો વરઘોડો ચડતો. માતા-પિતા, વડીલોના આશીર્વાદ લઈ ઢોલના ધબકારે ધોળની રમઝટ સાથે વરરાજાનો વરઘોડો જ્યાં જીવનભર સાથે રહેવાના કોલ લેવાના છે તે જીવનસંગીનીના પિતાના ઘેર પહોંચતો ત્યાં થરાદના નજીકના વિસ્તારમાં જેના ઘેર પાટ હોય તેમને ત્યાંથી બેસવા માટેના પાટ લવાતા અને તેની (સ્ટેજ) બેઠક બનાવાતી અને સ્નેહીઓના ઘેરઘેરથી દેગડાં-ગુણીયા લાવી ચારેબાજુ ગોઠવી ચોરીની રચના કરાતી ! લગ્નોત્સવમાં જમણમાં લાડવા-ફેણી સેવ, શાક-દાળભાત, ચુરમાલાડુ, માલપુડા, ભજીયા જેવો પૌષ્ટિક ખોરાક પીરસાતો. જેમના ઘેર લગ્ન હોય તે ઘરના ધણી દ્વારા મોંઘેરા મહેમાનોની ઉમંગી સરભરાથી આત્મીય પ્રસંગ દીપી ઉઠતો ! ઉક્ત પ્રસંગો જેમણે જોયા છે અને અનુભવ્યા છે તે વ્યક્તિનો અંતરઆત્મા ચોક્કસપણે કહેતો હશે કે શું આનંદ હતો?

વર્તમાન સમયમાં લાખો-કરોડો રૂપિયા ખર્ચીને પણ હર્ષાવિંત આનંદ નથી મળી શકતો. ઓછા ખર્ચે બિલકુલ ચિંતા વિના થરાદનગરના આંગણે પૂર્વે યોજાતા લગ્નોત્સવોની વાસ્તવિક્તા આજની નવી પેઢીને કાલ્પનિક જ લાગવાની. કારણ કે ભૌતિકવાદની ભયંકર ભૂતાવળે અને પશ્ચિમી વાયરાએ ચોતરફથી એવો ભયંકર ભરડો લીધો છે કે આપણા પૂર્વજોએ સિંચેલા સંસ્કારોનું નિકંદન નીકળી રહ્યું છે. ત્રણ દાયકા પૂર્વે યોજાતા લગ્નોત્સવના સમયને ફરી પરત નથી લાવી શકવાના પણ બેફામ ફાજલ થઈ રહેલા ખર્ચને બચાવવાનો પ્રયાસ તો કરી શકાય ને ? હા... સમાજના શુભચિંતકોના અથાક પ્રયત્નોથી થરાદ જૈન સમાજમાં એક અદકેરી હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી અને જનમાનસ ઉપર ઉંડી ઘેરી ચિરસ્મરણીય આલ્હાદક છાપ જન્માવી ગઈ હતી. એ યાદગાર દિવસ હતો. સંવત ૨૦૫૫ના માગસર વદ ૯ ને શનિવાર તા. ૧૨-૧૨-૧૯૯૮ના રોજ અમદાવાદના આંગણે યોજાયો હતો. શ્રી થરાદ જૈન સમાજનો પ્રથમ સમૂહ લગ્નોત્સવ ! પ્રથમ સમૂહલગ્નને મળેલ પ્રચંડ સફળતાના બીજમાંથી ફુટેલા અંકુરોને સિંચન કરી ઉછેરના સુકાર્યને વેગ આપવા તરવરી આવેલ લાગણી અને શક્તિ શ્રી થરાદ જૈન સમાજ સમુહ લગ્ન આયોજન સમિતિ, શુભેચ્છકો,

સહશુભેચ્છકોએ એકી સાથે ૭૧ યુગલોની દુઆ અને આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા. અને લગભગ આઠથી દસ વરસ સુધી સમુહ લગ્ન સુખરૂપ સંપન્ન થયા હતા. જાણવા મળવા મુજબ સમૂહલગ્નમાં લગ્નગ્રંથિથી જોડાયેલ જોડી ખંડિત નથી થઈ. આ સંઘ બળની પુણ્યાઇનો સચોટ પુરાવો છે. પરંતુ દુઃખ એ વાતનું છે કે સમાજની વ્યક્તિઓને આર્થિક રીતે પગભર કરી સમાજને તંદુરસ્ત બનાવવા જે ઉદરતા બતાવી અમદાવાદ-આણંદ ખાતે ઘરના ઘરનું સપનું સાકાર કરી આપનાર દાતા પરિવારો, શિક્ષણ માટે થરાદ એજ્યુકેશન ટ્રસ્ટ, શ્રી રાજેન્દ્ર નવયુવક મંડળ, પરિષદ દ્વારા થતી ઉત્કૃષ્ટ સમાજ સેવા, ક્લીનીક, ધર્મ ક્ષેત્રે જિનાલય, ઉપાશ્રયનું નિર્માણ, સમાજની વ્યક્તિઓની સગવડ માટે ધર્મશાળા, ભોજનશાળાના નિર્માણ તથા વિવિધ પરોપકારી કાર્યોમાં અમૂલ્ય યોગદાન આપવાવાળા ઉદાર સખાવતી ભાગ્યશાળી પરિવારોની થરાદ જૈન સમાજમાં કમી નથી. પણ તેમની ઉમળકા સાથેની સેવા ભાવનાને મંદ પાડવાની ભૂંડી ભૂમિકા ભજવવાવાળો એક એવો વર્ગ છે કે સમાજના શુભચિંતકો દ્વારા થતી સેવાનો લાભ લેનારને ગરીબ અને બાપડા કહી અફવા ફેલાવી સમાજની પ્રગતિને ખોરંભે પાડવાનું મહાઘોર પાપનું પોટલું બાંધી રહ્યો છે. ભાઇ-ભાઈની મદદ કરે અને ભાઈ તેની મદદ લે તેમાં ખોટું શું છે ? સમાજની પ્રગતિમાં રોડા નાખી ભૂંડી ભૂમિકા ભજવનાર આ વર્ગે એટલું સમજી લેવું જોઈએ કે થરાદની શેરીઓમાં શૌર્યના ધાવણ ધાવી ઉછરેલ વાણીયાના દિકરાની ખુમારી આજે પણ છવાયેલી જ છે. થરાદ જૈન સમાજની ખુમારી ધરાવતી વ્યક્તિ ક્યારેય અન્ય સમાજ દ્વારા થતી સેવાનો લાભ લેવા જોડાઈ નથી. તેજ તેની ખુમારી છે. થરાદ જૈન સમાજના ખમીરવંતા ઉદાર સખાવતી દાતા પરિવારો દ્વારા અપાતી સહાય ને દાતા પરિવારના સુકૃતને ચિરસ્મરણીય બનાવવામાં પણ આજ વ્યક્તિઓની ખુમારી છે. આર્થિક પરિસ્થિતિ કમજોર હોવાથી તે ગરીબડો કે બાપડો બની જતો નથી. આવા ઈર્ષાળુ વર્ગે તે પણ સમજવું જોઈએ કે થરાદને નમસ્કાર કરી રોજી-રોટી માટે બહારગામ આવેલ વ્યક્તિ રૂપિયાની કોથળી લઈને આવ્યો હતો ? ત્યારે આપણે પણ આર્થિક કટોકટી ભોગવતા હતા પણ ગરીબડા કે બાપડા ન હતા. સમાજની પ્રગતિમાં રોડા નાખી ભૂંડી ભૂમિકા ભજવતાએ વર્ગને એટલું જ કહેવું છે કે આજે જેને તમે ગરીબડા અને બાપડા કહી રહ્યા છો તેમાંથી એવી પ્રતિભાઓ પ્રગટ થશે કે સમાજની સેવાનો લાભ લીધો છે તેના કરતાં અમૂલ્ય સમાજ સેવા કરી સમાજને અદકેરું ગૌરવ અપાવશે સંસારનો નિયમ છે **પરિવર્તન...**

આપણા ઘરમાં લગ્નોત્સવ યોજાવાનો હોય તો ખુશી કોને ના હોય ? પરંતુ વર્તમાન સમયમાં લગ્નોત્સવમાં થઈ રહેલ બેફામ ફાજલ ખર્ચને બંધ કરી અમુક અનિષ્ટ પ્રવૃત્તિ નેસ્તનાબુદ કરી સમાજમાં આર્થિક સ્થિતિનો સામનો કરી રહેલ

પરિવારોની પ્રગતિ માટે લગ્નના ફાજલ ખર્ચમાંથી બચત કરી તેનો સદ્‌ઉપયોગ અવિસ્મરણીય બની રહેશે અને તે પરિવારોની દુઆના પાયાથી ચણાયેલ ઈમારત હજારો વર્ષ સુધી અડીખમ ઉભી રહી સફળતાના શિખરો સર કરતી રહેશે. જોકે ત્રણ દાયકા પૂર્વે મિત્રોને અપાતી સિગારેટ અને વરઘોડામાં ફોડાતા દારુખાના જેવી બદી સદંતર બંધ થઈ ગઈ છે તે અનુમોદનીય છે. આત્મીયતાથી છલકાતા થરાદ જૈન સમાજના માલેતુજાર, મધ્યમ અને આર્થિક કમજોર વ્યક્તિઓમાં બનાસની કોતરોને ઉલેચવાનું સામર્થ્ય ધરાવતી તાકાત પડેલી છે. માટે થરાદ જૈન સમાજની પ્રગતિ માટે લગ્નોત્સવ સહિત કોઈપણ આયોજનમાં થતા બેફામ ફાજલ ખર્ચ પર પાબંધી લગાવવા કટિબદ્ધ બનીએ.. આપણા વડીલ પૂર્વજોએ આપેલા સંસ્કારની સાચવણી માટે થરાદનગરી વિજયમાળા લઈને જ ઉભી છે. આપણે ડગલું ભરીએ એટલી જ વાર છે. આપણે આપણા વડવાઓની જેમ કદાચ અમાસની મેઘલી રાતે ચાંદો ન બતાવી શકીએ પણ એ ચાંદો ડૂબી ન જાય એ માટે થોડાક સક્રિય તો જરૂર બની જ શકીએ. તો ચાલો પેલો ચાંદો અસ્તાચલના ઓવારે ગરકી ન જાય એ પહેલાં જ આપણે એને ઝાલી લઈએ અને સમાજની દરેક વ્યક્તિના હાથ મજબૂત કરીએ અને થરાદનો સમગ્ર વર્ગ આર્થિક રીતે તંદુરસ્ત બને તેવા સંકલ્પ સાથે આપણે પણ સુકૃત કાર્યમાં જોડાઈ જઈએ.

કંકુ-ચોખા, કંકોતરી, કંકાવટી, ખારેક - પતાસા, ચંદરવો, બાજઠ, સોપારી, હાથગરણુ, ચાંદલો, તોરણ, માંડવો વિગેરે લગ્નોત્સવની સુકનવંતી સામગ્રી છે.

-: લગ્નોત્સવમાં કરવા જેવી બચત :-

(૧) કંકુ છાંટીને લખજો કંકોતરી... લગ્નોત્સવ નિમિત્તે કંકોતરી અવશ્ય છપાવવી જોઈએ પણ સાદી ને સિમ્પલ. કારણ કે અમને સમાજની મોટી સંખ્યામાં વ્યક્તિઓ દ્વારા જાણવા મળ્યું છે કે, રૂા. ૨૫ની હોય કે રૂા. ૫૦૦ની કંકોતરી હોય માત્ર તેમાંથી લગ્ન કે રીસેપ્શનની તારીખ અને સરનામું જોઈ પસ્તીમાં જતી હોય છે માટે જેટલો થાય તેટલો કંકોતરી ખર્ચમાં કાપ ન મૂકી શકાય ?

(૨) છેલ્લા દસકાથી કંકોતરી સાથે હોંશથી કોઈપણ વસ્તુની ભેટ અપાય છે જે ઘણી જ સારી વાત કહેવાય. પણ હમણાં હમણાં ચાંદીના સિક્કાની ભેટ અપાય છે. ૧૦૦ ટચ ચાંદીના રૂપિયા ચૂકવી ૭૦ ટચના રૂપિયા ઉપજી શકતા નથી. સોની કમાય તેનાં કરતાં રોકડ રૂપિયાનું કવર ન આપી શકાય ?

સિઝન પ્રમાણે અડદીયાપાક, મેથીપાક, ખજૂરપાક, મેવો વિગેરે ખાવાના ઉપયોગમાં આવી શકાય તે ન આપી શકાય ? સહુથી શ્રેષ્ઠ થરાદ નગરની સ્થાપના સમયથી પ્રતિષ્ઠાભરી શાખ જમાવતા મોતિયા લાડવા અને મોતિયા લાડવાની શાખમાં અભિવૃદ્ધિ કરતી ફેણી ન આપી શકાય ?

(૩) એક વ્યક્તિ રૂા. ૨૦૦નું નથી ખાઇ શકતી તે ડીસના ૫૦૦ રૂપિયાથી માંડી ૨૫૦૦ ચૂકવાય છે. તે કેટરર્સને ધીકતી કમાણી કરી આપવાનો ખોટો રસ્તો નથી ? તેનો સાદો વિકલ્પ છે (કેટરર્સ) જોઇતા રસોઇયા-પીરસણીયા અને કામવાળાને રોજની મજુરીથી નક્કી કરી વાનગીઓનું અને જમનાર વ્યક્તિઓનું લીસ્ટ આપી તેમના કહેવા મુજબ શુદ્ધ ઘી અને કરિયાણું લાવી રોજના પગારથી રાખી બે માણસોની નજર સામે લીસ્ટ પ્રમાણેની વાનગીઓ ના બની શકે... ? ૫૦૦ની ડીસ ૨૫૦માં અને ૨૫૦૦ની ડીસ ૧૨૫૦માં ન પડે તો લખનારને બે તમાચા મારી જવાની છૂટ.

(૪) શક્ય હોય તો પાર્ટીપ્લોટ નજીકના વિસ્તારમાં રાખવો જેથી ગાડી, બાઇક, રીક્ષા કે સ્કૂટરના ડીઝલ-પેટ્રોલના બચાવ સાથે સાથે આવવા-જવાની હાડમારી ઓછી. છેલ્લા કેટલાય સમયથી સમાજમાં યોજાતા લગ્નોત્સવમાં ચાંદલો લેવામાં આવતો નથી. લાખો-કરોડોના ખર્ચે યોજાતા લગ્નોત્સવમાં લાખ બે લાખ ચાંદલો આવે કે ન આવે તેની કોઇ કિંમત નથી તે સમજી શકાય તેવી વાત છે પણ આપણા વડીલોએ દીર્ઘદષ્ટિ વાપરી (હાથગરણા) ચાંદલાની વ્યવસ્થા કરી હતી. કારણ એક કે તે સમયમાં યોજાતા લગ્નોત્સવમાં પ્રથમથી તે રકમ લગ્નોત્સવમાં કામ લાગે તે તમામ માટે પરસ્પર વ્યવસ્થા હતી અને બીજા કારણમાં કહેવતમાં છે કે, 'લક્ષ્મી ચાંદલો કરવા આવી ત્યારે ભાઇ મોઢું ધોવા ગયો' જેથી લક્ષ્મી સ્વરુપ ચાંદલો અવશ્ય લેવો જોઇએ. ભલે બંધારણ કરીને લો એક પુણ્યશાળી વ્યક્તિનો સુકનવંતો ચાંદલો આવી જાય તો છો તેના કરતાં પણ સમાજની પ્રગતિમાં ઉપયોગી નીવડી શકો તેટલા માલેતુજાર બનવાની શક્તિ લક્ષ્મીરુપી ચાંદલામાં છે તેની અવગણના કરાય જ નહીં. ત્રીજુ કારણ છે કે આમંત્રિત મહેમાન સ્નેહીના રૂડા પ્રસંગમાં શુભેચ્છા સાથે કંઇક આપી આવ્યાનો સંતોષ અનુભવે.

(૫) જે સદસ્યનું ઘરનું ઘર થરાદમાં હોય તેમને તો બંને વેવાઇની સંમતિથી થરાદમાં જ લગ્નોત્સવ યોજવા જોઇએ. વર્તમાન સમયમાં પાણી-દુધ, રસોઇયા, કરિયાણુ-બેન્ડ અને મહેમાનોને ઉતરવા માટે બહુ સંખ્યામાં ધર્મશાળાની વ્યવસ્થા છે.

(૬) વર્તમાન સમયમાં મોટી સમસ્યા એ થઇ છે કે બહેનને ત્યાં મુંબઇ ખાતે તા. ૮-૫-૨૦૨૦ના રોજ ભાણેજના લગ્નોત્સવ યોજાવાના છે અને એજ દિવસે થરાદ ખાતે સાળાને ત્યાં લગ્નોત્સવ યોજાવાનો છે. પતિ પ્રથમ બહેનને ત્યાં જ જવાનું કહેશે અને પત્નિ જીદ કરીને બેસે કે મારા ભાઇના ઘરે લગ્નોત્સવમાં જવું છે. છેલ્લે જે નક્કી થાય તે ખરું પણ કજીયાનું ઘર તો ખરું જ ને ? તે માટે સમૂહલગ્ન શક્ય ન હોય તો થરાદ જૈન સંઘના મુહૂર્ત મુજબ એક તારીખ અને એક સ્થળે લગ્નોત્સવ યોજાય તો પરિવારમાં એક જ વ્યક્તિ હોય તેની ઘણી સમસ્યા દૂર થઇ જાય. જો કે અત્યારે

લગ્નોત્સવમાં ન આવે તેની નોંધ લેવાય છે અને જાય છે તેનો ભાવ પુછાતો નથી. ઉક્ત સમસ્યાનું સમાધાન કરવું અત્યંત જરુરી છે. નહીંતર આવવા-જવાના વહેવાર ઘણા ઓછા થઇ જશે.

(૭) થરાદ જૈન સમાજના મધ્યમ વર્ગને આગ્રહભરી વિનંતી છે કે લગ્નોત્સવમાં દેખાદેખીથી ગજા બહારનો ખર્ચ કરી આર્થિક સમસ્યાને નોંતરતા નહીં. કરકસર સાથે ઓછા ખર્ચે લગ્નોત્સવ કરવાથી ક્યારેય કોઈની ઈજ્જત ગઈ નથી અને કરોડો રૂપિયાનો ખર્ચ કરનારને ગોલ્ડ મેડલ મળ્યો નથી. ધર્મનિષ્ઠતા, માનવતા-સમાજસેવા, જીવદયા, સાધર્મિક્તા, કરુણા, સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની વૈયાવચ્ચ વિગેરે સુકાર્યો કરી રહ્યા છે તે વ્યક્તિને ગોલ્ડ મેડલ ભલે ન મળે પણ પેઢીઓ સુધી તેમના કાર્યો અવિસ્મરણીય બની જાય છે. સમાજની દરેક દરેક વ્યક્તિએ ખુમારી ભર્યુ જીવન જીવવું જોઈએ. અભિમાન અને સ્વમાનમાં ઘણો મોટો ફરક છે, અભિમાન ક્યારેય કરશો નહીં. સ્વમાન ક્યારેય ગુમાવશો નહીં. શાસ્ત્રકારોએ કહ્યું છે કે...

''આવ નહિ આદર નહિ, નહિ નૈનોમાં નેહ, તે ઘર કદીના જઇએ, ભલે કંચન વરસે મેહ'' અર્થ છે, આવકાર નહિ, આદર નહિ, નહિ આંખોમાં સ્નેહ. તેના ઘેર ક્યારેય જવું નહિ ભલે સોનાનો વરસતો હોય વરસાદ.

(૮) લગ્નોત્સવમાં પ્રવેશેલી અનિષ્ટ પ્રવૃત્તિને નેસ્તનાબૂદ કરવી જરુરી

પશ્ચિમી અગર ભારતની ઈતર સભ્યતાનો વિપરીત પ્રભાવ સંપૂર્ણ જૈન સમાજના રીત-રિવાજો પર થઇ રહ્યો છે. હમણાં-હમણાં નવી કુરીતિઓ પોતાનો કબ્જો જમાવી રહી છે. એનો વિરોધ સમાજના કેટલાય સ્તરોથી થઈ રહ્યો છે, પરંતુ લાગી રહ્યું છે કે અનિષ્ટ પ્રવૃત્તિ વાયરસ રોગ છે તે ફેલાતો જવા જઇ રહ્યો છે. જોવામાં આવે તો સોશ્યલ મીડિયાએ સમાજમાં કેટલીય અશ્લિલતાને જન્મ આપી દીધો છે. લગ્નોત્સવના કાર્યક્રમોમાં પ્રદર્શન માટે પ્રિવેડીંગના ફોટાની ગોઠવણી કરવી તેને શાલિનતા નથી કહી શકાતી. જે દંપતિને આશીર્વાદ આપવા મહેમાન પહોંચતા હોય છે ત્યાં એકબીજાને બાહુપાશમાં જકડાયેલા દંપતિના ફોટાની સજાવટ કરવામાં આવે છે. લગ્ન પહેલાં વર-કન્યા પરસ્પર એકબીજાને સમજવા-દેખવા, એકબીજાની આદતોના પરિચય માટે અવસરનો ઉપયોગ કરે એ તો ઠીક છે પણ એ બહાનાના નામ પર ફોટોગ્રાફરની સાથે પર્યટન કેન્દ્રો પર

જઈ ત્યાં ફોટોગ્રાફરના નિર્દેશનમાં વિભિન્ન મુદ્રાઓમાં ફોટા પડાવવાની અનિષ્ટ પ્રવૃત્તિ છે અને પૂર્ણ રીતે ભૂંડુ આચરણ છે.

પ્રિવેડીંગ ફોટોગ્રાફીને સમાજ સ્તરે ના પસંદ કરાયું છે. તેમજ કેટલાય સ્થાનો પર સામાજિક સંગઠનોએ એના પર પાબંધી પણ લગાવી છે. આ સાથે-સાથે મહિલા સંગીતનું અપશુકનીયાળ પ્રદર્શન પણ થવા લાગ્યું છે એના માટે ફિલ્મી નૃત્ય અને સંગીત શીખવા માટે કોરીયોગ્રાફરને ત્યાં એક-બે મહિના પહેલેથી જ મહિલાઓ ફી આપી જવા લાગી છે. ત્યાં બંધ રૂમમાં કોરીયોગ્રાફર એક્શન શિખવાડવાના નામ પર કમરમાં હાથ નાખી નાચવા-ગાવાનું પ્રશિક્ષણ આપે છે. આ અનિષ્ટ પ્રવૃતિ પણ સમાજ માટે આપત્તિજનક છે. આવી કુપ્રથાઓનું ચલણ વધી રહ્યું છે. અને સમાજમાં વિકૃત્તિઓ વધી રહી છે. સમાચાર પત્રોમાં છપાયું હતું કે, મુંબઈમાં મોટા ઘરોની ત્રણ પરણેતર મહિલાઓ કોરીયોગ્રાફર સાથે ભાગી ગઈ છે. તે જૈન સમાજની હતી એવું નથી કહી શકતો કે આ રીતે અમારું જીવન ખરાબીઓનું ઘર બનતું જઈ રહ્યું છે. એનાથી સ્પષ્ટ છે કે કોઈપણ વાયરસ રોગ ક્યારેય પણ આવી શકે છે. એટલા માટે સમગ્ર જૈન સમાજે પોતાના સ્થાનિય સ્તર પર નિર્ણય કરી પ્રિવેડીંગ તથા કોરીયોગ્રાફર પર પાબંધી લગાવવી જોઈએ અને તેનું પાલન કરાવવું જોઈએ. જે આજના સમયની માંગ છે અને તાતી જરુર છે.

(૯) અતિથિને દેવમાંથી ભિખારી બનાવી દેતી બુફે પ્રથાનો સમાજે બહિષ્કાર કરવો જોઇએ

બુફે ડીનરનો જન્મ મૂળભૂત રીતે થયો હતો. અન્નનો બગાડ અટકે તેવા શુદ્ધ હેતુથી સાથે-સાથે બચતનો હેતુ પણ હતો. બુફેની પ્રથા નવી શરૂ થઈ ત્યારે રસોઈયા પાસે ખર્ચનો અંદાજ માંગવામાં આવે ત્યારે જો પરંપરાગત ભોજન માટે થાળી દીઠ ૧૦૦ રૂપિયાનો અંદાજ આપે તો બુફે ભોજનનો ૬૦ રૂપિયાનો જ આવતો.

એ પછી આજે આપણે બુફે જમણને પ્રતિષ્ઠાનો દરજ્જો આપી દીધો છે. પણ તેમાં થોડા અનિષ્ટો ઉમેરાઇ ગયા. બુફેનું આયોજન કરનાર આયોજક એક માણસને આરામથી ઉભા રહી જમવા માટે કેટલા ચોરસ ફુટ જગ્યા જોઈએ તેનો હિસાબ ભાગ્યે જ ગણતો હોય છે. એક કાઉન્ટર પર ગીર્દી કે ધક્કામુક્કી કર્યા વિના કેટલા મહેમાનો કેટલી વાનગીઓ લઈ શકે તેનો વિચાર પણ તેઓ કરતા નથી. જે સાઇઝની ડીશો તેઓ આપે છે, તેમાં કઇ સાઇઝની વાનગીઓ એક સાથે કેટલી સમાઇ શકે તેનું ગણિત પણ તેઓ ગણતા નથી. ભોજન માટે આવેલા વૃદ્ધો, બાળકો, સ્ત્રીઓને ઉભા ઉભા ખાવાનું

નહીં ફાવે તો તેઓ કેવી રીતે જમી શકે તેની પણ ચિંતા તેઓ કરતા નથી. જો કે હમણાં-હમણાં ચારેબાજુ ગોઠવાયેલા કાઉન્ટર વચ્ચે ગોળ ટેબલ અને ખુરશીઓ ગોઠવવામાં આવે છે જે લગભગ તંદુરસ્ત યુવાન-યુવતીઓ જ રીઝર્વ બુકીંગની માફક ગોઠવાઈ જાય છે અને બે-બે કલાક ચોંટી જાય છે. પૈસે ટકે સુખી પરિવારો વિશાળ પાર્ટીપ્લોટમાં આયોજન કરે છે. અને વેઈટરની સુવિધા પણ આપતા હોય છે છતાંય કાઉન્ટર ઉપર તો લાઈનો જ લાગેલી હોય છે.

બુફે જમણમાં આર્ય સંસ્કૃતિના આરોગ્ય શાસ્ત્રના અને ધર્મના કેટલા નિયમોનો ભંગ થાય છે તેનો વિચાર કરાય છે ખરો ? આર્ય સંસ્કૃતિ એમ કહે છે કે ઉભા ઉભા જમાય નહીં. ઉભા ઉભા ખાય તેને પશુની ઉપમા આપવામાં આવી છે. આરોગ્ય શાસ્ત્ર એમ કહે છે કે, આહાર ગ્રહણ કરવા માટેનું શ્રેષ્ઠ આસન પલાંઠી વાળીને બેસવું તે સુખાસન છે. ટેબલ-ખુરશી ઉપર બેસીને જમવાથીપણ ભોજનનું બરાબર પાચન થતું નથી. આપણા રૂડાં પ્રસંગમાં આપણે જેને આમંત્રણ આપીને બોલાવ્યા છે. જે આપણા આંગણે આવેલા મહેમાનને ઉભા ઉભા જમવાની ફરજ પાડવી એ તેની અવહેલના નથી ? આવી ભૂલ આયોજક કરે તેને પણ પાછો શિષ્ટતાનો દરજ્જો મળે એ તો બુફેના રિવાજની બલિહારી છે. આ રિવાજ કેમ કોઈને ખૂંચતો નથી ? શા માટે સમાજના આગેવાનો તેનો વિરોધ કરતા નથી ? આયુર્વેદના નિયમ એમ કહે છે કે ભોજન કરતાં કરતાં વચ્ચે પાણી પીવું જોઈએ. એમ કરવામાં આવે તો ભોજન ખુબ જ આસાનીથી પચી જાય છે. બુફેમાં તો આ રીતે પાણી પીવાની સગવડ જ નથી હોતી એટલે ભોજન બરાબર પચતું નથી. વળી આયુર્વેદમાં કહ્યું છે કે ભોજનના અંતે પાણી પીવાય જ નહીં, તેને ઝેર ગણવામાં આવે છે. બુફેમાં પ્રશ્ન આવે છે ભોજન કરતાં કરતાં પણ ભિખારી બનવાનો. બિચારો ભિખારી પણ એટલો નસીબદાર હોય છે કે, ભોજનની બધી જ વાનગીઓ એકઠી કરી તે એક ઠેકાણે શાંતિથી બેસી ભોજન કરી શકે છે. બુફેનું આમંત્રણ સ્વીકારી ભોજન કરવા જતાં મહેમાનો આટલા નસીબદાર પણ નથી હોતા. એક જ વખત પેટનો ખાડો પુરવા માટે વારંવાર તેમને લાઈનમાં ઉભા રહેવું પડે છે. અહીં અનેક કરોડપતિઓ પણ ડીશ લઈને ભિખારીની જેમ પોતાના વારાની રાહ જોતા લાઈનમાં ઉભા રહે છે. કોઈપણ જગ્યાએ યોજાતા ભોજન સમારંભમાં બુફેના દુષણ સામે સહુએ જાગ્રત અને સંગઠિત બની અવાજ ઉઠાવવો જોઈએ. મહેમાનોએ આયોજકને ફોન કરી જણાવી દેવું જોઈએ કે બુફે જમણ દ્વારા અમને બોલાવીને ભિખારીની જેમ અમારું અપમાન કરવા માગતા હો તો અમે એવો ભોજન સમારંભમાં આવીશું નહીં. જ્યારે સમાજના આગેવાનો બુફેના આયોજકોને આવું કહેવાની નૈતિક હિંમત દાખવશે ત્યારે જ આ અનિષ્ટ પ્રથાના પાશમાંથી સત્કારની આપણી ભવ્ય ભાવના મુક્ત થઈ શકશે.

ન અન્યાયસેવનમ્ શ્રી કુક્ષિ રત્ન

વિશ્વની સર્વપ્રસિદ્ધ દેવીઓમાં બે નામ અગ્રગણ્ય છે. સરસ્વતી અને લક્ષ્મી... એમાંય ભૌતિક જગતમાં આદ્ય સ્થાન અપાયું છે લક્ષ્મીદેવીને...

લક્ષ્મીજીને માનનારા-પૂજનારા તો ઘણા હોય છે પણ એની ઉપાસના કરનારા બહુ ઓછા હોય છે.

આજે આપણે જાણીએ એક એવા વ્યક્તિને કે જે લક્ષ્મીની સાચી ઉપાસના કરે છે. જે સામેથી આવેલી લક્ષ્મીનો ત્યાગ કરે છે. જે સંપત્તિ પ્રત્યે સંપૂર્ણ સભાન છે. જે ધનની સાથે છે. સમીપ છે પણ ધનની મૂર્ચ્છાથી દૂર છે...

માલવામાં જન્મ થયો. કુક્ષિમાં મોટા થયા. માતા-પિતા, દાદા-દાદી વિગેરે વડીલોના સાંનિધ્યથી સંસ્કારી બન્યા. મેધાસંપન્ન હોવાથી એલ.એલ.બી.નો અભ્યાસ કરી વકીલ બન્યા.

હવે જોઈએ એમના જીવનની એક ઘટના.

''બેટા ! યે લે.'' ''નહીં...'' ''અરે ! યે લે લે...'' ''નહીં... મુઝે નહીં લેના.'' ''દેખ તો સહી, યે ક્યાં હૈ ?''

''નહીં, મુઝે નહીં ચાહિએ.''

બપોરના સમયે અચાનક ઘરમાં આવેલા બે અજાણ્યા ચહેરા જોઈને ભયભીત થયેલા બાળકે શું છે ? એ જોયા કે જાણ્યા વિના જ ના પાડી દીધી.... આવનાર બે વ્યક્તિમાં એક હતા ગામના અગ્રણી અને બીજા એમના સુરક્ષક...

બાળક ના પાડતો જ રહ્યો ને પેલાં અગ્રણી એ કબાટના લોકરમાં મૂકતા હોય તેમ રૂપિયાની થપ્પી બાળકના હાથમાં મૂકી દીધી.

આ જોઈ એ બાળકના પિતા વકીલસાહેબ બોલ્યા : ''આપ ક્યોં પૈસા દે રહે હો?'' ''બસ એસે હી...'' બોલતાં તો બોલાઈ ગયું પણ બોલ્યા પછી પોતાનું જ અંતઃકરણ જાણે કહી રહ્યું હતું. શું તારો ઉત્તર સત્ય છે ? શા માટે તું છુપાવે છે ? જે કારણથી તું અહીં આવ્યો છે એ કહી દે એને. વાતની ઉપેક્ષા કરી ઠાકોરજી મૌન રહ્યા. વકીલ બોલ્યા : ''મુઝે પૈસે કી જરૂરત નહીં હૈ.''

''મૈં આપકો નહીં આપકે બેટે કો દે રહા હું. જરૂરત હો યા ન હો મૈં દે રહા હૂં ઔર આપ કો લેના હી હૈ.'' એમના અવાજમાં એક આદેશ હતો.

એ આદેશની પરવા કર્યા વિના વકીલે કહ્યું : ''ઈસ પૈસે કા સ્વીકાર મેં નહીં હી કરુંગા.''

હવે... હવે.... શું.... ? પૈસાના માધ્યમે જ તો મારે કાર્ય કરાવવાનું હતું.. શું મારો પ્લાન ફ્લોપ થઈ જશે ? આ વિચારથી એ ગુસ્સે થતાં બોલ્યાં : ''આજતક મૈંને એસા કોઈ

વ્યક્તિ નહીં દેખા કિ જો સામને સે આઇ હુઇ લક્ષ્મી કો ભી ઠુકરાએ, ઉસકા અપમાન કરે.''

ઠાકોરના એ શબ્દોથી કાં તો માણસ ડરી જાય ને કાં તો પૈસાનું એ બંડલ દેખી એનું મન ડગી જાય. પણ સહુથી અલગ હતા એ... અત્યંત સ્વસ્થતાથી બોલ્યા : ''આપ બોલ રહે થે કિ આજ તક મૈંને એસા વ્યક્તિ કભી નહીં દેખા. સુનો... આજ સે આપ બોલના કિ એસા ભી એક વ્યક્તિ મૈંને દેખા હૈ ।''

પોતાનું કાર્ય સફળ કરાવવાના ઈરાદાથી ઠાકોરે કહ્યું : ''ઠીક હૈ, પૈસા મત લેના કિંતુ મેરા કામ તો કર દો.'' ''ક્યા કામ હૈ ? બતાઈએ !''

''મૈં, ગહેરગાંવ કા ઠાકોર હું, પિછલે કઈ સાલોં મેં મેરી જમીન કા કેસ ચલ રહા હૈ તો આપકો ઉસકા સુલઝાવ લાના હૈ.''

''ન્યાય એવં નીતિ સે વિરુદ્ધ યદિ કાર્ય હૈ તો મેં ઈસે નહીં કરુંગા । પૈસે કી લાલચ સે ભી અન્યાય કરના મેરે લિએ અસંભવ હૈ । માફ કીજિએ, ઈસ કાર્ય મેં સહાયક બનને કે લિએ મૈં અસમર્થ હૂં ।'' અન્યાયથી ડર્યા વિના ને ન્યાયથી ડગ્યા વિના સ્પષ્ટ શબ્દોમાં નિષેધ કરી દીધો.

સત્વશીલ વ્યક્તિ હંમેશા નિર્ભય અને નિશ્ચલ હોય છે. આથી જ એમને કોઇ પરાજિત કરી શકતું નથી.

એક વકીલની આવી દઢતા, નિસ્પૃહતા અને ન્યાયપ્રિયતાથી પ્રભાવિત થયેલા ઠાકોરજીએ ત્યાંથી વિદાય લીધી.

વિદાય આપી પાછા ફરતા એ વકીલ સ્વને જ કહી રહ્યા હતા. જો તને તારા પિતાજી અને દાદાજીએ વારંવાર હિતવચન ન કહ્યા હોત તો આજે તું અનીતિના માર્ગે ચાલી ગયો હોત. એમના અંતરમાં એ ક્ષણો આજે પણ તાદશ હતી. જ્યારે એમણે પહેલીવાર જ વકીલ બનવાની ઈચ્છા વડીલો સામે વ્યક્ત કરી હતી. જ્યારે વકીલના અભ્યાસની શરુઆત થઈ હતી અને જ્યારે પહેલીવાર કોર્ટમાં વકીલનું કાર્ય કરવા જતા હતા ત્યારે... ત્યારે દાદાજીએ કહ્યું હતું. બેટા ! વકીલ બનવું એ જેમ સારું છે તેમ ખોટું પણ છે. ન્યાયાલયમાં આવીને પણ જો પૈસાનો લોભ થઈ જાય તો આ પાપનો વ્યાપાર બની જાય. તું બને છે પણ યાદ રાખજે. ક્યાંય અન્યાય ન થાય એનું સંપૂર્ણ ધ્યાન રાખજે. અનીતિના માર્ગે એક કદમ ઉઠાવવાનો પ્રયાસ પણ કદીયે નહીં કરતો... દાદાજીનું આ વચન ચિંતામણિ રત્ન સમ સાચવીને રાખ્યું હતું. એનો જ આ પ્રભાવ હતો અન્યથા...

ઈ.સ. ૧૯૭૩માં બનેલી આ ઘટના. એ સમયના ૧૦૦૦૦ રૂપિયા એટલે આજનાથી વધુ દસ લાખ રુપિયા. સામેથી આવેલા દસ લાખથી વધુ રપિયાની સામે પણ ન જોવું...ગામના અગ્રણીને પણ સ્પષ્ટ ના પાડી દીધી. છેલ્લા ૪૫ વર્ષથી વકીલાત કરવા છતાં પણ ક્યારેય અનીતિનું સેવન ન કરવું. આ બધું શક્ય જ ના હોત... યુધિષ્ઠિરની જેમ ન્યાયમાર્ગે ચાલનાર એ વ્યક્તિનું નામ છે. મનોહરલાલજી. આજે પણ એ કહે છે કે આટલા વર્ષોમાં હું ક્યારેય અસત્યના પક્ષમાં ગયો નથી અને ક્યારેય એવી ઈચ્છા પણ થઈ નથી. આની પાછળ જવાબદાર હોય તો માત્ર ને માત્ર મારો જૈન ધર્મ - પ્રભુની કૃપા અને હિતવચન. નિરંતર વરસતી પ્રભુની કૃપાના બળે જ આ કાર્ય થઈ રહ્યું છે.

પ્રભુશાસન અને પ્રભુકૃપાને પામ્યાનો ગર્વ એમના અંગઅંગમાં છલકાતો હતો અને આજના સમયમાં આવી વિશિષ્ટ વ્યક્તિના અસ્તિત્વનો ગર્વ લેખક-વાચક સહુને અનુભવાય તો એ પણ નવાઈ નહીં....

યાદ રાખજો : અન્યાયનું સેવન કરી પૈસો મેળવવો એ લક્ષ્મીનું અપમાન છે અને ન્યાયના પક્ષે રહી સામેથી આવતી લક્ષ્મીનો ત્યાગ કરવો એ એનું સન્માન છે. એની સાચી ઉપાસના છે.

- વડીલોના હિતવચનને ચિંતામણિ રત્ન જેમ સાચવવું...
- ગમે તેવા સમયે પણ અન્યાયના માર્ગે ન જવું....
- આપણા ઉપર વરસતી પરમની - પ્રભુની કૃપાની અનુભૂતિ કરવી....

ન અન્યાય સેવનમ્ કોણ છે ? જાણો છો ? શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયને પ્રથમથી સમર્પિત પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પ્રખર ભકત કુક્ષિ જૈન સંઘના અને શ્રી તાલનપુર તીર્થના અધ્યક્ષશ્રી અને પ્રખર વક્તા મનોહરલાલજી પુરાણિક.

- હસમુખ વેદલીયા

જ્યાં અનીતિ ત્યાં અશાંતિ

આ દુનિયામાં દરેક વ્યક્તિ શાંતિ ચાહતો હોય છે. આ શાંતિની શોધ અવિરત ચાલતી જ રહે છે પણ, તેમ છતાં જેમ જેમ ઉંમર અને પરિસ્થિતિ બદલાય તેમ તેમ જીવનમાં અશાંતિ વધતી જ રહે છે. શાંતિ એને શોધેય મળતી નથી. કહેવા ખાતર પૂછાયેલા પ્રશ્નનો જવાબ તો હ..ઓ શાંતિ એમ ત્વરિત આપી દે છે, પણ વાસ્તવમાં શાંતિ છે કે નહીં એ તો એને જ ખબર હોય.

આ શાંતિની વ્યાખ્યા વ્યક્તિએ વ્યક્તિએ અલગ અલગ હોય છે. કોઈની શાંતિ બીજાની અશાંતિ પણ હોય અને કોઈની અશાંતિ બીજા માટે શાંતિ પણ હોઈ શકે. પણ ખરેખર જોવા જઈએ તો જે કામની વ્યસ્તતા વચ્ચે પણ થોડા પોતાના અને પરિવાર માટે સમય ફાળવે છે એને થોડી-ઘણી અશાંતિમાંથી રાહત મળે ને શાંતિ પામે એવું બની શકે. મૂળ વાત છે શાંતિની શોધની જે આજના માનવી માટે દુર્લભ બનતી જાય છે. શાંત રહેવું અને શાંતિ બંને અલગ બાબત છે.

બન્યું છે એવું કે આજનો માનવી રઘવાયો બન્યો છે. નામ અને દામ માટે... અને આમેય નામને દામ મળે એ માનવીની ગૌરવની બાબત છે તેની ના નહીં. પણ જે રઘવાટ કરે છે એ મોટી ભૂલ છે. માણસ પાગલ બની જ્યારે આ બંનેની પાછળ પડે છે ત્યારે એ અવિવેકી બને છે. ભ્રષ્ટ બને છે અહંકારી બને છે.પોતે જ પોતાના કંટ્રોલમાં

નથી રહેતો અને તે અનીતિ આચરવાના રસ્તા શોધવા લાગે છે. પોતે તો કરે જ છે સાથે અન્યોને પણ ઉશ્કેરે છે જેથી પેલા વચેટીયાઓ પણ શાંતિથી જોજનો દૂર રહે છે. સાચો હોય કે ખોટો હોય પણ અનીતિ માણસને ઊંઘવા દેતી નથી. અનીતિ આચરી જે ઉંઘે એ માણસની ગણતરીમાં આવે જ નહીં. માણસ સહજ સ્વભાવ છે કે કોઇકનું ખોટી રીતે કરી નાખ્યું હોય કે વ્યવહારમાં અનીતિ આચરી હોય એવો માણસ કદાપી શાંતિ ના પામે. એ સતત ઉચાટ, ટેન્શન અને ભયમાં જ જીવતો હોય માટે અનીતિ એ ભયની જનની છે અને આ ભદ્ર માણસની શાંતિ હણી લે છે અને માણસ સતત અશાંત જ રહેતો હોય. એટલે માણસે પહેલાં તો ભયને ભગાડવો પડે. ભય અનીતિ આચરી એટલે આવ્યો હતો માટે નીતિથી ચાલો તો જ ભય ભાગે ને ભય ભાગે તો શાંતિ એની મેળે જ છે. શાંતિ શોધવી પડે એવી ચીજ નથી. એ તો મળવા તૈયાર જ છે.

આ શાંતિ કેવળ ધ્યાન-સાધના કે આરાધના કરવાથી જ મળે એવું સાવ નથી. એ તો આ ભયને ભગાડ્યા પછીની સ્થિતિ છે. અનીતિ આચરી કેવળ ધ્યાન-સાધના કરવાથી અશાંતિ જતી નથી. જેમ અનીતિ ભયની જનક છે તેમ નીતિ એ શાંતિની જનક છે. જીવનમાં શાંતિ ના હોય તો કશું જ નહીં.

નીતિથી ચાલવાવાળા વ્યક્તને શાંતિ સામેથી મળવા આવતી હોય છે. જાત્રાઓ વારંવાર કરવાથી કે હોમ-હવન-યજ્ઞો કરાવાથી પણ ઘરમાં, સમાજમાં રાષ્ટ્રમાં અશાંતિ એટલા માટે કાયમ રહે છે. કારણ કે લોકો અનીતિ કરવામાં ઉસ્તાદ બની રહ્યા છે. કહીં પે નિગાહે કહીં પે નિશાના.

નીતિના નામે ધર્મમાં અનીતિ કરી પેલા આગળ કહ્યા તે નામ અને દામ મેળવવા લોકો પડાપડી કરી રહ્યા હોય છે. કારણ કે ધર્મમાં જેટલી અનીતિ આચરાય છે તેટલી ક્યાય નથી આચરાતી. ને પાછી જલ્દી બહાર પણ નથી આવતી. મોટા મોટા મંદિરોની કરોડોની આવક ભગવાન ક્યાં મૂકતા હશે ? જ્યારે વહીવટદારોની અનીતિ પકડાય છે ત્યારે આખા સમાજમાં અશાંતિ ફેલાઇ જતી હોય છે. જ્યાં શાંતિ લેવા જઇએ છીએ ત્યાં જ આટલી અનીતિ ?

સમાજમાં દરેક વ્યક્તિ શાંતિ ઝંખે છે. શાંતિ તો જ મળશે. જ્યારે માણસ અનીતિ કરતાં ડરે. અનીતિ આચરવાવાળો ગમે તેટલાં ટીલાં-ટપકાં કે ધર્મ ધ્યાન કરે, કે રાગડા તાણી સ્તુતિઓ કે પ્રાર્થના ગાય પણ આવો માણસ ધાર્મિક કહેવાય જ નહીં, ને આવો માણસ સતત અશાંત જ રહેતો હોય છે. શાંતિની ઇચ્છા રાખનારે દરેક જાત ઉપર કડક જાપ્તો રાખવો પડતો હોય છે કોઇ લોભ, લાલચ, લોભ કે વાસનાને તાબે થયા વગર તથા કોઇને કશીય કનડગત કર્યા વગર મોજીલા-મસ્તીલા કે રંગીલા બનીએ તો શાંતિ તો હાથવેંતમાં જ છે. ચાલો શોધીએ આપણા ગયા પછી લોકો ઓમ શાંતિ કહે એનો શો અર્થ ?

- દિલીપ રાવલ

શ્રાવકના માર્ગાનુસારી ગુણો

(ગતાંકનું ચાલું...)

૧૬. અજીર્ણમાં ભોજન ત્યાગ : પેટ બગડેલું હોય ત્યારે ખાવું નહિ, તેવા સમયે ઉપવાસ કરવો.

૧૭. ઉચિત ભોજન : તન, મન અને આત્માનું આરોગ્ય જળવાઈ રહે તેવું સાદું અને સાત્વિક ભોજન કરવું.

૧૮. જ્ઞાનીપૂજન : જ્ઞાનીજનો, વિદ્વાનો, કલાકારોનું સન્માન કરવું, યથાયોગ્ય તેમને સહકાર આપવો.

૧૯. નિંદા કાર્ય-ત્યાગ : લોકો નિંદા કરે, સમાજમાં આબરુ જાય તેવા અયોગ્ય કાર્યો ન કરવાં.

૨૦. ભરણ-પોષણ : પોતાના આશ્રયે રહેલાં સ્વજનોની યથાયોગ્ય સારસંભાળલેવી.

૨૧. દીર્ધદષ્ટિ : ભવિષ્યનાં પરિણામોનો વિચાર કરીને કોઈપણ કાર્ય કરવું.

૨૨. ધર્મશ્રવણ : જીવનને ઉન્નત અને ઉમદા બનાવે તેવી વાતો સાંભળવી, તેવું વાંચન કરવું.

૨૩. દયા : જીવ માત્ર પર કરુણા ચિંતવવી અને તેમનાં દુ:ખોને દૂર કે હળવા કરવા પ્રયત્નશીલ બનવું.

૨૪. બુદ્ધિ : દરેક બાબતનો સમગ્રતયા વિચાર કરીને નિર્ણય અને અમલ કરવો.

૨૫. ગુણપક્ષપાત : ગુણાનુરાગી બનવું.

૨૬. દુરાગ્રહ ત્યાગ : હઠ, જીદ, કદાગ્રહ કરવા નહિ.

૨૭. જ્ઞાનાર્જન : દરરોજ કંઈક ને કંઈક નવું જ્ઞાન મેળવવા પ્રયત્નો કરવા.

૨૮. સેવાભક્તિ : ઉપકારીઓની તેમજ દીન-દુ:ખીજનોની સેવા કરવી.

૨૯. ત્રિવર્ગ-બાધા : ધર્મ, અર્થ અને કામ આ ત્રણ પુરુષાર્થોનું સમુચિત ને સંતુલિન સેવન કરવું.

૩૦. દેશકાળનું જ્ઞાન : સમય અને સંજોગોને સુપેરે ઓળખવા, ભવિષ્યનો વિચાર કરવો.

૩૧. બલાબલ-વિચારણા : પોતાની શક્તિ અને ક્ષમતા તેમજ મર્યાદાનો વિચાર કરવો.

૩૨. લોકયાત્રા : સમાજ, ધર્મ અને રાષ્ટ્રની ઉન્નતિમાં સહભાગી થવું.

૩૩. પરોપકાર-પરાયણતા : દીન-દુ:ખી જનોની સેવા કરવી.

૩૪. લજ્જા : વડીલો, ગુરૂજનો આદિની અદબ રાખવી, મર્યાદાઓનું પાલન કરવું.

૩૫. સૌમ્યતા : હર હાલતમાં ખુશહાલ રહેવું, ધીરજ અને શાંતિ રાખવા.

સંસ્કારોનો શંખનાદ – મારી પાઠ શાળા સૌ ચાલો પાઠશાળા જઈએ....

ભાવિક વાઘજીભાઈ માજની – પરિષદ રાષ્ટ્રીય સહશિક્ષામંત્રી

कुमकुम सने पगलिये

गच्छाधिपतिश्री का मालवा प्रवेश

गच्छाधिपति युगनायक धर्म दिवाकर जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा मुनि मंडल ने डीसा नगर में श्री बी.एम. शाह परिवार द्वारा निर्मित श्री पार्श्वनाथ भगवान सह दादा गुरुदेव तथा पुण्य सम्राट की प्रतिमाओं की अंजनशलाका सानंद सम्पन्न की। वहां से लाखणी पधारते हुए थराद में अगवानी स्वीकार की। दोनों नगरों में बाजते-गाजते सामैया हुआ। थराद में सन् 2020 के चातुर्मास की विनती हुई। वहाँ से पेपराल पहुंचे जहाँ दो दिन स्थिरता की। अगले पड़ाव में धानेरा में भव्य पधरामणी सहित आगमन हुआ। धानेरा में दिनांक 26 मार्च को आचार्य देवेश श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. तथा पुण्य सम्राट की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा सम्पन्न कर गच्छाधिपतिश्री नैनावा पधारे। यहाँ आचार्यश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. तथा पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई। यहाँ गच्छाधिपतिश्री ने थराद निवासी श्री सेवंतीलाल नरपतलाल अदाणी को दीक्षा प्रदान की।

नैनावा से गच्छाधिपति धर्म दिवाकर जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. मुनि मंडल तथा साध्वी समुदाय ने मालवा की ओर विहार किया। उन्हें मंदसौर (म.प्र.) में त्रिवेणी संगमोत्सव के लिये पधारना था। यहाँ उनकी निश्रा में शाश्वत श्री नवपद ओली की आराधना दिनांक 31 मार्च से 8 अप्रेल तक होने वाली थी। दिनांक 8 अप्रेल को चातुर्मास घोषणा तथा दिनांक 17 अप्रेल को नूतन जिनालय श्री नवलखा पार्श्वनाथ में प्रतिष्ठोत्सव होने थे। प्रतिष्ठोत्सव का कार्यक्रम दिनांक 14 अप्रेल से प्रारंभ होना था। इससे पूर्व रामटेकरी स्थित श्री आदिनाथ जैन मंदिर में प्रतिष्ठोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम था। वहीं पार्श्वनाथ में दिनांक 30 मार्च को श्री राजेन्द्र गुरु मंदिर में व्याख्यान वाचस्पति तथा पुण्य सम्राट की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा होनी थी।

पुण्य सम्राट की चार प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हो रहीं थीं

मंदसौर में आयोजित कार्यक्रमों के अंतर्गत पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. की चार प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हो रही हैं। कार्यक्रम के

अनुसार धर्मदिवाकर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में 30 मार्च को मंदसौर के निकट श्री बही पार्श्वनाथ स्थित श्री राजेन्द्र गुरु मंदिर में व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म. तथा पुण्य सम्राट श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म. की प्रतिमाओं, 10 अप्रेल को श्री अजितनाथ मंदिर में पुण्य सम्राट की प्रतिमा बाद में श्री आदिनाथ मंदिर रामटेकरी में दादा गुरुदेव एवं पुण्य सम्राट की प्रतिमाओं एवं 17 अप्रेल को नूतन मंदिर श्री विलखा पार्श्र्वनाथ में दादा गुरुदेव तथा पुण्य सम्राट की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा होगी। चार में से पुण्य सम्राट की दो प्रतिमाओं के निर्माण का लाभ श्री राजमलजी सुरेन्द्र कुमारजी लोढ़ा परिवार ने एवं एक का श्री राजमलजी लक्ष्मीबाई लोढ़ा परिवार ने लिया है। एक प्रतिमाजी श्री नवलखा पार्श्वनाथ ट्रस्ट द्वारा निर्मित है।

* मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी का अजमेर जिले के विजयनगर में पदार्पण हुआ। इस मौके पर विजयनगर में विराजित तपागच्छाधिपति आचार्यश्री प्रेमसूरिजी के सुशिष्य आचार्य श्री कुलचंद्रसूरिजी के संग आध्यात्मिक आत्मीय मिलन हुआ। आचार्यश्री ने आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी व वर्तमान आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी के संग बिताये मधुर पलों को याद करके उनकी उदारता, सरलता, विनम्रता, पवित्रता, निर्लेपता आदि गुणों की चर्चा करते हुए प्रसन्नता प्रकट की। इस अवसर पर मुनिद्वय श्री ने आचार्यश्री को साहित्य समर्पित किया। आचार्य श्री ने भी आचार्य श्री प्रेमसूरिजी स्मृति ग्रंथ मुनि श्री को प्रदान किया। मुनिद्वय श्री ने वहां से भीलवाड़ा की ओर विहार किया।

* मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्न विजयजी गुरु श्री राजेन्द्रसूरि जन्मभूमि भरतपुर नगर में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर जयपुर होते हुए श्री राजेन्द्रसूरिजी के पट्टधर आचार्य श्री धनचंद्रसूरिजी की जन्मभूमि किशनगढ़ (मदनगंज) पहुंचे। यहाँ के रत्नत्रयी आराधना भवन में मुनिश्री ने

आचार्यश्री धनचंद्रसूरिजी के जीवन विषय पर विश्लेषण किया। प्रवचन में मुनिश्री ने कहा कि क्रोध हमारे भीतर उठने वाला एक ऐसा संवेग है जो क्षणभर में जगता है और क्षणभर में शांत हो जाता है । क्रोध इतना खतरनाक है जिसमें व्यक्ति खुद भी जलता है और दूसरों को भी जलाता है। क्रोध में जलना तो तीली की तरह है जिसे दूसरों को जलाने के लिए पहले स्वयं को जलना होता है। फाल्गुन सुदी सप्तमी के अवसर पर यहाँ के श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर में मुनिद्वयश्री के सान्निध्य में श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। मुनिश्री ने उपरांत अपनी जन्मभूमि अजमेर की ओर विहार किया, जहाँ 28 वर्षों के पश्चात् मुनिद्वयश्री का पदार्पण हुआ।

---

* राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के मोती डूंगरी में स्थित दादावाड़ी में आचार्यश्री जिनकुशलसूरिजी की दादावाड़ी का ध्वजारोहण का कार्यक्रम मुनिश्री संयमरत्न विजयजी, मुनिश्री भुवनरत्नविजयजी व खरतरगच्छीय साध्वी श्री मणिप्रभाजी के सान्निध्य में सकुशल सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् मुनि श्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि पर भाव से स्वभाव में आने पर ही आनंद का प्रभाव बना रहता है, पर से मन हटेगा तो ही स्व का आनंद प्राप्त होगा।

ओसवाल -पोरवाल-खण्डेलवाल - अग्रवाल रूप भेद की दीवाल जब हमारे जीवन से हटेगी तभी हमारे जीवन में दिवाली घटेगी।

जहाँ अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाती है, वहाँ वैर भाव नहीं रहता। प्रवचन के पश्चात् मुनिश्री ने साध्वी मणिप्रभाजी

को स्व साहित्य प्रदान किया। मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी अजमेर में अपने बचपन के विद्यालय स्वामी सर्वानंद विद्या मंदिर सैकण्डरी स्कूल में 28 वर्षों के पश्चात् पधारे। उस समय के प्रिंसिपल व नूतन अध्यापकों ने मुनिद्वयश्री का स्वागत किया। मुनिश्री ने बच्चों को हितशिक्षा देते हुए कहा कि जिस व्यक्ति के पास अपनी प्रतिभा होती है, वह चाहे देश में रहे चाहे विदेश चला जाए वह जहाँ भी रहेगा हर जगत इज्जत पाएगा, समृद्धि के खजाने

खोलेगा और अपने माता-पिता का नाम भी रोशन करेगा। प्रवचन के पश्चात मुनिश्री की जन्मदात्री माता भगवती देवी का सम्मान विद्यालय की प्रिंसिपल मनजीत कोर ने किया। मुनिद्वय श्री ने प्रिंसिपल सहित सभी अध्यापकों व विद्यार्थियों को कॉपी व पेन आशीर्वाद स्वरूप प्रदान किया। तत्पश्चात् सभी अध्यापकों ने मुनिश्री को आहार व्होराकर लाभ प्राप्त किया।

महिदपुर। हमें आत्मा के स्वरूप को पहचानना है। जैन धर्म भाव प्रधान है। एकाग्र चित्त होकर शुद्ध भाव से की गई क्रिया फलदायी है। भव-भव की भ्रमणा से मुक्ति पाने के लिए राग द्वेष, मोह का त्याग करना चाहिये। परमात्मा के रग-रग में रंग का सुख बसा हुआ है। अर्हम पद को पाने के लिए अहम (इगो) को त्यागना होगा। आत्मा अजर अमर है, शरीर नाश्वान है।

साध्वीश्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. ने अल्प प्रवास पर महिदपुर आगमन पर श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के तत्वावधान में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित समाजजनों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। धर्मसभा में आपने कहा कि हमें मृत्यु को सामने रखकर जीना सीखना चाहिये।

केश-लोच- भाबरा में पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में चार माह पूर्व भागवती दीक्षा अंगीकार कर प.पू. जिवांशरसाश्रीजी म.सा. का महिदपुर आगमन पर प्रथम बार केश लोच हुआ। केश लोच होने पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से संघ अध्यक्ष मुकेश बांठिया ने प.पू. साध्वीजी म.सा. की सुखशाता पूछी।

* राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित रावतभाटा के जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ, महावीर भवन में प्रथम बार पधारने पर मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने प्रवचन देते हुए कहा कि बिना साधना किये कोई भी बड़ा नहीं बन सकता। जब 'मैं बड़ा' ये भाव समाप्त होता है, तब जाकर ही प्राणी अहं से अर्हं की ओर कदम बढ़ाता है।

साधनों में रहने वाला, सुविधा में उलझने वाला इंसान कभी भी साधना नहीं कर सकता। इस बढ़ते हुए जमाने में यदि कुछ घट रहा है तो वह है सहनशीलता, विषमता का भाव हटने पर ही समता का आविर्भाव होता है। रावतभाटा निवासियों ने मुनिद्वय को पुनः पधारने की भावपूर्वक विनती की।

पंच पीठिका सूरिमंत्र की सानंद आराधना

निम्बाहेड़ा। आदर्श कॉलोनी स्थित श्री राजेन्द्रसूरी ज्ञान मंदिर में चातुर्मास के लिये विराजित पुण्यसम्राट श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिश्वरजी महाराजा के शिष्य एवं वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिजी म.सा. अपने तपस्वी जीवन में पहली बार विश्व शांति एवं जगत व जीवों के कल्याण के निमित्त शनिवार से 84 दिवसीय पांच पीठिका सूरिमंत्र आराधना प्रारंभ किये हैं। प्रातः आराधना के लिए राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में ही आराधना कक्ष में एकांतवास के लिए प्रवेश किया। गुरुवार को गच्छाधिपति नित्यसेन म.सा. ने उक्त आराधना के महत्व का प्रतिपादन करते हुए बताया कि साधना ही अंतिम ज्ञान है। इससे ज्ञान व आत्म साधना का प्रदुर्भाव होता है। जीवों के प्रति सौहार्द्र की भावना प्राप्त होती है। अरिहंत भगवानों ने भी साधना के माध्यम से ही केवल ज्ञान की प्राप्ति की थी। साधना के माध्यम से स्वयं के कार्यों का हश्र कर शिव शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। यह आराधना भाव विधि के साथ होती है। इसके साथ ही द्रव्य विधि के विधान भी होते रहेंगे। इस आराधना में 108 मनकों की माला के माध्यम से 84 दिनों में सवा लाख जाप किए जाएंगे। इस जाप के माध्यम से अरिहंत तत्व की प्राप्ति होगी। गच्छाधिपति ने कहा कि जगत में जीव नहीं होता तो जगत का कोई औचित्य नहीं होता। संसार नश्वर है। आराधना के बिना जीवन जल बिन मछली के समान है, धर्म आराधना ही जीवन को संसार की आवश्यकता का भान कराती है, इसीलिए चातुर्मास में किसानों की भांति सभी प्राणी जगत के जीवन रूपी खेत में धर्म का बीज बोया जाता है। उक्त सूरिमंत्र आराधना को लेकर समाजजनों में हर्ष व्याप्त है। गच्छाधिपति के साथ चातुर्मास के लिये विराजित मुनिराज श्री वीररत्न म.सा., विद्वद्रत्न म.सा., प्रशमसेन म.सा., तारकरत्न म.सा., निर्भयरत्न म.सा. के निश्रा में संघ अध्यक्ष मनीष बाबेल एवं चातुर्मास लाभार्थी परिवार व चातुर्मास आयोजन समिति

के अध्यक्ष रतनसिंह पारख, शेरसिंह, पारसमल, प्रकाशचन्द्र, दिलीप, मनोज एवं ललित पारख आदि, 84 दिवसीय सूरिमंत्र आराधना की व्यवस्थाओं को अंजाम देने के लिए जुटे हुए हैं।

वर्तमान गच्छाधिपतिजी सा. द्वारा सूरिमंत्र की आराधना के अंतर्गत प्रथम पीठिका पूर्ण कर द्वितीय पीठिका में प्रवेश किये जाने पर सर्वत्र संघ में हर्ष छा गया। यह पीठिका भी सानंद सविधि सम्पन्न हुई। इसके पश्चात् 8 अगस्त से तृतीय पीठिका की साधना में गच्छाधिपतिजी सा. की आराधना ने प्रवेश किया। इस अवसर पर भी व्यापक रूप से वंदनाएं समर्पित की गईं।

उधर श्री भांडवपुरतीर्थ पर चातुर्मासरत् आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने सूरिमंत्र की आराधना सानंद सम्पन्न की। यह आराधना तृतीय पीठिका की थी। जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का 61 वाँ जन्मदिन श्रावण सुदी 3 गुरुवार को मनाया गया। इस अवसर पर उन्हें मंगल बधाई दी गई। सभी शिष्यों एवं गुरुभक्तों ने स्वस्थ एवं दीर्घायु होने के साथ-साथ अनेक ऐतिहासिक जिनशासन के कार्यों को सुसम्पन्न कराने की मंगल कामना की।

चातुर्मास आयोजक- मातुश्री मालूदेवी पुखराजजी छत्राणी पालगोता चौहान निवासी सुराणा द्वारा प्रातः 10.00 बजे से श्री महावीर पंचकल्याणक पूजा, अंगरचना एवं प्रभावना वितरित की गई। सादगीपूर्ण इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी साधु-साध्वीजी एवं गुरुभक्तों ने कोरोना बचाव के नियमों की पालना करते हुए भाग लिया। पूज्य आचार्य भगवन्त 'सूरिमंत्र पंचपीठिका' की आराधना सुखशाता पूर्वक कर रहे हैं।

पाटण में वर्षीतप पारणा का आयोजन

पाटण। पंचासरा जिनालय के पास स्थित त्रिस्तुतीक जैन उपाश्रय में विराजमान मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. की निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ के आयोजन के तहत जैन धर्म के उग्र तप वर्षीतप का पारणा हुआ। इस अवसर पर तप का वर्णन करते हुए मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि तप शरीर को शुद्ध करने के साथ - साथ आत्मा को बलवान बनाता है। जैन धर्म में वर्षी तप की विशेष महिमा है। हजारों वर्ष पहले प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ने संसार छोड़कर संयम ग्रहण किया था। उनके संयम के ग्रहण के दिन से 400 दिन

तक निर्जला उपवास करने वाले ऋषभदेव को वैशाख शुद-3 के दिन इक्षु रस से पारणा करवाया गया था। इसलिए जैनों में अक्षय तृतिया को पारणा करने का विशेष महात्म्य है। जैन परंपरा में बहुत ही महात्म्य वाले इस तप में 13 माह के एकांतरे उपवास और बेसणुं करने का विधान है।

अन्य विधि-विधान के साथ प्रतिक्रमण जाप, जिनपूजा वगैरे शास्त्रीय विधि के साथ तप करना होता है। मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी महाराजा ने अक्षय तृतीया का महत्व समझाते हुए कहा कि अक्षय यानी जिसका क्षय नहीं होता वह, त्रीज यानी की गुजराती महीने की इस तिथि का कभी भी क्षय होता नहीं। इतना ही नहीं अक्षय तृतीया का दिन मुहूर्त की दृष्टि से अत्यंत पवित्र और शगुन वाला माना जाता है। इस दिन लोग अपने शुभ कार्य करने के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त मानते हैं।

इस साल कोरोना वायरस के नियंत्रण के लिए लॉकडाउन में संपूर्ण रूप से पालन करने वाले कोई भी प्रकार का आयोजन या अनुष्ठान किये बगैर जैनों ने घर में रहकर ही लोगों को एकत्रित किये बगैर पारणा किया, तप करने वाले तपस्वी भाई -बहनों के लिए इक्षुरस, गन्ने का रस भी मुश्किल था। तब मनसुखलाल, नीतीनभाई, प्रकाशभाई, अलकेशभाई, हसमुखभाई, धीरूभाई के सहयोग से और पाटण शहर भाजपा के उपप्रमुख संजय मोदी ने यह कार्य पूर्ण किया। इस अवसर पर किस तरह लॉकडाउन के पालन के साथ कार्य कर सके उसके लिए जिला कलेक्टर आनंद पटेल का मार्गदर्शन प्राप्त किया। पाटण में रमणभाई, जागृतिबेन और संगीताबेन ने इस कठीन तप को किया।

धार । लॉकडाउन के इन 68 दिनों में धार नगर में साध्वी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. की पावनकारी निश्रा एवं आशीर्वाद से श्रुतज्ञान अभिवृद्धि योजना का सुंदरतम आयोजन हुआ जिसमें साध्वीजी के मार्गदर्शन में लगभग 50 जितने श्रावक, श्राविका एवं बच्चों ने नयी सूत्र की गाथा याद की। सभी मिलाकर 3600 नयी गाथा याद की गई। इस आयोजन में सभी श्रुत आराधकों का बहुमान साध्वीजी की पावन निश्रा में आयोजन लाभार्थी श्रीमती चंदाबेन मनोहरलालजी तांतेड़, श्रीमती मधु बेन राजेशजी धोका एवं श्रीमती विनीता बेन शरदजी धोका परिवार द्वारा किया गया। इस आयोजन में प्रथम - आदित्य शरदजी धोका (360 गाथा), द्वितीय श्रेयांस मनोजजी श्रीश्रीमाल (225 गाथा), तृतीय - अवनि संदीपजी श्रीश्रीमाल

(कुल 193 गाथा) रहे। आयोजन में सभी श्रुत आराधकों ने नयी गाथा याद की। 5 साल के बच्चों से लेकर 65 साल तक के 50 आराधकों ने उत्तम ज्ञानार्जन किया।

– विनीता शरदजी धोखा

पीएचडी. शोध ग्रंथ किया भेंट

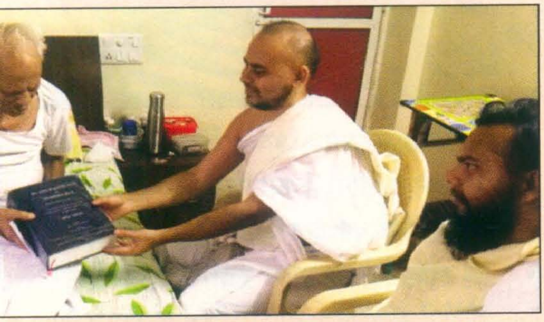

शाजापुर। श्री संयमरत्नविजयजी, मुनिश्री भुवनरत्नविजयजी ने अक्षय तृतीया के शुभ दिन शाजापुर (मध्यप्रदेश) शहर के श्री आदिनाथ जिनालय में दर्शन-वंदन कर डॉ. सागरमल जैन की पुत्रवधू श्रीमती सरला जैन के वर्षीतप पारणे प्रसंग पर आशीर्वाद प्रदान किया।

युग प्रभावकाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी के स्वप्नानुसार हुए डॉ. सागरमलजी जैन के निर्देशन में मुनिश्री संयमरत्नविजयजी ने 'जैन दर्शन में पूजा का स्वरूप एवं आध्यात्मिक महत्व' विषय पर पीएच.डी. हेतु शोध ग्रंथ लिखा था।

उस शोध ग्रंथ की प्रथम प्रतिलिपि मुनिश्री ने 90 वर्षीय डॉ. सागरमलजी जैन को प्रदान की।

नीमच। श्री जैन श्वेताम्बर महावीर जिनालय ट्रस्ट, विकास नगर के तत्वावधान में आयोजित चातुर्मास के प्रथम दिवस आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी के सुशिष्य मुनि श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि चातुर्मास में आराधना-साधना करते हुए हमें कर्मों का विनाश करना है।

चातुर्मास में हमें ज्ञान का प्रकाश फैलाना है। चातुर्मास में हमें भागना नहीं अपने आपको जगाना है। विद्या विनय गुण को प्रकट करती है, विनय से पात्रता-योग्यता की प्राप्ति होती है, योग्यता से धन की प्राप्ति होती है, धन प्राप्त करके जो परोपकार आदि में खर्च करता है, उसे सुख की प्राप्ति होती है। सुख के सागर में डूबने के पश्चात् प्राणी परमात्मा को भूल जाता है। प्रतिदिन प्रातः 6 बजे भक्तामर का पाठ होगा। मुनि श्री से साकली अट्ठम व आयंबिल की तपस्या के पच्चक्खाण श्रद्धालुओं ने ग्रहण किये।

भांडवपुरा। भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनिमण्डल, विदुषी साध्वीजी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री काव्यरत्नाश्रीजी आदि ठाणा का सन् 2020 का चातुर्मास भाण्डवपुर तीर्थ पर होगा। चातुर्मास प्रवेश 2 जुलाई 2020 को प्रातः 07.45 बजे तीर्थद्वार पर आगमन हुआ। दिनांक 15 जुलाई को प्रातः 10.30 बजे तीर्थ के मुख्य प्रवेश द्वार (सिंहद्वार) के शिलान्यास के प्रसंग पर आए हुए समीपवर्ती गुरुभक्तों के हाथों से विधिवत् मदनलाल श्रीमाली-मेंगलवा ने मंत्रोच्चारण पूर्वक शिलान्यास करवाया।

पूज्य आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं उपस्थित श्रमणिवृन्द ने वासक्षेप किया। शिलान्यास विधि सुसम्पन्न होने के पश्चात् सभा को संबोधित करते हुए जैनाचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि इस वर्ष चातुर्मास करने के लिए पादरू, सियाणा, सायला एवं सांचौर के गुरुभक्तों ने आग्रह पूर्वक विनंती की परन्तु वर्तमानकालीन कोरोना वायरस की विभीषिका को देखते एवं आत्मिक साधना के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भाण्डवपुर तीर्थ में साधु-साध्वीजी सहित चातुर्मास है। इस संबंध में गच्छाधिपति श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा तीर्थ विकास के साथ पुण्यसम्राट व योगिराज की पुण्यभूमि में पुनः सूरिमंत्र पीठिका की आराधना सानन्द सुसम्पन्न होने की मंगल भावना व्यक्त की, जिसे पढ़कर सुनाया गया। आत्म-मनोबल को परिपुष्ट करने के लिए इस वर्ष भी चातुर्मास के 90 दिनों तक पीठिका की आराधना करने की घोषणा भी की गई।

समर्पणम् शिविर का भव्य आयोजन

अहमदाबाद। समर्पणम् शिविर 7 मार्च से 11 मार्च 2020 अहमदाबाद में पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म. के सुशिष्य मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा. के सान्निध्य में किया गया। लाभार्थी श्री शांतिबेन अदाणी थे। इसका अदाणी जैन मन्दिर शान्तिग्राम, अहमदाबाद में 7 मार्च के शुभ दिवस प्रातः 5 बजे शुभारंभ हुआ।

प्रवेश हेतु 1245 फॉर्म में से 100 का

चयन किया गया। समर्पणम का अति उत्साह था। प्रतिदिन मुनिभगवंत श्री जिनागम रत्नविजयजी म.सा. की अनेक वाचनाएं हुईं। उपाध्याय श्री यशोभद्रविजयजी , श्री वीरविजयजी, श्री राजेन्द्रसूरीजी साथ ही पाट परम्परा के समस्त आचार्यों के जैन ग्रंथों का वाचन, समकित देव गुरु धर्म आदि के बारे में गहन वाचना दी गई। जैन जगत के प्रमुख वक्ता सुरेशभाई चेन्नई, दीपकजी वडौली, प्रतीक भाई, अतुलजी दाडी, रमेशजी अनोखी द्वारा जैन इतिहास, जैन ग्रंथ, शासन के प्रति लगाव, पूर्व में किए शाश्वत कार्य ऐसे अनेक जैन, सिद्धान्तों पर उद्बोधन दिया गया। जैन संगीतकार पियुष भाई मुंबई, देवांश दोषी मुंबई, जैनम वारीया मुंबई, मेहुलजी सूरत आदि संगीत प्रेमियों के द्वारा प्रभु भक्ति संवेदना जिसमें प्रभु मिलन, संयम संवेदना, शासन वन्दना आदि अपने सुरताल के साथ प्रभु स्पर्श एवं अनेक आयोजन शिविरार्थियों के लिए किए गए।

प्रतिदिन प्रातः 5 बजे वाचना, अष्ट प्रकारी पूजन, प्रतिक्रमण, नियम लेना, आयम्बिल एकासणा, बियासणा, शयन संथारे आदि ऐसे अनेक नियम समर्पणम में आए श्रावकों द्वारा नियमित किए गए। समर्पणम के अन्तिम दिवस 33 शिविरार्थियों द्वारा श्रावक के 12 व्रत 5 साल या उससे अधिक के लिये लिए गए। चार शिविरार्थियों ने ब्रह्मचर्य व्रत लिये।

शेष साथियों ने भी कुछ न कुछ नियम लिए जिन्हें मुनिराजश्री जिनागम रत्न विजयजी म.सा. द्वारा उच्चराए गए। ऐसा लग रहा था माना जैसे दीक्षा समारोह हो रहा हो, सभी की आँखों में अश्रुधारा ही रहे थी। इसी के साक्षी बने त्रिस्तुतिक श्रीसंघ राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोहरा, शशि भाई, अरविंदजी देसाई, रमेशजी नड़ियाद, आदाणी परिवार के सदस्यगण आदि महानुभाव मौजूद थे।

सभी ने मुनिराजजी से ऐसे आयोजन आगे भी करते रहने को कहा। यह जानकारी तरुण परिषद पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री पवन कटारिया जावरा द्वारा दी गई।

महिदपुर। वैश्विक महामारी (कोरोना) की विश्व शांति के लिए 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् नमः' पद के सवा करोड़ जाप का अनुष्ठान शनिवार 5 जुलाई से प्रारंभ हुआ जो निरंतर 5 माह तक राजेन्द्र सूरी ज्ञान मंदिर में चलेगा। अनुष्ठान की पूर्णाहुति 29 नवम्बर रविवार को होगी।

सरल स्वभावी साध्वीश्री भुवनप्रभाश्रीजी की शिष्या साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में अखण्ड दीप प्रज्ज्वलन

व कुम्भ स्थापना कर चातुर्मास का शुभारम्भ किया गया। कुम्भ स्थापना का लाभ अमृतलाल रमेशचन्द्र गादिया परिवार व दीप प्रज्ज्वलन का लाभ सुन्दरलाल सुरेश छजलानी परिवार ने लिया।

कहा कि वैश्विक महामारी (कोरोना) की शांति के लिए व अच्छी वर्षा की कामना को लेकर सवा करोड़ मंत्र के जाप का अनुष्ठान दीप प्रज्ज्वलन व कुम्भ स्थापना कर किया गया है। आडम्बर रहित शांतिपूर्वक जप-तप, साधना व ध्यान में लीन रहकर चातुर्मास के पांच माहों में श्रावक-श्राविकाओं को समय का सदुपयोग कर आत्मा का कल्याण करना चाहिये तथा अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए जीवन को धन्य बनाना है।

'वैराग्य शतक ग्रन्थ' व 'भीमसेन चरित्र ग्रन्थ' वैराने का लाभ नेमीचंद लुणावत परिवार व माणकलाल छाजेड़ परिवार व माणकलाल छाजेड़ परिवार ने लिया। अतिथियों का बहुमान त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की ओर से किया गया। संचालन संघ अध्यक्ष मुकेश बांठिया ने किया। प्रातः मिडिया प्रभारी नरेन्द्र धाड़ीवाल ने उक्त जनकारी प्रदान की। स्वामी भक्ति व प्रभावना का लाभ नेमीचंद लुणावत परिवार ने लिया।

---

* साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का 28 जून रविवार को स्थानीय गौशाला पर नागेश्वर तीर्थ पेढ़ी के सचिव धर्मचन्द्रजी जैन व नागेश्वर श्रीसंघ के सदस्यों ने चातुर्मास प्रवेश की अगवानी की। नगर में घर-घर गवली कर साध्वीश्रीजी का नागेश्वर तीर्थ गुरुमन्दिर दादावाडी में चातुर्मास मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रवेश पर आलोट, खाचरौद, राजगढ़, नागदा, बड़नगर, कालूखेड़ा आदि श्रीसंघ के सदस्य उपस्थित थे। सभी ने साध्वीश्रीजी के दर्शन वन्दन कर आशीर्वाद लिया। संघ पूजा का लाभ राजेशजी समरथमलजी लुनावत, रिंगनोद और सचिनजी विमलजी जैन ठेकेदार, आलोट ने लिया।

चातुर्मास हेतु साध्वीजी राजेन्द्रसूरि गुरु मन्दिर, नागेश्वरतीर्थ पर विराजमान हैं।

* **महिदपुर।** मीडिया प्रभारीश्री नरेन्द्रकुमार धारीवाल ने बताया कि साध्वीवर्या डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री निरागरसाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री जीवांशरसाश्रीजी म.सा. ठाणा-3 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश शोभायात्रा सरस्वती शिशु स्कूल (बारा पत्थर मार्ग) से प्रारंभ होकर ढोल-ढमाकों के साथ श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में धर्मसभा के रूप में समापन हुआ। रास्ते में जगह-जगह अक्षत श्रीफल से गहुली की गई। साध्वीश्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने मंगल प्रवेश व चातुर्मास की महत्ता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। इसका सदुपयोग कर मोह, मान, माया, अहंकार रूपी कचरे को जीवन में शरीर से बाहर कर आत्मा को जागृत कर दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूपी गहने से शरीर को सजाकर मनुष्य जन्म को सार्थक बनाना है। चातुर्मास काल

में पांच माहों में आपको कम से कम 6 दिन व 6 घंटे का समय जिनवाणी के श्रवण के लिए निकालकर तप, त्याग, आराधना व साधना में लीन रहकर सामायिक कर सम्भाव से जीवन को सार्थक कर चातुर्मास को सफल बनाना है। पाठशाला के बच्चों के मंगलाचरण व श्री राजेन्द्रसूरी महिला मण्डल की अध्यक्षा संगीता मोदी के स्वागत भाषण से धर्मसभा की शुरुआत हुई। रमेशचन्द्र लुणावत, माणकलाल छाजेड़, अशोक मेहता, सुरेश छजलानी, पारस लुणावत आदि ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये।

मुनिराज का उग्र विहार

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म. के सुशिष्य मुनि श्री संयरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी का मालवा (मध्यप्रदेश) सिंगोली में मंगल प्रवेश हुआ। मुनिद्वय ने गुरु कृपा से महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरला, उड़ीसा, बिहार, बंगाल, उत्तरप्रदेश, उत्तरखण्ड, हरियाणा, राजस्थान, मेवाड़ में लगभग 16 हजार कि.मी. की पदयात्रा सम्पन्न की। यहाँ सिंगोली में प्रवचन देते हुए मुनिश्री ने कहा कि सोच हमेशा ऊंची होना चाहिए। सकारात्मक सोच व्यक्ति को राम बनाती है और नकारात्मक सोच इंसान को रावण। सकारात्मक सोच रखने से महारा दिमाग हमारे नियंत्रण में रहता है।

चातुर्मास प्रवेश

रतलाम। साध्वीश्री अमीतदृष्टा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 7 का रतलाम में करमदी तीर्थ से सामैया के रूप में प्रारम्भ होकर विभिन्न मार्गों से होता हुआ अ.भा. सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक श्रीसंघ नीमवाला उपाश्रय में श्रीसंघ की उपस्थिति में हुआ। साध्वी श्री ने मंगलाचरण कर कहाकि आज के युग में पूर्ण पापकर्म से जितना हो सके उतना बचने का प्रयास कैसे हो ऐसा प्रयास करना चाहिए और चातुर्मास धर्माराधना करने का दौर है। धर्मसभा को चातुर्मास समिति अध्यक्ष अभय सकलेचा, संजय कोठारी, ट्रस्टमंडल अध्यक्ष राजेन्द्र लुणावत, सतीश खेड़ावाला, सुजानमल सोनी, जावरा श्रीसंघ के सुरेश पगारिया, नगीन सकलेचा, सारिका जैन आदि ने संबोधित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़, निर्मल कटारिया, मुकेश ओरा, राजेन्द्र खाबिया आदि तरुण परिषद, महिला परिषद व श्रीसंघ के महानुभाव उपस्थित थे। धर्मसभा का संचालन राष्ट्रीय सहमंत्री राजकमल दुगड़ ने किया।

जैन साधना के सूत्र व तनाव मुक्ति

जैन दर्शन में चित्ता की निर्मलता व एकाग्रता को बढ़ाने के लिये अनेक उपायों की चर्चा की गई है जो न केवल कषायों में कभी लाते हैं वरन् वे चित्ता की एकाग्रता व तत्वज्ञान में वृद्धि करके तनाव मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इनमें सस्वर पूजन-पाठ-भक्ति-स्वाध्याय-मंत्रजाप व सामायिक आदि कार्य प्रमुख है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि प्रातरू नित्य कर्म से निवृत्त होकर किये जाने वाले सस्वर देव पूजन-भक्ति, स्तुति पाठ शरीर में कोलेस्ट्रोल व हानिकारक द्रव्यों की मात्रा में कमी करते हैं। इन क्रियाओं के माध्यम से शरीर में कषायों को बढ़ाने वाले हानिकारक हारमोन्स का स्राव बन्द हो जाता है तथा फेफड़े, हृदय व पाचन तंत्र की क्रियाशीलता में वृद्धि होकर हानिकारक विजातीय तत्वों को शरीर से बाहर निकलने में मदद मिलती है। सस्वर वाचन से तंत्रिका तंत्र व रक्तवह नाड़ियों का लचीलापन बढ़ता है जो शरीर की तनाव सहन करने की क्षमता को बढ़ाता है।इसके साथ ही ध्यान या सामायिक का तनाव घटाने में महत्वपूर्ण योगदान हैं । ध्यान के लाभों से समस्त ही विश्व आज सुपरिचित है। जैन दर्शन में कहा गया सामायिक ध्यान का ही एक रूप है जिसमें वस्तु स्वरूप का चिन्तन करते हुए बाह्य जगत के विषयों से मन को हटाकर उसे आत्म स्वरूप में एकाग्र करने का अभ्यास किया जाता है। इस क्रिया में चित्ता की चंचलता व शरीर की अनेकानेक क्रियाओं में मन्दता आ जाती है, शरीर पूर्णरूप शिथिल हो जाता है किन्तु ज्ञान पूर्णतरू जाग्रत रहता है। इस ध्यान या सामायिक का प्रभाव शरीर व मन के तनावों को घटाने की दृष्टि से अद्वितीय है, उत्कृष्ट ध्यान को मुक्ति का कारण कहा गया है। इसके साथ ही भक्ति-पूजा-पाठ-स्तुति एवं ध्यान-सामायिक उत्कृष्ट शुभ भाव रूप होने से इन क्रियाओं के माध्यम से तीव्र पुण्य का बन्ध होता है जिसके फल में व्यक्ति को समस्त ही प्रकार की जागतिक अनुकूलताएँ प्राप्त होती हैं तथा प्रतिकूलताओं की तीव्रता में कमी आ जाती है। इस प्रकार तनाव जनक स्थितियां पैदा ही नहीं होती तथा पैदा होती भी हैं तो व्यक्ति उनका सहज ही समाधान करने में सक्षम हो जाता है।

श्री संघ सौरभ

श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्रसूरि मंदिर का रजतजयंती उत्सव

* श्री पेदमीवरम तीर्थ में द्विखंडीय त्रिशिखरीय मेघनाद मण्डप सहित वृषभ मंदिर का पांचवां वर्षगाँठ ध्वजारोहण माघ सुद 14 के दिन सैंकड़ों जिन भक्तों की उपस्थिति में सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विधि-विधान एवं पूजा हेतु श्री गुरुजी व श्री विकेशभाई विजयवाड़ा वाले अपने मण्डल सहयोगियों के साथ पधारे एवं पूजा की धूम मचायी।

अमरध्वजा के लाभार्थी परिवार- 1. मूलनायकजी श्री आदिनाथ भगवान- शा. महेन्द्रकुमारजी छगनलालजी कबदी (भीमावर, सायला), 2. श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ भगवान- शा. नथमलजी खुमाजी अंबोगाम चौहान (नरसापुर बागरा), 3. श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान- शा. छगनराजजी नगराजजी बजावत (तणुकु, आहोर)।

---

* **बैंगलुरू।** यहाँ एवेन्यु रोड़ स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी - राजेन्द्रसूरि जिन मंदिर के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती महोत्सव के तहत आयोजित हो रहे रत्नत्रयी महोत्सव के तहत श्री भक्तामर पाठ एवं गुरु गुण इक्कीसा सहित अठारह अभिषेक सह सत्तरभेदी पूजा की गई। इसके बाद आचार्यश्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी व साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी की पावन निश्रा में परमात्मा, गौतमस्वामीजी एवं गुरु महाराज के लाभार्थी परिवारों के सौजन्य से पुण्याहम- पुण्यहम, प्रियन्ताम- प्रियन्ताम... की गूंज के साथ मंदिरजी के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष भंवरलालजी कटारिया ने बताया कि पूरे मंदिर परिसर को फूलों से श्रृंगारित किया गया व धार्मिक एवं अध्यात्मिक उल्लास के साथ यह आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री देवेन्द्रसागरजी ने श्रद्धालुओं को बताया कि आवश्यकता से अधिक धन का संचय करना पाप है। उन्होंने बताया कि कड़ी मेहनत से कमाए धन को व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए। मानव को धन का व्यय परमार्थ के लिए विवेकपूर्वक करना चाहिए।

अंत में बड़ी शांति का पाठ करके सभा का समापन किया गया। ट्रस्टी चंपालाल (ओसी) जैन ने बताया कि विधिकारक सुरेन्द्र गुरुजी एवं विमलभाई द्वारा विधान सम्पन्न कराए गए। संगीतकार विजेश परमार ज्ञानी एवं पार्टी ने अनेक भक्तिमयी प्रस्तुतियां दीं। डूंगरमल चोपड़ा ने बताया कि आचार्यश्रीजी का काम्बली ओढ़ाकर सत्कार किया गया। कार्यक्रम में बतौर अतिथि क्षेत्रीय पार्षद लीला शिवकुमार ने भी भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न व्यवस्थाओं में अखिल भारतीय राजेन्द्र नवयुवक परिषद, महिला परिषद इकाई व मुनिसुव्रत महिला मंडल की सदस्याओं ने सहयोग किया।

*** कुक्षी (स्वस्तिक जैन)।** कुक्षी फागण फेरी ग्रुप द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी फागण फेरी में दादा आदिनाथ भगवान के दर्शन एवं पक्षाल पूजा का लाभ लेकर बड़े आनंद पूर्वक जयंत गिरी शत्रुंजय की छः गांव यात्रा सम्पन्न की। यात्रा तालनपुर तीर्थ से प्रारंभ कर लक्ष्मणीजी शत्रुंजय तीर्थ, शंखेश्वर तीर्थ, मेहसाणा एवम् महुडीजी में दर्शन पूजन का लाभ भक्ति भाव पूर्वक लिया।

*** कुक्षी।** प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथजी के जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः आदिनाथ मंदिर में भक्तों की पक्षाल पूजन के लिए भीड़ लगी रही। पश्चात् साध्वीजीश्री रम्यधर्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में रथ यात्रा सम्पन्न हुई। जगह-जगह गहुंली की गई। तालनपुर तीर्थ में महिला मंडल द्वारा जिनालय में पूजन पढ़ाई गई व लाभार्थी परिवार द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ। शाम को आदिनाथ मंदिर में सामूहिक आरती की गई। शनिवार को बाग से विहार कर साध्वीजीश्री रम्यधर्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का कुक्षी नगर में महावीरजी मंदिर से प्रवेश प्रारम्भ हुआ। जो नगर के प्रमुख मार्गों से छोटे उपाश्रय पहुंचा जहाँ साध्वीजी म.सा. ने मांगलिक फरमाया व प्रवेश सम्पन्न हुआ।

उपवास कर जन्म दिन मनाया

टांडा (धार)। पुण्य सम्राट गुरुदेव आचार्यश्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त, धर्मोत्तेजक परिषद के वरिष्ठ सदस्य श्री जिनेन्द्रजी बांठिया इंदौर (टाण्डा वाले) की 39 वीं वर्धमान तप ओली के निर्विघ्नता पूर्ण सम्पन्न होने तथा 68 वें जन्मदिन (29 फरवरी, लीप ईयर) पर समस्त परिवार रिश्तेदारों के 39 लोगों ने सामूहिक रूप से आयंबिल, उपवास आदि तप कर तपस्या के अनुमोदनार्थ एवं जन्मदिन का अनुपम व अमूल्य उपहार दिया। इंदौर में विराजित पूज्य साध्वीजी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म.सा. व श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा व निश्रा में सम्पन्न इस तपोत्सव पर पूज्य साध्वीजी ने कहा कि पुण्योदय की प्रबलता ही इस प्रकार के अवसर उत्पन्न करती है।

वर्तमान परिस्थितियों में जहाँ लोग अपने जन्मदिन को पाश्चात्य रीति रिवाज से मनाते हैं वहीं श्रावक रत्न स्व. श्री रतनलालजी श्रीश्रीमाल के परिवार ने अपने वरिष्ठ श्री जिनेन्द्र भैया का जन्मदिन आयंबिल, उपवास कर मनाया, जो अनुमोदनीय अनुकरणीय व प्रेरणास्पद है।

ज्ञातव्य है कि श्री जिनेन्द्रजी बांठीया धार्मिक व्यक्ति हैं। प्रतिदिन प्रतिक्रमण सामायिक, पूजन, उपवास, आयम्बिल आदि अन्य धार्मिक क्रियाएँ स्वयं भी करते हैं तथा अन्य लोगों को भी प्रेरणा देते हैं। श्री बांठीया को वर्तमान में वर्धमान तप की 39 वीं लड़ी पूर्ण हुई जिसका पारणा संयोग से 29 फरवरी उनके जन्मदिन पर आया।

जिनेन्द्रजी बाठियां ने इस अवसर पर सर्वप्रथम अपनी जन्मदात्री माता के चरणों का दूध पानी से पक्षाल किया फिर पारणा किया। श्री बांठीया अब लगातार 40 दिन तक आयम्बिल करेंगे तब एक लड़ी पूरी होगी।

सगरावत द्वारा देहदान का निश्चय

मंदसौर। हीरक मित्र मण्डल मन्दसौर के संस्थापक सदस्य श्री शान्तिलाल सगरावत ने होली मिलन कार्यक्रम एवं अपने 81 वें जन्म दिवस के अवसर पर 'देह-दान' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी के अवसर पर देह-दान करने के अपने निश्चय की अभिव्यक्ति की। इस अवसर पर श्री जवाहरलाल जैन 'दक' श्री हस्तीमल चपरोत, श्री सुरेन्द्र दीक्षित, श्री एम.एल. गुप्ता और श्री प्रतापसिंह मारू ने देह-दान की प्रवृत्ति और महत्व पर अपने गहन चिन्तन-मनन और प्रेरणास्पद विचारों को व्यक्त किया। सदस्यों ने श्री सगरावत के इस निर्णय की अनुमोदना कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

रानापुर। श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय यतीन्द्र ज्ञान मंदिर की दूसरी वर्षगाँठ बुधवार को उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। भगवान और गुरुदेव के अभिषेक भगवान की केसर पूजन व आरती का लाभ वीरेन्द्र रतनलाल नाहर परिवार ने लिया। भगवान के पुष्प पूजन व मंगल दीपक आरती का लाभ चन्द्रसेन कटारिया परिवार ने लिया।

गुरुदेव की केसर पूजन का लाभ नितिन राजेन्द्र कटारिया ने, पुष्प पूजन का लाभ कमलेश कटारिया ने लिया। गुरुदेव की आरती का लाभ जितेन्द्र सज्जनलाल कटारिया ने लिया। वहीं पुण्य सम्राट की आरती का लाभ विजय केसरलाल कोठारी परिवार ने लिया। सुबह मन्दिर से बेंड बाजों के साथ वरघोड़ा निकला जिसमें उत्साही युवा, जनता बेंड के भक्ति गीतों पर खूब नाचे और चौराहों पर गरबा किया। वरघोड़े में सबसे आगे धर्मध्वजा लहरा रही थी जिसके बाद समाजजन और फिर रथ जिसमें भगवान मुनिसुव्रत की प्रतिमा विराजमान थी।

नगर के प्रमुख मार्गों से वरघोड़ा निकला, समाज के प्रत्येक घरों से अक्षत और श्रीफल से भगवान की गहुली की गई। वरघोड़ा नगर भ्रमण के बाद मुनिसुव्रत जिनालय पहुंचा।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय की दूसरी वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में श्रीमती विमलाबाई शांतिलाल सालेचा परिवार की ओर से चांदी का सिद्ध चक्र मन्दिर में भेंट किया।

पुण्य सम्राट की तृतीय पुण्यतिथि पर व्यापक आयोजन हुए

मोहनखेड़ा तीर्थ (जयंत म्युजियम)। गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेन-सूरीश्वरजी म.सा. की भावना एवं प्रेरणा अनुसार समर्थ गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयंत सेनसूरीश्वरजी म.सा. की तृतीय पुण्यतिथि प्रसंगे कोरोना महामारी विषम काल परिस्थिति में मानव सेवा निमित्त 1008 असहाय- निर्धन परिवारों को घर पहुंच राशन-मिठाई वितरण का संपूर्ण कार्यक्रम श्री राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री जयंतसेन म्यूजियम मोहनखेड़ा तीर्थ के माध्यम से आयोजित किया गया।

25 आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में लाचार-निर्धन-असहाय- निराश्रित परिवारों के घर-घर पहुंचकर राशन वितरण किया गया, साथ ही पुण्यतिथि निमित्त मिठाई का भी वितरण किया गया। इस वितरण में प्रशासन की ओर से एसडीएम जनपद पंचायत अधिकारी, जनपद पंचायत के सचिव-सरपंच तथा पुलिस प्रशासन का काफी अच्छा सहयोग रहा।

कुछ जगहों पर एसडीएम जनपद पंचायत अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों ने अपनी -अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर इस योजना को काफी सराहा।

जिन परिवारों को राशन किट दी गई, उन परिवार के सदस्यगण बहुत ही खुश होकर दुआएं दे रहे थे। राशन किट वितरण में म्यूजियम ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री राजेन्द्रजी भंडारी, संजयजी हरण, प्रबंधक विनोद जैन, उप प्रबंधक राहुल जैन के साथ ही राजगढ़ परिषद के अध्यक्ष मांगीलालजी मामा, नितिन धारीवाल, प्रणय भंडारी, कीर्ति भंडारी उपस्थित थे।

राशन-मिठाई के लाभार्थी अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी चौधरी, श्री राज

राजेन्द्र जयंतसेन आशादेवी मिलापचंद चेरिटेबल ट्रस्ट, गढ़ सिवाना-बेंगलुरू थे।

पुण्य सम्राट की तृतीय पुण्य तिथि मैसूर परिषद द्वारा दीप प्रज्वलन कर मनाई गई। गुरु गुणानुवाद सभा हुई।

कोरोना वाइरस की महामारी में परिषद परिवार मैसूर द्वारा जरूरतमंद लोगों को घर-घर जाकर राशनकिट का वितरण किया गया एवं गुरु आरती कर कार्यक्रम का समापन हुआ। यह जानकारी शैलेष धाकड़ द्वारा दी गई।

रतलाम। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा के तत्वावधान में लॉक डॉउन के बीच पुण्य सम्राट की तृतीय पुण्यतिथि गुरु जयंत पुण्योत्सव के रूप में श्रीसंघ के प्रत्येक घर में श्रद्धा पूर्वक मनायी गई। परिषद् द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रम में ऑनलाईन प्रतियोगिता रखी गई जिसमें गुरुदेव के साहित्य, प्रश्नपत्र, गहूंली सज्जा, निबंध और सांध्य आरती के साथ ही भक्तामर स्त्रोत, गुरु गुण इक्कीसा, गुरुमंत्र का जाप, आयंबिल, एकासना तप करके कार्यक्रम पूर्ण किये गये। जिसमें समाज के सभी सदस्यों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

हुबली। पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरिजी म.सा. की तृतीय पुण्यतिथि के दिन, लाकडॉउन होने से घर में ही जाप, गुरुगुण इक्कीसा का पाठ एवम् आरती कर मनाई गई।

* **पाटण।** त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की। तृतीय वार्षिक पुण्य तिथि पुण्य सप्तमी का आयोजन मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी म. एवं मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी म. सा. आदि श्रवण एवं श्रमणी भगवंतों की निश्रा में सम्पन्न

हुई। इस प्रसंग पर नगर में विराजमान पंन्यास श्री भव्यदर्शन विजयजी महाराज आदि विभिन्न समुदाय के श्रमण - श्रमणी भगवंतों की पावन उपस्थिति रही। पुण्य सप्तमी निमित्त सुबह 7 बजे भक्तामबर स्तोत्र, गुरु गुण इक्कीसा पाठ, 9 बजे नवकार महामन्त्र का भाष्य जाप, 10 बजे से 1 बजे तक गुरु गुणानुवाद हुए एवं सुबह - शाम आरती आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। शाम को 6 बजे गुरु भक्ति और 108 दीपक की रंगोली की गई। पुण्य सप्तमी निमित्त पाटण में विराजमान त्रिस्तुतिक समुदाय के श्रमण-श्रमणी भगवंतों ने आयंबिल उपवास अठ्ठम आदि की तपस्या एवं साध्वीश्री कुमुदप्रियाश्रीजी म.सा. ने मौन पूर्वक अठ्ठाई की तपस्या की। पाटण त्रिस्तुतिक जैन संघ के सदस्यों द्वारा एकत्रित की गई राशि को पुण्य सप्तमी के दिन आर्थिक रूप से कमजोर साधर्मिक भाई-बहनों को वितरण की गई।

* **धार।** साध्वी श्री अमितदृष्टाश्री म.सा. की प्रेरणा से अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद, शाखा-धार द्वारा अधिक से अधिक संख्या में घर-घर सामायिक का आयोजन करवाया गया। जिसके तहत 21 दिन में 3006 सामायिक हुईं।

* **हुबली।** पुण्य सप्तमी के पवित्र पर्व पर लॉकडाउन होने से घर में ही जाप, गुरुगुण इक्कीसा का पाठ एवम् आरती कर मनाई गई। नन्हें-मुन्हें बच्चों ने साहेबजी का जयकार किया। सभी ने इस अवसर पर एक साथ सामायिक की। इस अवसर पर 'अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक' एवं 'महिला परिषद' के सदस्य उपस्थित थे।

– निलेश जैन

* **राणापुर।** पुण्य सम्राट की तीसरी पुण्य तिथि पर आचार्य देव नित्यसेनसूरी की प्रेरणा से श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक (ओसवाल) परिषद के मीडिया प्रभारी अवि सुरेश ने अपने घर पर ही गुरुदेव की तस्वीरों को आकर्षक ढंग से सजाया। तहसीलदार रविन्द्र चौहान ने आकर नमन करते हुए दीप प्रज्ज्वलन किये। इस अवसर पर टी.आई दिनेश भवर, स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख डॉ. गनपत चौहान एवम् तहसीलदार रविन्द्र चौहान का सुरेश, जानकीलाल जैन एवं अन्नू जैन ने तिलक शाल और श्रीफल से सम्मान किया। पश्चात् स्व. ओम प्रकाश जैन पत्रकार परिवार के पंकज अनिल जैन द्वारा शहर के 3 दर्जन से अधिक सफाई कर्मी एवं दरोगाजी का पुष्प अर्पित कर सम्मान करते हुए स्वल्पाहार कराया।

प्रेरणादायी सादगीपूर्ण अनोखा विवाह

मुंबई। लॉकडाउन के चलते जैन समाज द्वारा बिल्कुल सादगी भरा विवाह देखने को मिला। इस समारोह में ना तो बैंड - बाजे और ना ही कोई बड़ा टेंट लगवाया गया। दूल्हा-दुल्हन की ओर से उनके माता-पिता व पंडितजी ने उपस्थित रहकर वधु के गृह आंगन में विवाह की रस्म पूरी की। समाजसेवी श्री जे.के. संघवी ने बताया कि उनके पौत्र राज महेन्द्र संघवी की शादी करीबन 6 महीने पूर्व तय हो चुकी थी।

लेकिन वर्तमान में कोरोना वायरस को लेकर पूरा देश संतप्त है। प्रशासन द्वारा किए गए लॉकडाउन को मद्देनजर रखकर दोनों परिवारों ने निर्णय लिया कि वर्तमान में समय के साथ चलते हुए हमें शादी बिना आडंबर व दिखावे के सादगीपूर्ण रूप से करनी है।

इसी भावना को ध्यान में रखकर प्रशासन से अनुमति लेकर उनके सारे आदेशों का पालन करते हुए मास्क, फिजिकल डिस्टेंस इत्यादि का उपयोग करते हुए मात्र वर-वधु के माता-पिता व पंडितजी की उपस्थिति में 2 मई को विवाह सम्पन्न हुआ। इस प्रकार संघवी परिवार ने अपने पौत्र राज महेन्द्र संघवी (थाणे-आहोर) का विवाह सौ.का. रूपाली गौतमजी बाफना((कोरा- भीनमाल-मुंबई) के साथ सम्पन्न कर क्रांतिकारी कदम उठाया है।

कु. प्रियल को सुयश

खाचरौद। माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा 10 वीं बोर्ड परीक्षा में श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर की छात्रा कु. प्रियल अभयकुमार जैन ने 98.66 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राज्य मेरिट लिस्ट में नवम स्थान प्राप्त किया।

इसी स्कूल की छात्रा कु. प्रियांशी भेरूलाल गरगामा ने 97 प्रतिशत एवं दर्शिका संजय यादव ने 90.33 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। विद्यालय के 12 वीं वाणिज्य के छात्रों का परिणाम भी शतप्रतिशत रहा।

राजेन्द्र शोध संस्थान-चार हफ्ते में किया 113 लोगों को क्वोरेनटाईन

उज्जैन। सेवा का पर्याय और जैन समाज का गौरव बन चुका है। उज्जैन का श्री राजेन्द्र शोध संस्थान जिसे उज्जैन प्रशासन द्वारा कोरोना का क्वोरेनटाईन सेंटर बनाया गया है और अब तक 113 व्यक्तियों को यहाँ पर क्वोरेनटाईन किया जा चुका है। कुछ लोगों की कोरेना रिपोर्ट पॉजेटिव आने पर उनको यहाँ से चिकित्सालय शिफ्ट किया गया है। पुण्य सम्राट श्रीमद् जयंतसेन सूरिश्वरजी द्वारा स्थापित राजेन्द्र शोध संस्थान, उज्जैन ने इस महामारी के कठिन समय में योगदान दिया है और सही मायनों में मानव सेवा का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

इस संस्थान के 36 कमरों में उन लोगों के परिवार को रखा जा रहा है जो पोजेटिव पाए गए उन परिवारों को संक्रमण का खतरा अधिक होने की वजह से उन्हें यहाँ क्वोरेनटाईन करके अन्य लोगों को संक्रमित होने से बचाया जा रहा है। उन परिवारों को यहाँ पौष्टिक आहार, गर्म पानी व चिकित्सा सेवा दी जा रही है जिससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े चिकित्सक और मेडिकल टीम भी यहाँ तैनात है।

संस्थान के अध्यक्ष पारस जैन (विधायक- उज्जैन उत्तर व पूर्व मंत्री), सचिव सुशील गिरिया व समस्त ट्रस्ट मंडल की पहल से ही इस संस्थान को कुछ हफ्तों पूर्व प्रशासन को सौंपा गया था, जिसके बाद उज्जैन कलेक्टर द्वारा जैन समाज के इस संस्थान को क्वोरेनटाईन सेंटर बनाने का आदेश दिया गया और प्रशासन ने भी ट्रस्ट मंडल को धन्यवाद प्रेषित किया। वर्तमान गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री नित्यसेन सूरिश्वरजी और आचार्य श्रीमद् जयरत्न सूरिश्वरजी के आशीर्वाद से इस संस्थान को कोरोना की इस महामारी से जूझ रहे उज्जैन शहर की सेवा करने का मौका मिला। निश्चित ही जैन समाज के लिए ये गौरवपूर्ण है।

* **रतलाम।** परिषद द्वारा कोरोना महामारी के निवारणार्थ अखंड नमस्कार महामन्त्र जाप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। परिषद के राष्ट्रीय सहमंत्री व परिषद उपाध्यक्ष राजकमल दुग्गड़, पूर्व अध्यक्ष अभय सकलेचा, कांतिलाल दुग्गड़, सुनील गांधी आदि ने जाप किये।

* **हुबली।** कोरोना काल में प्रशासन की अनुमति से दान-दाताओं ने रोड़

पर घूमने वाली गायों के लिए सुबह रोटी, कुत्तों के लिए बिस्किट एवं शाम को घांस खिलाने का कार्य किया। परिषद सदस्य गुणवंत जैन एवं कैलाश जैन ने बताया कि परिषद लॉकडाउन के पूर्व भी प्रति रविवार और पूनम के दिवस भी रोटियां और बिस्किट खिलाते आ रहे हैं।

– संजय सेठ

* विश्वविख्यात श्री नाकोड़ा तीर्थ द्वारा कोरोना महामारी के दौरान चल रहे लॉकडाउन में गौवंश के संरक्षण हेतु विभिन्न गौशालाओं में आवश्यकता अनुसार चारे की गाड़ियां भिजवाई गई हैं।

श्री नाकोड़ा तीर्थ द्वारा कोरोना महामारी के दौरान चल रहे लॉकडाउन में कोरोना वॉरियर्स के रूप में कार्य कर रहे आर.ए.सी. के जवानों एवं पुलिस के जवानों के लिये इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए केमफोरा डायलुशन की 200 बोटल एडिशनल एस.पी. श्री नरपतसिंहजी को उपलब्ध कराई गई।

* चैहटन शहर के समीपवर्ती तलहटी में विरात्रा रोड़ पर लगभग 40 बीघा भूभाग पर उदीयमान हो रहे लब्धिनिधान तीर्थ में निर्मित गृहमंदिर की द्वितीय वर्षगांठ पर 26 जून को एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

* बड़नगर में मूक पशुओं की सेवा की गई। नवयुवक परिषद के अध्यक्ष श्री मनोज ओरा तथा सचिव साकेतगाम के अनुसार 50 से अधिक दिनों से मूक पशुओं को प्रतिदिन रचका व शवानों को रोटियाँ खिलाई गई। गोधन को 11 हजार से अधिक रचका की पिण्डियां तथा श्वानों को रोटियाँ खिलाई गई। यहाँ विराजित साध्वी श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म. की शुभ प्रेरणा से समाज तथा परिषद के जनों ने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

---

* बेंगलुरू। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन परिषद के आह्वान पर वैश्विक महामारी कोरोना के निवारणार्थ सामूहिक उवसग्गहरण स्तोत्र जाप महाअनुष्ठान का आयोजन देश के विभिन्न शहरों में रविवार को किया गया। परिषद की युवा इकाई

बेंगलुरू के अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने बताया कि सोशल डिस्टेंस के साथ इसमें प्रकाश बालर, महिला परिषद की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती प्रेमाबेन गांधीमुथा, मधुबाला एवं अन्य भक्तगण उपस्थित रहे। चोपड़ा ने बताया कि पार्श्वप्रभु एवं गुरुदेवश्री के छाया चित्र पर माल्यार्पण पूजन के साथ यह कार्यक्रम हुआ।

---

* अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद 'रतलाम शाखा' द्वारा निराश्रित लोगों को विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से प्रतिदिन सुबह-शाम दिए जाने वाले भोजन के पैकेट के साथ 'महावीर जन्मकल्याणक के शुभ प्रसंग पर मिठाई का वितरण परिषद परिवार द्वारा किया गया। अभी तक लगभग 15000 भोजन पैकेट का वितरण हो चुका है और सेवा निरंतर चालु रहेगी।

* मैसूर में अखिल भारतीय राजेन्द्र नवयुवक परिषद शाखा मैसूर के तत्वावधान में क्यातमनहल्ली में जरूरतमंद लोगों को राशन सामग्री वितरित की गई इस अवसर पर परिषद के अध्यक्ष मंगलचंद जैन, सचिव शैलेश धोकड़, अशोक गोवाणी, गुलाबचंद जैन, मदनलाल हरण, अशोक वोहरा, अमृत राठौड़ जामतराज आदि मौजूद रहे।

* करवड़। नगर में 16 मार्च को कोरोना वायरस महामारी से मुक्ति के लिये श्रीसंघ ने सामूहिक नवकार मंत्र तथा उस्सग्गहरं के जाप रखे। नवपद ओली की आराधना की गई। 22 मार्च को अपने-अपने घरों पर नवकार महामंत्र का एक घंटे की लड़ी के जाप किये। दिनांक 14 अप्रेल को भी सभी ने जाप किये। श्री महावीर जन्म कल्याणक 6 अप्रैल के दिन प्रातः घरों पर थाली, घंटी बजाये गये। प्रभु का चित्र विराजमान कर पूजन की। श्री जवाहरलालजी भंडारी के घर पर पालनाजी हाथ से बनाये गये। सभी ने पालनाजी झुलाये व जन्म महोत्सव मनाया। शाम को आरती हुई। घरों पर दीपक लगाये गये। पुण्य सम्राट की तृतीय पुण्यतिथि पर भी कार्यक्रम प्रतियोगिताएँ हुई। सामायिक एकासना, आयंबिल किये गये। गुरु मंदिर पर सुन्दर रांगोली बनाई गई। नवयुवक, महिला, बालिका परिषदों ने उत्साह से भाग लिया।

– ललित जैन

अ.भा. श्रीसंघ की राष्ट्रीय बैठक सम्पन्न

पालीताणा। दिनांक 15.12.2019 रविवार को अ.भा. सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के पदाधिकारियों व कार्यकारिणी की मीटिंग श्री वाघजीभाई वोरा की अध्यक्षता एवं श्री चैतन्यजी काश्यप (परामर्शदाता) की उपस्थिति में यतीन्द्र भवन धर्मशाला-पालीताणा में सम्पन्न हुई जिसमें संघ हित में निर्णय लिये गये।

बैठक के द्वितीय सत्र में पट्टधरद्वय गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा आचार्य देव श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. विद्यमान हुए। दोनों ने संघ एकता तथा पुण्य सम्राट के स्वप्न साकार करने पर बल दिया। पूज्य गच्छाधिपतिश्री साहब ने फरमाया कि श्रीसंघ द्वारा लिये गये निर्णय को वे पूर्णतः मान्य करते हैं तथा उनका कार्यान्वयन करेंगे। पूज्य आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. ने फरमाया कि वे पू. गच्छाधिपति सा. की घोषणा से अक्षरशः सहमत हैं।

बैठक का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा (मंदसौर) ने किया। बैठक में सर्वश्री चेतन्यजी काश्यप (राष्ट्रीय परामर्शदाता), ओ.सी. जैन (सायला /बैंगलोर), सेवन्तीभाई मोरखिया (थराद/मुंबई), चंद्रकांतभाई वोरा (थराद/अहमदाबाद), जे.के. संघवी (थाणा/आहोर), वोहेरा शशिकांतभाई हीरालालजी (थराद/अहमदाबाद), दोशी रसिकलाल छोटालाल भाई, मांगीलालजी जैन, सूर्यप्रकाशजी भंडारी (चैन्नई), पारसमलजी जैन (दिल्ली), शांतिलालजी दसेड़ा (जावरा), रमेशभाई बचुभाई धरू (मुंबई), रमेशभाई वोरा (नड़ियाद), जगदीशभाई वी.शाह (आणन्द), नरेशभाई नारायणलाल देसाई (थराद), हीराभाई वेदलिया, शांतिलालजी सोलंकी (बैंगलोर), चीनुभाई मोरखिया (अहमदाबाद), नेमीचंदजी छगनराजजी गोवाणी (चौराऊ), चंदुभाई डाह्यालाल भाई कोरड़िया (डीसा), धरू श्री धीरूभाई चिमनलाल (आणंद), वीरेन्द्रजी वर्धमानजी राठौर (बड़नगर), मुकेश कुमारजी जैन (झाबुआ), तिलोकचंदजी बालड़ (बैंगलोर), अमृतलालजी जैन (बाग), सुनीलजी जैन डैडी (बाग), जवाहलालजी जैन काकड़ीवाला (अलिराजपुर), बाबुलालजी केशरीमलजी जैन मामा (राजगढ़), वोहरा विपिनभाई शांतिलालभाई मोरखिया, प्रवीणकुमार मोहनलालजी आदि ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया। महामंत्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा (मंदसौर) ने बैठक के निर्णयों पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोरा

ने समाज/श्रीसंघ में व्याप्त विभिन्न विचारों के मध्य एकता व संगठन को प्रबलता से बनाये रखने पर जोर दिया। अंत में ओ.सी. जैन ने आभार प्रदर्शन किया।

अदाणी परिवार का आदर्श

अहमदाबाद। कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न संकट के समय समाज के कई साधार्मिक परिवार जरूरतमंद की स्थिति में आ गये तथा उन्हें अपने आवश्यक पारिवारिक खर्च चलाने में भी कठिनाई अनुभव होने लगी।

इस गंभीर समय में भारत के अग्रणीय उद्योगपति तथा थराद संघ के श्रेष्ठीवर्ग अदाणी परिवार (श्रीमती शांताबेन शांतिलालजी भूदरमलजी अदाणी) ने चार सौ. साधार्मिक परिवारों प्रत्येक की 51 हजार रुपये से साधार्मिक भक्ति करने का आदर्श उपस्थित किया है।

इस परिवार के पांचों भाई श्री महासुखभाई, श्री विनोद भाई, श्री बसंतभाई, श्री गौतमभाई तथा राजेशभाई अदाणी की इस उत्कृष्ट भावना ने पुण्यार्जन किया है साथ ही कष्ट में आये साधार्मिक भक्तों का जीवन सरल बनाया है। त्रिस्तुतिक परम्परा के गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. तथा जैनाचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने अदाणी परिवार के इस आदर्श योगदान को इतिहास की अनुकरणीय तथा अनुमोदनीय घटना बताया है।

अ.भा. श्री सौधर्मबृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता विधायक श्री चेत्यन्यजी काश्यप, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, उपाध्यक्ष श्री शांतिलालजी रामानी, महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी हीराणी तथा महामंत्री श्री सुधीरजी लोढ़ा ने अदाणी परिवार की इस उदारता की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। त्रिस्तुतिक परम्परा के गच्छाधिपति जैनाचार्यश्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म. तथा जैनाचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. ने अदाणी परिवार के इस आदर्श योगदान को इतिहास की अनुकरणीय तथा अनुमोदनीय घटना बताया है।

* राणापुर (ललित जैन)। कोरोना वायरस के चलते महावीर जन्मकल्याणक अपने-अपने घरों पर मनाने के सकल जैन समाज के निर्णय के चलते राणापुर में श्वेताम्बर, दिगम्बर दोनों समाज के धर्मावलम्बियों ने अपने-अपने घरों पर सुबह थाली, घण्टी आदि बजाकर शंखनाद किया। घरों में घर देरासर

सजाकर प्रभु की फोटो के समक्ष भक्ति की आरती की।

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवम् अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार की ओर से गोशाला में गो ग्रास हेतु राशि दी। कोरोना वायरस में ड्यूटी पर मुस्तेदी से जुटे पुलिसकर्मी, स्वास्थ्य कार्यकर्ता एवम् सफाई कर्मियों को दोपहर में फल एवं नमकीन का नाश्ता करवाया गया। कई जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री पैकेट लाभार्थी परिवार की ओर से वितरित किये गये। अनेक घरों के ओटलों पर रंगोली बनाई गई। यतीन्द्र जयंत पाठशाला की बालिका नेहा शैलेन्द्र कटारिया एवं दिव्यांश अभय कटारिया ने कपड़े पर भगवान महावीर स्वामी की आकर्षक पेटिंग बनाई। दिलीप सालेचा ने आकर्षक सज्जा कर घर, देरासर बनाया। शाम को सभी जैन समाज के घरों पर दीप प्रज्ज्वलित किए गए। घरों में आरती की एवं रात्रि में भक्ति का आयोजन किया।

* महिदपुर रोड़ पर लॉकडाउन के कारण सादगी से श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। जुलूस स्थगित रहा। प्रातः सभी जैन परिवारों ने अपने घरों पर खड़े होकर पांच मिनिट थाली, घंटी आदि बजाये। घरों पर परमात्मा श्री महावीर स्वामी की दर्शनीय प्रतिमा या फोटो लगाकर, धूप, दीप से पूजन की गई। मंगल प्रार्थनाएं तथा रात्रि को पाँच दीपक अपने-अपने घरों पर प्रज्ज्वलित किये। घरों पर दिनभर तप-जप चलते रहे। घरों पर रांगोली बनाई गई।

– सचिन भंडारी

जापान के नागानोकेन शहर में

नागानोकेन (जापान)। जापान के इस शहर में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से नव दिवसीय नवकार आराधना और पारणे का कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कोरोना महामारी की इस मुश्किल घड़ी में भी हर साल की तरह नवकार आराधना हो पायी। ये सब पुण्य सम्राट गुरुदेवश्री के आशीर्वाद से ही हो पाया है। इस बार नवकार आराधना में 135 लोग थे। 135 लोगों ने एकासने किये इसमें 2 साल और 4 साल के बच्चे भी थे। जापान में गुरु भक्तों को सुख शान्ति और सब कुछ दिया है गुरुदेव श्री ने।

दुखद निधन

आहोर। स्व. श्रीमती समदादेवी हस्तीमलजी बागरेचा का स्वर्गवास दिनांक 22.02.2020 को आहोर के 'मुक्ति विहार' तीर्थ में हुआ। आपकी उम्र 93 साल की थी। आपका स्वर्गवास वृद्धावस्था में हुआ। आप श्री ने स्वद्रव्य से पालिताणा तीर्थ में 99 यात्रा करवाने का लाभ लिया। आप श्री ने जीवनकाल में 2 'वरसीतप' व अनेक तपस्या की। आप श्री देवगुरु के प्रति समर्पित थीं। आपश्री के पीछे भरापूरा परिवार है। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले। आपके सुपुत्र मुथा संघवी हुकमीचंद देवीचंद बागरेचा परिवार आहोर हैं।

श्री रमणीकलालजी तलेरा को विभिन्न संस्थाओं ने दी श्रद्धांजलि

उज्जैन। हंसमुख, मिलनसार एवं सरल, सौम्य प्रवृत्ति वाले श्री रमणीकलालजी तलेरा का निधन संघ समाज और परिषद की एक अपूरणीय क्षति है। आप अत्यंत विनोदप्रिय व्यक्तित्व के धनी थे। स्थानीय उज्जैन की विभिन्न संस्थाओं से जुड़े श्री रमणीकलालजी परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व समाज संघ के अग्रणी श्री पारसजी जैन के अग्रज थे। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के अनन्य भक्त श्री रमणीकलालजी पिछले अनेक वर्षों से पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में नवकार आराधना करते रहे तथा लगातार 40 वर्षों तक नवकार आराधना समिति में कोषाध्यक्ष पद पर रहे। नवकार मंत्र आराधना के कारण सम्पूर्ण देश भर के तीर्थों व नगरों की यात्रा करली। हजारों हजार आराधकों से आपका जीवित सम्पर्क रहा। एक परमभक्त, निष्ठावान, संघ-समाज के अग्रणी का देहवसान स्तब्ध कर गया। पूज्य गच्छाधिपतिजी व आचार्यदेवेश सहित मुनिभगवंतों व साध्वीजी ने अपने संदेश में लिखा-एक परम का दैहिक गमन यद्यपि क्षति है तथापि आत्मा नवकारमयी रही। सभी ने परिवारजनों को सांत्वना देते हुए उनके बताये विशेषकर आराधना के मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा दी।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक

परिषद, स्थानीय नमकमण्डी व नयापुरा जैन श्रीसंघ, महिला परिषद, तरुण परिषद, अवन्तिका पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट, श्री मणीभद्र स्वामी भेरोगढ़ ट्रस्ट, स्थानकवासी श्रीसंघ, अनाज उपज मण्डी नवकार आराधना समिति, म.प्र.श्रीसंघ, परिषद तथा विभिन्न संस्थाओं ने श्री रमणीकलालजी तलेरा के निधन पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया।

देशभर से सैंकड़ों नवकारमंत्र आराधकों के शोक संदेश भी प्राप्त हुए। संघ के अग्रणी श्री वाघजीभाई व्होरा, श्री ओ.सी. जैन, श्री शांतिलालजी रामाणी, श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, श्री कांतिलालजी भण्डारी, श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, नवकार आराधक श्री जवाहरजी काकड़ीवाला, श्री अनिल जैन, श्री राजेश वनवट, श्री ज्ञानचन्द मेहता, श्री अशोक लुक्कड़, श्री मांगीलालजी मूथा, श्री प्रकाश हिराणी, श्री रमेशजी टांक, श्री रमेशजी धारीवाल सहित विभिन्न नगरों के अग्रगणों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्री रमणीक लालजी तलेरा की पावन स्मृति में परिवार ने विभिन्न संस्थाओं के साथ शाश्वत धर्म तथा नवकार आराधना समिति को नकद राशी भेंट की। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, शाश्वत धर्म परिवार की ओर से श्रद्धाजंलि।

सुगनबाई तातेड़ का स्वर्गवास

इन्दौर। परम गुरु भक्त, नवकारमंत्र आराधिका, तपस्वी श्रीमती सुगनबाई-गेंदालालजी तातेड़ (गुप्ता) का 97 वर्ष की आयु में 'नमो सिद्धाणं' का जाप करते हुए देहावसान हो गया। इसके पूर्व आपने संथारा कर पच्चक्खाण ले लिये थे।

मूलतः काछीबड़ोदा का तातेड़ परिवार व्यवसाय की दृष्टि से रतलाम फिर इंदौर आया। मातृत्व धर्म निभाते हुए बच्चों को धार्मिक-व्यवहारिक शिक्षण के साथ उचित संस्कार दिये। पारिवारिक जवाबदारी के साथ मानव जीवन की सार्थकता हेतु नित चिंतन करते। आप नियमित रूप से व्रत नियम, प्रभुपूजन सामायिक प्रतिक्रमण देववंदन करती थीं।

पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिजी म.सा. की निश्रा में शत्रुंजय, गिरनार, सम्मेद शिखर तथा अनेक तीर्थों की छःरि पालक पैदल यात्रा की। गुरुदेव की निश्रा में प्रतिवर्ष नवकारमंत्र आराधना करती थीं। उन्हीं की निश्रा में उपधानतप, नवाणुयात्रा शाश्वत ओली और मोहनखेड़ा में चातुर्मास किया।

गुरुदेव की प्रेरणा से श्रेणीतप, सिद्धीतप, मासक्षमण, अठाई सोलभता तथा विभिन्न तप आराधना कर आत्मा को निर्मल बनाया। अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आपने धर्म आराधना नहीं छोड़ी। आपके द्वारा संस्कारित आपके बेटे श्री प्रकाशजी, रमेशजी (आर.के.

जैन) संघ-समाज में ट्रस्टी रहते हुए अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। आपके परिवार द्वारा इन्दौर-उज्जैन मार्ग हाइवे पर पंथ पिपलाई में मंदिर उपाश्रय निर्माण हेतु भूमि दान की गई। आपकी स्मृति में परिवारजनों ने भक्ति महोत्सव रखा। गुणानुवाद सभा में भाई श्री अनिल सुराणा, अशोकजी श्रीश्रीमाल एवं मोहितजी तातेड़ ने उनके गुणों का बखान कर श्रद्धाजंलि अर्पित की।

– अशोक श्रीश्रीमाल

श्री शांतीलालजी व्होरा नहीं रहे

इन्दौर। परम गुरुभक्त, समाजसेवी, दानवीर श्रद्धेय श्री शांतीलालजी व्होरा का पिछले दिनों स्वर्गवास हो गया। नाकोड़ा रेस्टोरेंट के नाम से सुविख्यात श्री व्होराजी गुमास्तानगर श्रीसंघ में अग्रणी थे। गुमास्तानगर श्रीसंघ एवं वहाँ श्री सीमंधर जिनालय श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर निर्माण में आपकी श्रेष्ठतम भागीदारी रही। जयंतसेन एस.पी. शाह आराधना भवन एवं उपाश्रय में भी आप आगे बढ़कर लाभ लेते थे। कई वर्षों तक गुमास्तानगर से पर्युषण पर्व पर बड़े तप आराधकों का नाकोड़ाजी तथा आसपास की तीर्थ यात्रा संघ निकालते थे। शुन्य से शिखर की कहानी रही श्री व्होराजी की। उज्जैन में हलवाई- हाट बाजार से आरम्भ जीवन यात्रा इंदौर में कचोरी के ठेले में परिवर्तित हो गई। एक लम्बे समय तक परिवारजनों के साथ मिलकर संघर्ष की गाथा लिखते रहे। परिश्रम, पुरुषार्थ और देव-गुरु धर्म में अटूट विश्वास से आज संघ - समाज व नगर में एक प्रतिष्ठित मुकाम पाया। आप संघ में लगभग प्रतिवर्ष स्वामी वात्सल्य का लाभ लेते रहते थे।

धार के समीप ककालपुरा स्थित आश्रम में कमरे बनवाये तथा प्रतिवर्ष बच्चों को भोजन तथा अन्य सामग्री का वितरण करते थे। इसी तरह ब्राह्मणनगर में देवीजी का मंदिर निर्माण कराया। वहां इन्हें मामाजी के नाम से याद करते हैं। आपके पुत्र श्री धरमचन्द्रजी व्होरा, इन्दौर के श्री सीमंधरस्वामी जिनालय के संस्थापक अध्यक्ष, म्यूजीयम, पालीताणा यतीन्द्र भवन व परिषद के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हैं।

आपके निधन पर गच्छाधिपति श्रीमद् नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. तथा साधु-साध्वीजी के संदेश प्राप्त हुए जिसमें नमस्कार महामंत्र से जुड़े रहने को कहा। वहीं संघ से सर्वश्री वाघजीभाई, शांतिलाल रामाणी, रमेशजी धरू, सुरेन्द्रजी लोढ़ा के शोक संदेश मिले। सर्वश्री पारसजी जैन, रमेशजी धारीवाल, अशोक श्रीश्रीमाल, सुशीलजी गिरिया तथा विभिन्न संस्थाओं के प्रमुखों ने स्वयं उपस्थित होकर श्रद्धाजली अर्पित की।

श्री नलिनीजी संघवी का गिरनार पर्वत पर देहावसान

नागपुर। चैत्र वदी सप्तमी आयंबिल के तप के साथ गिरनार तीर्थ बचाओ अभियान में गुजरात से तीर्थ संघ यात्रा में सक्रिय यात्री का 15 मार्च को गिरनार की यात्रा कर उतरते समय निधन हो गया उनका चैत्र वदी अष्टमी भगवान अदिनाथ के जन्म कल्याणक दिवस पर गिरनार तीर्थ पर ही अंतिम संस्कार किया गया। श्री नलिनजी संघवी के देहावसान के समाचार जानकर पूरा समाज स्तब्ध रह गया। रतलाम अधिवेशन में भाई नलिनजी पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. व श्री चेतन्यजी काश्यप के सुझाव पर अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में नियुक्त किये गए थे जिन्हें पिपलौदा अधिवेशन में पुनः नियुक्ति दी जो आज तक थी। आपका धर्म, परिषद, संघ व समाज के प्रति बेहद लगाव रहा। नागपुर जैसे क्षेत्र जहाँ परिषद की आसपास कोई गतिविधियाँ अथवा मान्यता वाले लोगों का अभाव है वहाँ परिषद के बैनर तले स्थानीय संघ में कार्य कर गच्छ व परम्परा व परिषद का नाम रोशन किया। पिछले वर्ष नागपुर एयरपोर्ट से होने वाले विदेशों में मूक पशुओं के निर्यात को विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर पुरजोर विरोध कर बंद करवाने में नलिनजी की विशेष भूमिका थी। पिछले माह अहमदाबाद में

विराजित कैंसर से पीड़ित एक साध्वीजी भगवंत की छिंदवाड़ा से दवाई लाने में अहमदाबाद के भरतभाई लाडू को काफी सहयोग किया। आप परिषद के कार्यों और मीटिंग्स में उपस्थित रहकर अपने महत्वपूर्ण सुझाव देते थे। स्थानीय नागपुर संघ समाज में भी आप बहुत सक्रिय थे। संगीत मंडल में भी आपकी सक्रियता थी। आप सोश्यल मीडिया पर भी सक्रिय थे। आज जब कि पुण्य सम्राट की पुण्य तिथि वदी सप्तमी है गिरनार जैसी पावन तीर्थ भूमि जहाँ आने वाली चौवीसी के सभी तीर्थंकर मोक्ष जावेंगे ऐसे स्थान पर पवित्र भावनाओं के साथ देह का विसर्जन उच्च गति की ओर जाने का संकेत है। प्रभु व गुरुदेव से प्रार्थना है उन्हें उच्चगति प्राप्त हो। मैं श्री नलिनभाई को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। आप रतलाम निवासी श्री विनोदजी संघवी के भाई थे।

– अशोकश्रीश्रीमाल, इंदौर

श्री अचलचन्दजी वेदमुथा (जैन) का दुखद निधन

श्री अचलचन्दजी वेदमुथा (जैन), निवासी सायला का दुःखद देहावसान हो गया है। वे प्रसिद्ध लेखक एवम् गुरुभक्त समाजसेवी थे। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के उपाध्यक्ष तथा राजस्थान परिषद के अध्यक्ष पदों पर रहे। उनका पूरा जीवन शिक्षा अधिकारी के रूप में व्यतित हुआ और सेवानिवृत्ति पश्चात वे निजी व्यय से अनुकम्पा दान की गतिविधियों को संचालित कर रहे थे। उनके स्वर्गवास से त्रिस्तुतिक श्री संघ एवं राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के समुदाय को अपूर्णीय क्षति का सामना करना पढ़ा है। श्रीसंघ, परिषद परिवार एवम् शाश्वत धर्म की ओर से हार्दिक श्रद्धाजंली।

रजत रश्मि

- 2700/- श्री रमणीकलालजी तलेरा उज्जैन की स्मृति में तलेरा परिवार उज्जैन की ओर से शाश्वत धर्म को सहायतार्थ भेंट ।
- 3100/- मुथाजी हुक्मीचंद हस्तीमलजी वागरेचा आहोर (जिला-जालोर) की ओर से शाश्वत धर्म (मासिक) को सप्रेम भेंट ।

चातुर्मास को सार्थक बनाने के लिए व्यक्तिशः कम से कम निम्नलिखित दृढ़ संकल्प होने चाहिए।

(1) प्रतिदिन एक सामायिक करना ।
(2) नियमित प्रवचन सुनना ।
(3) पखवाड़े में कम से कम एक उपवास का आयंबिल करना ।
(4) निश्चित पृष्ठों का प्रतिदिन स्वाध्याय करना ।
(5) विशेष तिथियों एवं पर्वों पर विशेष संयम एवं त्याग करना ।
(6) रात्रि भोजन नहीं करना ।
(7) कम से कम पक्खी का प्रतिक्रमण अवश्य करना ।

परिषद प्रांगण से

ज्ञानपीठ के नये केन्द्रों की स्थापना

अर्थ सहित भावार्थ समझकर अध्ययन करने से ज्ञानवान बनते हैं– श्री पोरवाल

महिदपुर। आज के नौनिहाल कल समाज के भविष्य हैं। पढ़ने व रटने से सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। अर्थ सहित भावार्थ को समझकर अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करके हमें ज्ञानवान बनना है। ज्ञानार्जन कर समाज को गौरवान्वित करना है। उक्त विचार अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्रीमती संगीता पोरवाल ने राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में यतीन्द्र जैन ज्ञान पीठ व श्रुत ज्ञानार्जन योजना पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए श्री राजेन्द्र महिला मण्डल के सदस्यों व विश्वतारक श्री राजेन्द्रसूरि पाठशाला के बच्चों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। महिला परिषद की प्रांतीय शिक्षामंत्री आभा दुगड़ ने विद्यार्थियों से अधिकाधिक संख्या में जुड़कर ज्ञानार्जन करने का आह्वान किया। परिषद के मार्गदर्शक माणकलाल छाजेड़ ने कहा कि प.पू. गुरुदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने 60 वर्ष पूर्व परिषद की स्थापना की थी तथा राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने परिषद को वटवृक्ष का रूप प्रदान किया है। आज देशभर में नवयुवक, महिला, तरुण व बहुपरिषद की सैंकड़ों शाखाओं के माध्यम से हजारों सदस्य समाजसेवा के कार्यों में जुटे हुए हैं।

इस अवसर पर यतीन्द्र जैन ज्ञान पीठ की स्थापना की गई जिसमें तीन सदस्यों को संचालक मण्डल में मनोनीत किया गया। संगीता मोदी को केन्द्राध्यक्ष बनाया गया व आरती बांठिया व अभय

धाड़ीवाल को संचालक मण्डल में लिया गया।

महिला परिषद की प्रदेश महामंत्री पुष्पा कोचर, महिला परिषद मंदसौर की अध्यक्ष सुनीता खाबिया, नवयुवक परिषद के प्रांतीय पर्यावरण मंत्री विनोद पोरवाल, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य नरेन्द्र धाड़ीवाल, शाखा अध्यक्ष श्रेणिक सकलेचा आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत महिला मण्डल की ओर से किया गया। संचालन संगीता मोदी व आभार आरती बांठिया ने व्यक्त किया।

– नरेन्द्र धाड़ीवाल

* रोजाना नगर में यतींद्र जयंत ज्ञानपीठ का केन्द्र स्थापित किया एवं श्रुत ज्ञानार्जन योजना के संबंध में चर्चा करने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री संगीताजी पोरवाल प्रांतीय वैय्यावच्च मंत्री सारिकाजी कोलन पधारे रोजाना के वरिष्ठ जन पाठशाला के बच्चे व शिक्षिका उपस्थित थे। साथ ही नेहाजी की छट्ठ सात यात्रा साता पूर्वक होने पर बहुमान किया।

* अलीराजपुर में शपथ ग्रहण के दौरान श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र का शुभारंभ पुण्य सम्राट के दिव्य आशीर्वाद व ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता माननीय सुरेन्द्रजी लोढ़ा व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान रमेशजी धरू के मार्गदर्शन में श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र का शुभारंभ हुआ।

* जावद व निकुम्भ में श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र का शुभारंभ व श्रुत ज्ञानार्जन योजना का शुभारंभ पुण्य सम्राट के दिव्य आशीर्वाद से महिला परिषद की राष्ट्रीय शिक्षामंत्री संगीता पोरवाल व प्रान्तीय शिक्षामंत्री आभाजी दुग्गड़, जावरा की अंजुजी तांतेड़ ने श्राविका बहनों, श्रावक भाइयों व बच्चों को पाठशाला के लिए प्रेरित कर श्रुत ज्ञानार्जन योजना का शुभारंभ किया।

* चोमैला। में श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र का शुभारंभ व श्रुत ज्ञानार्जन योजना का शुभारंभ चोमैला राजस्थान के झालावाड़ जिले में 'श्रुत ज्ञानार्जन योजना व श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा केन्द्र का शुभारंभ हुआ।

तरूण परिषद पदाधिकारियों का दौरा

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य अध्यक्ष राज देसाई, वरिष्ठ उपाध्यक्ष आदित्य धोका, वैय्यावच्च मंत्री नमन छजलानी, शिक्षा मंत्री मीशील देसाई, सहवैय्यावच्च मंत्री तत्वार्थ मोरखिया द्वारा 2 दिवसीय

दौरा किया गया।

तरुण परिषद झाबुआ, राजगढ़, टांडा, बाग, कुक्षी, अलीराजपुर, भाबरा, जोबट, राणापुर, पारा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा बैठक हुई जिसमें मधुकर सुपात्रदानम, धार्मिक अभ्यास, वैय्यावच्च, आगामी कार्यों के विषय में जानकारी दी गई अलीराजपुर शाखा का पुनर्गठन हुआ।

अलिराजपुर। **अध्यक्ष**–चिंतनजी जैन, **उपाध्यक्ष**–गौतमजी जैन (टांडावाला), **महामंत्री**– कार्तिकजी जैन (काकड़ीवाला), जोबट शाखा में पुनर्गठन हुआ जहां नवीन कार्यकारणी में **अध्यक्ष**– सूरजजी डूंगरवाल, **महामंत्री**– वैभवजी गांधी।

तरुण परिषद शाखाओं को विहार सेवा में नई ऊर्जा के साथ जोड़ने हेतु एक राष्ट्रीय तरुण द्वारा उसकी पसंदीदा वस्तु का त्याग किया गया। इस दौरे में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय श्रीसंघ व नवयुवक परिषद् के सदस्यों का एवं शाखाओं के श्रीसंघ व नवयुवक परिषद के सदस्यों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

साथ ही मालव भूमि के प्राचीन तीर्थ मोहनखेड़ा, बाग की कुटिया, तालनपुर एवं लक्ष्मणी तीर्थ के दर्शन वंदन किए। उपरोक्त जानकारी तरुण परिषद् राष्ट्रीय प्रचार मंत्री अर्चित गोखरू द्वारा दी गई।

पुण्योत्सव पर चिकित्सा सहायता योजना का शुभारम्भ

पिपलौदा। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राष्ट्रीय इकाई द्वारा पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के तृतीय पुण्योत्सव के पुण्य प्रसंग पर गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीजी म.सा. एवं आचार्य जयरत्नसूरिजी म.सा. की पावन प्रेरणा से चिकित्सा सहायता योजना (मेडी एड स्किम) का विधिवत शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री धरू ने बताया की योजना की शुरुआत में जब विभिन्न पहलुओं पर मंथन चल रहा था तब जिसने भी इस योजना को समझा उन सभी ने

अत्यन्त सराहना के साथ इसे प्रोत्साहित किया एवं करीब सौ दानदाताओं की स्वीकृति शुभारंभ के पूर्व प्राप्त हो चुकी है जो निश्चित ही योजना को सफल बनाएगी सभी के व्यक्तिगत प्रयासों से ही यह सम्भव हुआ है व सभी अपने स्तर पर समाज कल्याण के लिए अवश्य प्रयासरत रहे। राष्ट्रीय महामंत्री सुधीर लोढ़ा ने बताया कि इस योजना में भाग लेने हेतु छः हजार तीन सौ रुपये के चेक के साथ दानदाता को अपनी सहमति देनी होगी। इस योजना के तहत 4 हितग्राहियों के आवेदन स्वीकार कर राशि मुहैया कराई गई।

राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़ ने बताया कि योजना के अंतर्गत आर्थिक रूप से कमजोर किसी साधार्मिक हितग्राही व्यक्ति के साथ आगामी 1 वर्ष की अवधि में गंभीर दुर्घटना में सर्जरी, कैंसर डिटेक्शन, हृदयघात में बायपास सर्जरी की स्थिति में पच्चीस हजार रुपये की तत्काल सहायता परिषद द्वारा की जावेगी।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री व कार्यक्रम समन्वयक राजेश वागरेचा ने बताया कि कोई भी ट्रस्ट, संस्था, पेढ़ी, श्री संघों के अग्रगण्य, संघ परिषद के पदाधिकारी आदि समस्त व्यक्ति इस योजना में यथा संभव दानदाता बनकर औरों को भी प्रेरित कर सकते हैं।

यह जानकारी राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री प्रफुल्ल जैन ने दी।

म.प्र. प्रान्तीय महिला इकाई की बैठक

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ (म्यूजियम)। प्रांतीय महिला परिषद इकाई द्वारा एक ऑनलाइन मीटिंग आयोजित की गई। चूंकि वर्तमान में कोविड-19 के चलते व्यवहारिक रूप से मिलना संभव नहीं था इसलिए मध्यप्रदेश इकाई द्वारा ऑनलाइन पदाधिकारियों की मीटिंग आयोजित की गई।

प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती निशा वनवट ने बताया कि नवकार महामंत्र से मीटिंग की शुरूवात की तत्पश्चात पदाधिकारियों द्वारा इस विषय में कि, 'समाज के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की मदद' कैसे की जाए एवं 'धार्मिक शिक्षा' को और बेहतर कैसे बनाया जाए इस पर चर्चा की गई। साथ ही शासकीय नियमों का पालन करते हुए 'पर्युषण महापर्व' सुरक्षा व सावधानी के साथ मनाएं इस दिशा में भी सुझाव दिए गए। अन्य विषयों पर चर्चाएं की गईं जिसमें प्रांतीय पदाधिकारियों के कुछ सुझाव भी प्राप्त हुए जिस पर विचार विमर्श कर भविष्य में क्रियान्वयन करने का प्रयास

किया जाएगा।

'प्रांतीय महामंत्री श्रीमती पुष्पा कोचर' द्वारा आभार व्यक्त करते हुए कहा कि, परिषद में एकता और समन्वय हमेशा बना रहे एवं गुरुदेव के बताए मार्ग पर चलकर अपना जीवन तब सार्थक करें। इस मीटिंग में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री को भी आमंत्रित किया गया था।

प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा का परिषद द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्यान्वयन

मुंबई। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें परिषद द्वारा संचालित धार्मिक अध्ययन योजना के तहत 'प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा' को व्यापक रूप देने का निर्णय लेते हुए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। योजना संचालन हेतु श्रीसंघ के दानदाताओं के सहयोग से फंड स्थापित किया गया। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर सम्पन्न हुई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू ने परिषद की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने कहा कि वर्तमान में युवाओं में धार्मिक शिक्षण का प्रसार करने हेतु श्रुत ज्ञानार्जन संचालित हो रही हैं। इस कड़ी में धार्मिक शिक्षण को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापकता प्रदान करने की आवश्यकता है। परिषद ने इस दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर 'प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा' आयोजित प्रारम्भ करने की कार्ययोजना बनाई है। आपके प्रस्ताव पर समस्त पदाधिकारियों ने सर्वानुमति से धार्मिक ज्ञान योजना को राष्ट्रीय स्तर पर संचालित करने का निर्णय लिया।

श्री धरू ने पुण्य सम्राट के स्वप्न को साकार करने, शाखा परिषदों को और अधिक सक्रियता से कार्य करने का आह्वान किया। शाखा परिषद धार्मिक, रचनात्मक, सेवा के प्रकल्पों को समर्पणता के साथ पूर्ण करने का संदेश दिया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रकाशजी हीराणी ने लॉकडाउन के दौरान शाखा परिषद द्वारा राष्ट्रीय कार्यालय के आह्वान पर किए गए मानव सेवा के कार्यों एवं धार्मिक प्रवृत्ति के कार्य करने की सराहना की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी जैन (पूर्व मंत्री व विधायक) ने कोविड

19 के संकट में राजेन्द्र सूरि शोध संस्थान सहित अन्य ट्रस्ट मंडल के राष्ट्र सेवा में दिए गए योगदान की प्रशंसा की।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा ने बैठक की रूपरेखा रखते हुए परिषद के प्रगति प्रतिवेदन का ब्यौरा प्रस्तुत किया साथ ही लॉकडाउन के दौरान परिषद के माध्यम से हुए शुभ प्रवृत्ति की जानकारी भी दी। आपने कहा कि परिषद के आह्वान पर सामूहिक सामायिक, नमस्कार, महामन्त्र, उस्सग्गहरं महामंत्र जाप, स्नात्र पूजन, महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के सफलतम आयोजन हुए। साधर्मिक बंधुओं के चिकित्सा सहायता योजना का संचालन भी हो रहा है। परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री शांतिलालजी गोखरू, संजयजी कोठारी, अतुल अदानी, मुकेश जैन नाकोड़ा ने भी मार्गदर्शन दिया।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री राजेशजी वागरेचा ने परिषद की सांगठनिक व धार्मिक गतिविधियों की विस्तार पूर्वक जानकारी दी। आपने कहा कि परिषद के माध्यम से चिकित्सा योजना सफलता के नए सोपान स्पर्श कर रही है। बैठक में पर्यावरण मंत्री श्री अनिलजी दसेड़ा ने आगामी 11 अगस्त को परिषद द्वारा आयोजित पौधरोपण कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की।

बैठक में उपाध्यक्ष श्री नवीन भाई बल्लू, शिक्षा मंत्री श्री भरतभाई वोरा, जन कल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, अल्प बचत मंत्री श्री प्रकाशजी तलेसरा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जैन दंगवाड़ावाला, प्रचार मंत्री श्री ब्रजेशजी बोहरा, संगठन मंत्री श्री प्रफुल्ल जैन, सहमंत्री श्री प्रवीण डूंगरवाल, दर्शनभाई सेठ, शैलेशजी ओरा, सुनीलजी बांठिया ने भी प्रेरक सुझाव दिए।

बैठक में 'प्रतिक्रमण कंठस्थ स्पर्धा' के संचालन हेतु श्रीसंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री रमेशभाई वोरा नडियाद, रमेश भाई धरू, प्रकाशजी हीराणी, श्री भरतभाई वोरा, श्री मुकेशजी नाकोड़ा ने एक-एक लाख रु. प्रदान करने की घोषणा की। बैठक में करतल ध्वनि से दानदाताओं के सहयोग की अनुमोदना कर बहुमान किया गया।

प्रारम्भ में दीप प्रवज्वलन श्री रमेशजी धरू एवं श्रीमती रंजनजी धरू ने किया। बैठक का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा ने किया। आभार प्रदर्शन राष्ट्रीय मंत्री श्री अतुलजी अडानी ने किया।

जैन विश्व

बम्बोरा। समाजसेवी कन्हैयालाल धींग एवं श्राविकारत्न उमरावदेवी धींग के स्मृति में दिए जाने वाले साहित्यिक पुरस्कारों की घोषणा हाल ही में की गई। उदयपुर की युगधारा संस्था के अंतर्गत दिये जाने वाले ये पुरस्कार राजस्थानी भाषा तथा युवा श्रेणी में दिये जाते हैं। राजस्थानी पुरस्कार' के लिए हिम्मतसिंह उज्ज्वल तथा 'उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार' के लिए कवि विजय मारू का चयन किया। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग के माता-पिता के सम्मान में दिये जाने वाले ये वार्षिक पुरस्कार वर्ष 2005 तथा 2017 से निरन्तर गतिमान हैं।

* जोधपुर स्थित पोकरण कल्पतरू परिसर में 16 वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान मंदिर की 5 वीं वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई।

* पाली में साध्वी श्री वैभवश्रीजी म. द्वारा विराट चरम मंगल संघ की स्थापना की गई।

* अतिप्राचीन गांगाणी तीर्थ का दो दिवसीय पाटोत्सव पन्यास श्री विरागरत्नविजयजी म. के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

* **मदुरै।** श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट की ओर से मदुरै में निर्मित नई नूतन धर्मशाला का उद्घाटन 31 मई 2020 को किया जाना था।

* **बीकानेर।** बीकानेर में जिनशासन की एक आवाज सभी पंथ एक साथ 5 जनवरी 2020 को प्रातः 9.00 से 10.00 बजे आराधना भवन, स्थानक आदि में लगभग 1200 के सामूहिक सामायिक हुई- छगनलाल भुगड़ी।

* **सिवनी (म.प्र.)।** उदीयमान श्री नमिकरण पार्श्वनाथ मणिधारी जैन श्वेताम्बर तीर्थ में सर्वप्रथम बार सामूहिक वर्षीतप पारणा त्रिदिवसीय महोत्सव का भव्य आयोजन किया जाना था।

* **चैन्नई।** चैन्नई के पोरूर के जैन श्वेताम्बर मंदिर में आचार्य हस्तीमलजी महाराज की प्रतिमा है। आचार्य हस्तीमलजी शायद एकमात्र

स्थानकवासी जैन संत हैं जिनकी प्रतिमा किसी जैन मंदिर में विधि विधान पूर्वक प्रतिष्ठित हुई तथा वहाँ नित्य दीपक जलता है- डॉ. दिलीप धींग ।

* **पिण्डवाडा निकटवर्ती झाडोली (राज.)।** में पू. सूरिमंत्र आराधकाचार्य श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि की शुभ निश्रा में श्रीमती कमलाबेन साकलचंदजी के जीवित महोत्सव एवं मंगल एवं स्व. लकीशकुमार (विहार सेवाग्रुप) शहीद एवं मुमुक्षु जैनीकुमारी निलकेशभाई के दीक्षा प्रसंगे मांगलिक 108 आयंबिल हुए।

* 19 वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी एवं 21 वें तीर्थंकर श्री नमिनाथजी के चार-चार कल्याणकों अर्थात् 8 कल्याणकों की पावन भूमि श्री मिथिलाजी तीर्थ का करीब 150 वर्ष पूर्व काल के प्रतिकूल प्रवाह से विच्छेद हो गया था। इस तीर्थ की पुनर्स्थापना हेतु श्री ललित कुमार नाहटा ने सन् 2007 में सीतामढ़ी बिहार में श्री मिथिलाजी तीर्थ की पुनर्स्थापना का संकल्प लिया गया।

सन् 2000 से श्री अशोक जैन भी इस खोज में जुड़े। इस कल्याणक तीर्थ की पुनर्स्थापना हेतु धरा से ध्वजा तक का अनुपम लाभ श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचंद नाहटा परिवार द्वारा लिया गया। इससे पूर्व श्री भद्दिलपुर तीर्थ श्री शीतलनाथ भगवान के चार कल्याणक की पुनर्स्थापना प्रतिष्ठा का लाभ भी इसी परिवार ने लिया।

* **पूणे।** पिंपरी-चिंचवड के विख्यात डॉ. अशोक अग्रवाल को तेलंगाना स्थित हैदराबाद में इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ कोलोप्रॉक्टोलॉजी की कॉन्फ्रेंस वर्ल्डकॉन 2020 में फेलोशिप देकर सम्मानित किया गया।

* **चैन्नई।** अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग का नाम विश्व कीर्तिमानों की चार पुस्तकों में दर्ज हुआ है। डॉ. धींग के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सबसे लम्बी हस्तलिखित कविता के लिए उन्हें यह गौरव मिला है। मुंबई की कवयित्री अणुव्रतसेवी डॉ. ललिता बी. जोगड़ ने डॉ. धींग पर 1311 पंक्तियों की कविता लिखी।

* **ईडर ।** ईडर अम्बाजी हाईवे पर स्थित पावापुरी सम्मेतशिखर तीर्थधाम के संस्थापक प्रमुख कल्याणसागर तथा राजतिलकसागर दोनों तथाकथित मुनियों को महिलाओं के साथ मंदिर परिसर में ही कामलीला करने की शिकायत पर पुलिस ने गिरफ्तार किया। इससे पूर्व

जैन समाज की एक सौ से अधिक महिलाओं ने दो महाराज को जेल में डालने की मांग करते हुए कलेक्टर को ज्ञापन दिया था। दोनों को बाद में पुलिस ने न्यायालय में पेश किया जहाँ से 15-15 हजार रुपये की जमानत पर रिहा किया। गच्छाधिपति आचार्यश्री दौलतसागरजी म.सा. ने दोनों को गच्छ से बाहर कर दिया। इससे पूर्व दिगम्बर समाज के सुकुमालनंदी भी सेक्स कांड में पकड़े गये थे। पुलिस ने इनको गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया था। वे भरतपुर जेल में थे।

* प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने तेरापंथ के आचार्य श्री महाप्रज्ञजी से सत्संग व साक्षात्कार कर कहा कि मैं चाहता हूँ कि तेरापंथ भी मेरापंथ बन जाये।

* सिकोडी नगर में आचार्यश्री रविरत्नसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास प्रवेश किया। कोरोना महामारी के कारण समारोह सादगी से सम्पन्न हुआ।

भूल से दुखी हैं हम

मानव भौतिकता से संत्रस्त भौतिकता में ही शांत की खोज कर रहा है। जहां जो वस्तु है ही नहीं वह प्राप्त कैसे हो सकती है। बाहर के भौतिक साधनों में सुख नहीं है। सुख तो अपने ही भीतर है। आनंद का स्त्रोत, शांति का भंडार एक अपनी आत्मा ही है। सब कुछ प्राप्त करने के बाद भी अगर मनुष्य कुछ प्राप्त नहीं कर पाता तो वह है शांति । शांति का स्त्रोत भले ही सबसे निकट हो पर उसकी जानकारी के अभाव में मानव मृग-मरीचिका में भटक रहा। अगर यह ज्ञान हो जाये कि अपनी ही आत्मा में आनंद का भंडार दबा हुआ है तो जीवात्मा शांति के लिए भौतिक जगत की ओर नहीं भागेगा अपितु अपनी ओर झुकेगा।

क्षण भर की बाहर की दौड़ से रुकेगा। जीवन मात्र के अंदर आनंद के अपार स्त्रोत विद्यमान हैं पर मिथ्या-अवधारणाओं के कारण वह बाहर में आनंद की खोज कर रहा है। पत्नी, बच्चे परिवार और भौतिक संसाधनों में वह आनंद, सुख, शांति खोज कर रहा है जबकि वहां किंचित भी सुख शांति नहीं है। सारे स्त्रोत स्वयं के भीतर हैं। इस जीवन ने सारी यात्राएँ कर ली हैं, एकमात्र अपने भीतर की ही यात्रा नहीं की है, अगर वह एक बार भीतर की यात्रा कर लेता तो बाहर की सारी यात्राएँ थम जाती।

निरर्थक भटकन से विश्रांति मिल जाती । अगर हमें सुख, शांति की चाहना है तो अपने आत्म तत्व पर दृष्टि देनी ही होगी इसके अलावा कोई रास्ता नहीं । व्यसन मुक्त और सदाचारी व्यक्ति ही आनंद और अद्भुत शांतिका अनुभव कर सकता है। अतः सच्चरित्र बनने का पुरुषार्थ अत्यन्त आवश्यक है।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा. अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

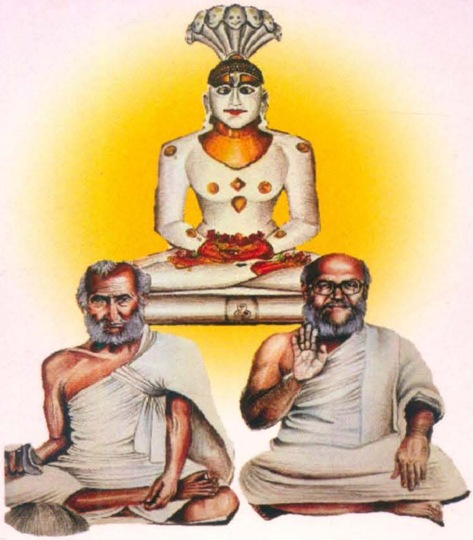

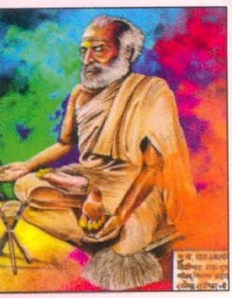

पुनीत संजय सकलेचा (झाबुआ) की तुलिका से निर्मित चित्र

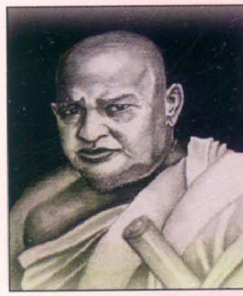

कोबा (गांधीनगर)

* सूरत में दीक्षा दानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्नसागर सूरीश्वरजी म. का श्री नेमिनाथ भगवान के जन्म कल्याणक के दिन दिनांक 14 जुलाई 2020 रात्रि 3 बजकर 20 मिनिट पर सूरत-कैलाश नगर में कालधर्म हो गया। दिन में आपका स्वास्थ्य एकदम अच्छा था । दूसरे दिन शाम आपका अन्तिम संस्कार श्री महाविदेहधाम वेसू में किया गया । आचार्यश्री द्वारा पूर्व लिखित पत्रानुसार ग्रुप का संपूर्ण संचालन श्री पुष्यरत्नसूरिजी करेंगे तथा 370 श्रमणी भगवतों का संचालन श्री रश्मिरत्नसूरिजी के प्रभार में रहेगा । अग्नि संस्कार भूमि पर 'दीक्षा-दानेश्वरी संयम तीर्थ' का निर्माण होगा ।

* इन्दौर स्थित महिला परिषद गुमाश्ता नगर द्वारा 1 अगस्त बकरीद के दिन 16 जीवों को अभयदान दिलाया गया । इसमें व्यय 48 हजार की राशि जीवदया प्रेमी परिषद सदस्यों ने जुटाई ।

* कोरोना संकट में श्रीसंघ तथा परिषद परिवार की शाखाओं ने जीवदया के क्षेत्र में प्रत्येक सम्बन्धित ग्राम या नगर में उदारतापूर्वक प्रवृत्तियां की ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-67, अंक-04 कुल पृष्ठ कवर सहित 100

विभिन्न श्रीसंघों तथा परिषद शाखाओं द्वारा आयोजित किये गये समारोह की झलकियाँ

महिदपुर सीटी

अलिराजपुर

जावद

निकुंब

चौमेहला

रोजाना

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001